

मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका

अंक 23, अप्रैल 2010 सँ जून 2010

✪ **पृष्ठपोषक** ✪

हरिगोविंद झा

रामाधार लाल

नवलकांत झा

✪ प्रबंध संपादक ✪

प्रेमकांत चौधरी

✪ संपादक ✪

दिनकर कुमार

✪ सलाहकार ✪

शरदिंदु चौधरी, लक्ष्मण झा 'सागर'

गजेन्द्र ठाकुर

✪ संपादन सहयोग ✪

अरुण कुमार झा, ललित कुमार झा

विज्ञापन व्यवस्थापक **: जगनिवास झा**

चन्द्रमोहन झा

प्रचार प्रसार व्यवस्था **: अरुण कुमार झा**

प्रकाशक **: विनय कुमार झा**

मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी

मुद्रक : **अनुराग आफसेट**

उलुबाड़ी, गुवाहाटी (असम)

मो. : 98649-13382

: संपादकीय एवं पत्राचारक पता :

प्रेमकांत चौधरी

फ्लैट नं. 2 सी, ब्लॉक-बी, पुन्य इंक्लेभ,

आरजी बरुवा रोड, (सिन्हा लाज के पीछे)

गणेशगुड़ी, गुवाहाटी-781006

मो. : 094353-42658, 90850-42658, 92070-32321

E-mail : purvottarmaithil@gmail.com
msssghy2000@gmail.com

एहि अंक मे



(1)

आजि बिहू बिहू कालि बिहू बिहू
बिहूलै केई दिन बाकी
धन मोर अहा नाई गोंध तेल अना नाई
आमोनि लागिसे थाकि।

(आई छी बिहू, काल्हियो बिहू। कनी दिन बाद छी बिहू। हमर प्रियतम नहिं एलाह, महकुआ तेल नहिं अनलाह। असगरे हम उदास छी।)

(2)

बोहागर बिहूते पूर्णिमार रातिते पातिम
तोरे मोरे बीया
दूयो एकेलगे घर पाति खाम मिलाम
ऐ दुखनि हीया।

(बैशाखक बिहूमे पूर्णिमाक रातिये तोरा संग हम बियाह करब। दूनू गोटा एके संग घर बसायब अपन-अपन करेज के एक बनायब।)

(3)

तुमिये आमिये पीरिती करिलो भलूका
बांहर तलत
तोमाक सेनाईटी नापाबो लागिले
सिपे लै मरिमे गलत।

(तोरा संग हमरा प्रेम भेल' छल बांसवन मे। जे तू हमरा नहिं भेटमे त' ससरी गरदनि में लगा क' हम मरि जायब।)

जड़ि सँ किएक कटल छी हम मैथिल?

आरंभ मे किछु प्रसंग उल्लेख करए चाहैत छी–

चौदह वर्षक अवस्था मे हम गाम ब्रह्मपुरा(जिला दरभंगा) सँ बहिर्गमन केने छलौंह। बीच–बीच मे गाम जाइत छी। पौरकाँ साल गेल रही त' एकटा वृद्ध कहलैथ– गाम देखि क' लगैत अछि जेना एकटा विशाल वृद्धाश्रम अछि। जतए मात्र वृद्ध, महिला आ धीया–पुता बचल अछि। सब कियो गाम छोरी कए पड़ा गेल। ई दशा मिथिला के सब गामक अछि। जखन सब पड़ाएले रहत तखन एहि अंचल के दशा के सुधारत।

मैथिली के साहित्यकार प्रदीप बिहारी के संग टैक्सी सँ हम बरौनी सँ गाम अबैत रही। रास्ता मे दूनू कात नव निर्मित मंदिर सभ दिस संकेत करैत प्रदीप जी बजलैथ– सड़क आ पुल टूटल अछि, ओहि के लेल लोक चंदा नहि करत। मुदा डेग–डेग पर विशाल मंदिर बनेनाई मिथिलाक मे एकटा उद्योग बनि गेल अछि। मंदिर निर्माणक लेल जेना लोक उत्साह सँ चंदा जुटबैत अछि, श्रम करैत अछि, ओहिना जदि रास्ता–पुलक लेल करत त' अंचलके तस्वीर बदैल सकैत अछि। मुदा मंदिर निर्माण आ कीर्तन उद्योग मे लोकक ऊर्जा नष्ट भ' रहल अछि।

ã×Úæ ×ôÙ ×ð âç¼¹Ù °ãÙ ÂýàÙ ƒæé×çÚ¸ ñÌ Úãñ̀Ì ¥çÀU- ÁççÚ¸ â¢¡ ç·¤° ·¤ ·¤ÅÜ ÀUè ã× ×ñçÍÜ? ÒÂêßôü•æÚU ×ñçÍÜÓ Âç˜æ·¤æ·¤ â¢Âæ¼Ù·¤ ¼æçØˆß ÜðÜæ·¤ Õæ¼ ã×Ú § â¢·¤ËÂ ¥çÀU Áð °ãÙ Õãéâ Úæâ ÂýàÙ ÂÚU ¿¿æü ·¤ÚUèÐ

कोलकाता मे मोकामा निवासी राजेश चतुर्वेदी सँ गप होइत छल। चतुर्वेदी एकटा बैंक मे राजभाषा अधिकारी छैथ। देशक विभिन्न प्रांत मे बिहारी लोकसभ के पिटाई आ अपमानक चर्चा करैत ओ बजलैथ– दोसर–दोसर प्रांतक लोग नौकरी करैक लेल आन–आन प्रांत मे जाइत अछि। मुदा ओ अपन जड़ि से कहियो नहि कटैत अछि। ओ अपन स्थायी मकान अपन गृह राज्य मे बनबैत अछि। बंगाली, उड़िया अथवा दक्षिण भारत के लोकक उदाहरण अछि, मात्र बिहारी एहन लोक होइत अछि जे गृह राज्य सँ बहरेलाक बाद अपन राज्य के हीन दृष्टि से देखएत अछि। अपन मातृभाषा के त्याग करैत अछि आ कोनो महानगर अथवा आन प्रांत मे मकान बनाकए स्थायी बाशिंदा बनि जाइत अछि। जखन सभटा प्रतिभाशाली लोक एहिना अपन मातृभूमि के त्याग करैत रहत तखन मातृभूमि रसातल मे नहि जेतीह त' कतए भ'क' रहतीह। बिहार के कियो आन नहि बदलत। जकरा मे बदलैक क्षमता, प्रतिभा अछि से सब बिहार के छोड़िकए पड़ा रहल अछि। जड़ि सं कटल लोक के अपमान नहि हेतै त' की हेतै....?

छोट–छोट भाषा–भाषी लोकनिक के अप्पन दैनिक पत्र बहराइत अछि। पांच करोड़ मैथिल हिंदी आ अंग्रेजीक दैनिक पत्र पर निर्भर करैत छथि। असमिया लोकक संख्या एक करोड़ सं कम अछि, मुदा तेरह टा दैनिक पत्र बहराइत अछि। मिथिला क्षेत्र सँ एकोटा दैनिक पत्र नहि बहराइत अछि। एहि सँ अधिक तकलीफक बात की भ' सकैत अछि।

गुवाहाटी मे हमर एकटा मित्र गोकुल बरकाकती छथि, जे टीवी सीरियल बनबैत छथि। एक दिन ओ कहलैथ– मिथिलाक इतिहास वास्तव मे भारत के इतिहास छी। एतेक महान इतिहास रहितो आई मिथिलाक वर्तमान एहन किएक बनल अछि....?

हमरा मोन मे सदिखन एहन प्रश्न घुमड़ैत रहैत अछि– जड़ि सँ किएक कटल छी हम मैथिल? 'पूर्वोत्तर मैथिल' पत्रिकाक संपादनक दायित्व लेलाक बाद हमर ई संकल्प अछि जे एहन बहुत रास प्रश्न पर चर्चा करी। जखन चर्चा होयत तखन समाधानक बाट सेहो निकलत।

– **दिनकर कुमार**, 09435103755

पूर्वोत्तर मैथिल अपनेक नगर मे उपलब्ध अछि :-

असम : ● **गुवाहाटी :** अरुण कुमार झा, बामुनीमैदान, मो. : 94351-01766, कमलकांत झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 9864176437, दिलीप कुमार झा, बेलतला, फोन : 94350-13450, श्री तिलकेश्वर झा तरूण नगर, फ. : 9954586540, संतोष कुमार झा फैन्सी बाजार, फो. : 98641-26176, विंदेश्वर मिश्र मालिगाँव पांडू फो. : 98542-87692 ● **जोरहाट:** स्कंद कुमार मिश्र, राजमैदान रोड, न्यू कॉलोनि, जोरहाट, फो. : 94357-023453, **खरुपेटिया :** पवन कुमार झा : 9435088346

● **बिहार : पटना**-श्री शरदिन्दू चौधरी, संपादक, समय साल, 2ए-39 इन्दपुरी, पटना -24, फो. : 09334102305, राजेश कुमार झा, मिथिला कालोनी, नशरीगंज, पो. बाटागंज, पटना-18, **मुजफ्फरपुर**- श्री विष्णुकान्त झा, 9470834202, श्री अजीत कुमार झा, फो.: 09472834926, ● **मधुबनी :** श्री गया प्रसाद सिंह, फोन : 9431287158, भोगेन्द्र मिश्र, चित्रगुप्त नगर समिप नीलम सीनेमा, फो. : 09431654303

● **दरभंगा**-अग्रवाल न्यूज एजेंसी, स्टेशन रोड, श्री मणिकांत झा फो. : 9431451489 ● **जयनगर**-डॉ. कमलाकान्त झा, शहीद चौक, मो. 09934914944 ● **सहरसा** - विनय कुमार चौधरी, कृष्ण कुटिर, पंचमढ़ी, फो. : 228190, डा.एल.एन. झा, फो. : 9431440145 , ● **कटिहार**-ललन झा, रीडर्स कार्नर, होटल राजस्थान, फो. : 09437206661, श्री नारायण झा, कटिहार - 9431260030 **बेगूसराय :** प्रदीप बिहारी 'मैथिल पुत्र' 09431211543.

● **भागलपुर**- डॉ. प्रेमशंकर सिंह, ऋचायन, राधारानी सिन्हा रोड, फो. : 2422666, ● **समस्तीपुर :** डा. नरेश कुमार विकल, फो.: 094302-44114, ● **मोतीहारी :** सुशील कुमार सुमन, मो.-09431022737, ● **सुपौल :** उमेश मंडल, तुलसी भवन, निर्मली, फो. : 9931654742 **दलसिंहसराय** श्री गौरीनाथ प्रदीप विहारी भास्कर, फो. : 06243215228, डॉ.सत्यनारायण महतो, फो. : 9934258434, श्री गोपाल झा, किशनगंज - 9431885999

● **झारखंड :** डॉ. धनाकर ठाकुर, राँची- 9470193694, **बोकारो :** श्री अमीरी नाथ झा अमर, फो. : 249994, **जमशेदपुर**-डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी, फो. : 09334066298, डॉ. अशोक अविचल, फो. : 9006056324

● **प. बंगाल :** राजकुमार गिरी-रतनदीप अपार्टमेंट, ए-5, ब्लाक-बी, 17, बीटी रोड, कोलकाता-56, 9432303617, अशोक झा, 243, रविन्द्र शरणी, कोलकता-75, लक्ष्मण झा सागर, 3बी, तिस्ता अपार्टमेंट 94 एवेन्यु साउथ, संतोषपुर, कोलकता-7, फो. : 3334909576

● **छत्तीसगढ़ : रायपुर,** श्री सुरेन्द्रनाथ पाठक, मनीश कुमार झा 0771-4050907

● **दिल्ली :** श्री गजेन्द्र ठाकुर पौकेट-सी सेक्टर-ए, बसंतकूंज, न्यू दिल्ली-70, सुबोध कुमार झा, अखील भारतीय परिवार कल्याण परिषद डी-2 हुकुम चंद मार्केट महावीर इंक्लेभ पालम न्यू दिल्ली, फो. : 09941-1382078, श्री रंजीत कुमार झा, फो. : 09871-212341 , श्री कृपानन्द झा, फो. : 9868551104

● **हरियाणा :** गुड़गाँव श्री जे.एन. मंडल, फो. : 09312399739, श्री भीमसिंह मैथिल, फरीदाबाद 9050479190,

● **राजस्थान :** जयपुर - श्री नन्दन मोहन, फो. : 9660013301

● **महाराष्ट्र :** श्री अर्जुन मंडल, पुणे - 9423527219

● **आन्ध्रप्रदेश :** श्री दयानाथ झा, हैदराबाद - 9949157553, श्री ज्योति प्रकाश लाल, हैदराबाद - 9885909451

● **गोवा :**श्री उमेश कुमार कर्ण, फो. : 9423835001

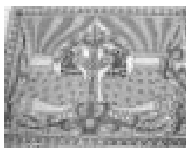
● **नेपाल :** श्री रामरिझन यादव विराटनगर फो. : 00977 - 9852830679, डॉ. रामावतार यादव , काठमाण्डू 01. 4421844 021.523191



वर्तमानक प्रश्न

मैथिली आंदोलन : बनाम मैथिल

भोला गिरि 'विनोद'



मिथिला राज्यक मांग आइसँ नहि, आजादीक तुरन्त बादसँ माङल जाए रहल अछि, मुदा एहि क्षेत्र मे निमित्त ने तँ कहियो आंदोलन भेल आ ने भविष्य मे संभावना अछि। एकर एकमात्र कारण अछि जे मैथिली आंदोलनक संग जन-दबाव कहियो नहि बनि सकल। एहिठामक जातीय विकासक रुग्णताक कारणेँ आंदोलनक अभाव तथा मैथिली भाषा-भाषी बुद्धिजीवी लोकनिक सुषुप्तावस्था कैँ देखैत सरकारी पक्षक कठोरता विस्मित्त कए रहल अछि।

संसारक वर्त्तमान भाषा मे दोसर तथा भारत पहिल गद्य साहित्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर 'वर्णरत्नाकर' मैथिली मे लिखल गेल, विद्यापति एवं ज्योतिरीश्वर ठाकुर मैथिलीक लेखक छलाह जनिक साहित्य हिंदी सन राष्ट्रीय भाषाक मूल कहल जा सकैछ। तहिया बंगाल- सन विकसित भाषा-साहित्यक कोनो वास्तविक अस्तित्व नहि छल। आधुनिक भारतीय भाषा मे सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक परम्पराक अतिरिक्त ओहि थोड़ भाषा मे सेहो मैथिली विशिष्ट अछि जकर अपन लिपि, अपन व्याकरण, अपन भौगोलिक क्षेत्र आ अपन दार्शनिक परिचय छैक। बिहारक सत्रह गोट प्रमंडल केर 21 हजार वर्गमील मे परसल 3 करोड़ 30 लाखक आबादी वाला एहि क्षेत्रक अपन

आर्थिक अनुकूलता, अपन मनोविज्ञान, अपन रीति-रेवाज, अपन पञ्चाङ्ग, अपन संगीत आ अपन कला छैक आ छैक एकर अपन भाषा 'मैथिली।

मिथिला महाराज 'मिथि'क पावन क्षेत्र रहल अछि। एहिठाम पूर्व मे कोनो आंदोलन कहियो नहि भेल। राष्ट्रीय उतार-चढ़ावसँ निरपेक्ष रहबाक एकर इतिहास बड़ पुरान अछि। मध्यकाल मे राष्ट्र-व्यापी जनांदोलनसँ, जे वैष्णव सम्प्रदायक छल, मैथिली पूर्णत:



निरपेक्ष रहल। 1857क मुक्तिसंग्राम सँ सस्पृक्त होएब एहि क्षेत्र कँ कहियो भोगय नहि पड़लैक जखन कि ई क्षेत्र अपन ज्ञानक विशिष्टताक लेल विश्वविख्यात अछि।

कहल जाइछ जे भाषा, संस्कृति, परंपरा, रीत-रेवाज, धार्मिक मान्यता, अर्थिक साधन- ई सभ किछु ब्राह्मण -कायस्थ जातिक एक अछि आ शेष वृहत्तर जातिक भिन्न। मलतब ई अलगाव क्षेत्रीय नहि, जातिगत छैक। मान्यता अछि जे जातीय जीवनक मानक स्वरूपक निर्माणकर्ता तथा संरक्षक मात्र इएह दुई जाति रहला अछि- ब्राह्मण आ कायस्थ। मध्यकालक जनभाषा ओ संस्कृतिक विकासक नाम पर आधुनिक कालम मे जे परिनिष्ठित जातीय भाषा-संस्कृतिक आकार बनल से तथाकथित बेसी छल। इहो कहल जाइत अछि जे ओ हुनको लोकनिक वंशज छथि जे अद्यतन जनभाषा मैथिली कँ निकृष्ट आ अछोप बुझैत रहला अछि; मुदा संस्कृति कँ चूकि जएबाक उपरांत निर्विकल्प बुझैत रहलाह अछि; मुदा अंगीकृत करए पड़लन्हि। किन्तु मैथिली कँ एकर संस्कृति सङ अपनेवा ओ विकसित करवा पर जोर कम रहल आ संस्कृत अवरुद्ध अभिजात्य संस्कार मे परिवर्तित कए लेबा पर बेसी। परिणाम ई भेल जे सम्पूर्ण मिथिलाक वृहत्तर समुदाय जातीय जीवन अल्पसंख्यक ब्राह्मण-कायस्थ सँ आइयो एकात पड़ल अछि। आई जे मिथिली भाषा-संस्कृतिक मानक स्वरूप अछि, से वृहत्तर समुदाय कम आ ब्राह्मण-कायस्थक बेसी। तँ मैथिली कँ ब्राह्मण जातिक भाषा मानि लेबाक सरकारी मान्यता समुचित नहि तँ निराधार नहि अछि। वस्तुत: मैथिलीक पीठाधीश एवं सरकारक सोच मे कोनो बुनियादी भिन्नता नहि छैक। एहि पीठाधीशक चिंता मे वृहत्तर समुदायक जातीय जीवन कहियो नहि रहल। ई जनकवि विद्यापतिक परम्पराक लोक कखनो नहि छथि। जो गोटा-गोटी एहि परम्पराक लोक भेलाह- आइयो ओ वर्चस्व सँ वंचित छथि। की कारण अछि जे मैथिली आन्दोलन कँ जातीय आंदोलनक स्वरूप नहि दए कँ मात्र भाषाक प्रश्न नहि आ सेहो संविधानक अष्टम अनुसूची धरि सीमित राखत जा रहल अछि? एहि सँ भिन्न छिटपुट चेष्टा भेबो कएल तँ ओकरा केंद्र में सम्मिलित नहि कएल गेलैक। मैथिली भाषा आ साहित्यक समग्र रचनात्मकता मे लोक चिन्ता एवं राष्ट्रीय मुख्यधारा सँ कतेक मेल छैक, एकर परीक्षण आवश्यक अछि। क्षेत्रीय भाषा-साहित्यक गरिमा केर दबाव राष्ट्रीय की, अंतर्राष्ट्रीय मान्यताक दबाव सेहो उत्पन्न कएल जा सकैछ। लेखक-बुद्धिजीवी वर्गक भूमिका सर्वथा केंद्रीय होयबाक चाही जखन कि मैथिली भाषाई बुद्धिजीवी लोकनिक भूमिका अंतर्राष्ट्रीय की, प्रांतीय सेहो नहि भए पबैछ, एकर जाँच होयबाक चाही। अद्यतन देखबा मे आएल अछि जे मैथिली आंदोलनक लड़ाई मात्र राजनीतिक मोर्चा पर लड़ल गेल, आर्थिक ओ सांस्कृतिक मोर्चा पर नहि। राजनीतिको मोर्चा पर एकर लड़ाई मात्र सरकार कँ देल गेल ज्ञापन-प्रतिवेदन धरि सीमित रहल। यदाकदा एकरा आधार पर बनल संस्था, अनुदानक राशि एवं सुविधासँ एकर मुँह बेर-बेर बंद होइत रहल आ आंदोलनक क्रम टूटैत गेल। एहि संस्था केर, सुविधा आ अनुदानक भूमिका पर सेहो परीक्षण होयबाक चाही।

घनगर आबादी वला 31 हजार वर्गमील मे पसरल एहि मिथिलांचलक समग्र शिक्षित-अशिक्षित मैथिल अपन मातृभाषा मैथिलीकँ आइयो 'बोली' मात्र बुझैत छथि, भाषा नहि। भाषा अर्थ मे मैथिली सँ एकर तात्पर्य ब्राह्मण-कायस्थ जातिक भाषा बुझल जा रहल छैक। एहि अबूझपनाक कारणेँ मानक मैथिलीक दुर्गति आ मैथिली आंदोलनक प्रति आम जनताक मस्तिष्क मे कोनो जुड़ाव वा दबाव उत्पन्न नहि भए रहल छैक से चिन्ताक विषय अछि।

मैथिली अधोगतिक कतोक कारण मे प्रमुख अछि- एहि क्षेत्रक शिक्षाक माध्यम आ रोजी-रोटीक माध्यम नहि बनि पोनाइ। जेना लोकनि भाषाक रूप मे मैथिली पढ़ैत नहि, घरमे सिखैत छथि। तँ एक दिन ई मैथिलीकँ घरक बोली मात्र बुझैत छथि आ दोसर दिन रोजी-रोटीक माध्यम नहि होयबाक कारणेँ कोनो आकर्षणो नहि छन्हि। संभसँ पैघ कारण अछि मानक मैथिली जनरुचि एवं जन चिंतासँ अंतरालबद्ध भेनाई। प्रमाणत: एके गामक आम आदमीक मैथिली आ ब्राह्मण-कायस्थ परिवारक मैथिली मे एतके पैघ अंतर छैक जे सहसा विश्वास नहि होइछ जे एकहि गामक मे भाषाक एतबा दुई भिन्न स्तर कोना उत्पन्न भेल। ई स्थिति प्राय: अन्य भाषा मे नहि भेटैछ। ई विविधताक भाषाक जीवंतता आ अकाट्य जन -जुड़ावकेर शक्ति परिचायक होइछ; मुदा मानक मैथिलीक संरचना आ मानदंड ब्राह्मण आ कायस्थ धरि सीमित जकाँ अछि। मैथिली शिक्षक ब्राह्मणे-कायस्थ होइत छथि। जतए कतहु मैथिलीक रोजी-रोटीक जरिया छैक ततए एही दुनु

जातिक कब्जा अछि। एखनहुँ मैथिली शिक्षक अथवा लेखक मात्र इएह दुई जातिक हेताह, अन्यक प्रवेश वर्जित अछि। किएक तँ मानक मैथिली एहीठाम तय होइत छैक, शुद्धतावादी मानदंडक निर्णय होइत छैक।

भाषा केँ अस्मिता एवं समृद्धिक परिचायक थिक ओकर लिपि। मैथिलीक अपन लिपि छैक 'तिरहुता लिपि'; मुदा एकर विकास ओ प्रसार मे ध्यान नहि देल गेल- प्रेस मे एहि लिपिक काँटा (अक्षर किंवा टाइप) नहि भेटत। राष्ट्रीय मुख्य धारासँ संस्कृतिकसयँ तऽ पूर्वहि काटि देल गेल छल। मैथिली आंदोलन मे जनभागीदारीक अभाव पर ध्यान देव सर्वथा उचित। व्यापक जन संस्कृतिसँ मैथिली केँ काटव ई दोसर पैघ आंतरिक घात कहल जायत।

कहि चुकल छी जे मैथिला के व्यापक जन समुदाय सँ फराक करबाक एहि अंतर्घातक कारणेँ मिथिलाक सांस्कृतिक जीवन के दुई फाँक भऽ गेलैक जे अनंतर बढ़िते गेल। एहि दूहू फाँक केँ एकमे सटेबाक चेष्टा आइ धरि नहि कएल जा सकल। ई फाँक क्षेत्रीय नहि, जातिगत अछि, एकहि गाममे दुई जातिक एवं उपेक्षाभाव बनौने रहलाह। मैथिलीक आदि रचनाकार विद्यापति एवं ज्योतिरीश्वर ठाकुरक परम्पराकेँ हुनका तुरतबादे खंडित कऽ देल गेल; फलतः जनसंस्कृति आ हितक सांस्कृतिक धरोहर अपनहि ढङे विकसित होइत रहल। मानक मैथिलीक अनवरत उपेक्षा एकरा विकासकेँ अवरुद्ध नहि कऽ सकल, कारणे जे ई व्यापक-जन केर सांस्कृतिक प्रयोजन तथा कला प्रयोजनक एक मात्र माध्यम छल- अलिखित माध्यम। आई जखन राष्ट्रीय स्तर पर जन सांस्कृतिक धरोहरक प्रासंगिकता स्थापित आ विकसित कयल जा रहल अछि; तखन अहूठाम ई स्पष्ट भऽ



जोड़बाक अथवा पक्षधर होयबाक लेल अपन लिपिकेँ छोड़ब सर्वथा अनुचित अछि। ई बंगला-सन परोसिया भाषा सँ सीखल जा सकैछ जकरा राष्ट्रीय की, अंतर्राष्ट्रीय मुख्यधारा सँ जुड़ाव रहलैक अछि। मैथिली मे आइयो रचनात्मकताक अभाव अछि। भाषा साहित्यक संदर्भ मे नेतृत्वकारी वर्गक भूमिका दिस दृष्टिपात करी तऽ स्पष्ट बुझना जायत जे देवनागरी लिपि अपनेबाक पाछाँ देवभाषा संस्कृति लिपि अंगीकृत करबाक मंशा रहल अछि। देवनागरी लिपिक संज्ञा तऽ बाद मे देल गेलैक, मूलतः संस्कृत लिपि अछि; जेकर, आभिजात्य अवरुद्ध संस्कार मे मैथिलीकेँ रूपांतरित कऽ लेल गेल आ जन परंपरा, मान्यता, रीत-रेवाज, श्राद्ध-विवाह, आचार-व्यवहार अर्थात संपूर्ण सांस्कृतिक जीवन शेष वृहत्तर जनसमुदायसँ सर्वथा भिन्न अछि। एकहि गांव मे सांस्कृतिक जीवनक ई दुई भिन्न स्तर सहज विश्वसनीय नहि लागत, मुदा मानक सांस्कृतिक जीवनक रूप मे ब्राह्मण-कायस्थेक संस्कृति स्थापित छन्हि। वृहत्तर समुदायक नहि। ई नेतृत्वकारी जाति संस्कृत सँ चूकि जेबाक उपरांत निर्विकल्परूपेँ जनभाषा मैथिली केँ त' अपनिया लेलन्हि, मुदा व्यापक जनसँ काटि कऽ संस्कृतक अवरुद्ध आभिजात्य संस्कार मे रूपांतरित कऽ लेलन्हि आ जन-संस्कृति तथा एकता सांस्कृतिक धरोहरक प्रति अनवरत हीन भावना जाइछ जे एहि कुलीन सांस्कृतिक धरोहरक प्रासंगिकता न्यून पड़ि जाइछ। एहि सांस्कृतिक धरोहरक उपेक्षा एवं सार्थकताकेँ ध्यान मे बिनु रखने मैथिली आंदोलन मे वृहत्तर समुदाय केर भागीदारीक कल्पना नहि कएल जा सकैछ।

मध्यकालक राष्ट्रव्यापी वैष्णव आंदोलनसँ मिथिला के फराक रहि शाक्त बनल रहब एक आश्चर्यजनक तथ्य अछि। मुदा एहि कथ्यकेँ गुप्त भेनाई सेहो कम आश्चर्यक गप्प नहि; कारण, मानक मैथिलीक मठाधीश ब्राह्मण-कायस्थ सँ भिन्न वृहत्तर समुदाय मे गोटैके कोनो एहैन परिवार होयत जकरा मे मध्यकालक संत-भक्तक अनुयायी

होयबाक परंपरा नहि हो।

आब हम साहित्यकारक भूमिका पर कनेक दृष्टिपात करब। भाषा आंदोलनक मे लेखक लोकनिक भूमिका केंद्रीय होइत अछि। मैथिली आंदोलनक संदर्भ मे लेखन एवं गतिविधि दुहू स्तर पर मैथिली लेखकक भूमिका की रहल आ मैथिली आंदोलनकेँ कतेक साहित्यिक आधार भेटलैक तकर परीक्षण करबाक चाही। कोनो क्षेत्रीय भाषा साहित्यिक गरिमाक दबाव राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपन मान्यताक कतबा दबाव बना सकल अछि से बंगला सँ सीखल जा सकैछ। ऐतिहासिक परिस्थिति मात्र बंगालक समृद्धिक कारण नहि, वरन लेखकक भूमिका सतत केंद्रीय रहल अछि। मैथिली आंदोलनक संदर्भ मे मैथिली लेखकक ई भूमिका रेखाङ्कित करबा योग्य अछि ये परंपरावादी मोल एवं ब्राह्मण-कायस्थक वर्चस्वकेँ जतबा धरि तोड़ल जा सकल से एहि मोड़ पर।

समय सापेक्ष लोक-चिन्ता तथा राष्ट्रीय मुख्य धारा सँ गहीर संबंध साहित्य मे आंदोलन एवं अंतर्धारणक विविधता उत्पन्न करैछ। कोनो साहित्यक जागरूकता एवं रचनात्मक एही सँ प्रमाणित होइछ। मैथिली साहित्य मे आंदोलनक स्थित अन्य विकसित भाषा-साहित्यक अपेक्षा लचरल अछि। मध्यकालक राष्ट्रव्यापी आंदोलनसँ भारतक कोनहु साहित्य अछूत नहि रहल ताहिठाम मैथिली साहित्य पूर्ण रूपेण निरपेक्ष रहल, जखन कि ओहि आंदोलनक अग्रणी नेता शंकर देव एहि क्षेत्र मे दुई खेप छव-छव मास रहल छलाह आ एहिठामसँ असमक 'अँकिया नाट' हेतु आधार सामग्री बटोरिकेँ लए गले छलाह, जे संपूर्ण भारत मे ओत्तहिसँ पसरल छल। मुदा खेदक विषय, जे मैथिली साहित्यक कर्णधार लोकनि अपन आत्ममुग्धताक कारणेँ ओहि आंदोलनकर्मीसँ किछु नहि लऽ सकलाह जे ओहि समग्र आंदोलनक धाराक लेल घूमि रहल छलाह। एहि खेदजन्य गप्प झाँपि अपन आत्ममुग्धता मे आइयो कतोक मैथिल कहैत छथि जे शंकर देव तँ एहिठाम शिक्षा ग्रहण करए आयल छलाह, जखन कि मानक मैथिली सँ बहिष्कृत वृहत्तर समुदाय ओहि आंदोलनकारीक प्रभाव केँ नीक जकाँ अपनौलन्हि। आइयो ओहि समुदायक बीच कबीर-रैदासक नीक परंपरा छैक। मुदा मानक मैथिलीक कर्णधार अपन आत्ममुग्धता मे एहि ऐतिहासिक प्रयोजन केँ अंगीकृत नहि कऽ अपन अवरुद्ध आभिजात्य संस्कार मे शाक्त: बनल रहल।

आधुनिक काल मे आंदोलनक सर्वथा अभाव तँ नहि कहल जा सकैछ; मुदा आंदोलनक सर्वाङ्ग परम्परा नहि बनि पओलक। प्रगतिशील साहित्यक धारा क्रमश: प्रबल अवश्य भए रहल अछि मुदा आइयो एहिठाम परम्परावादीक लेल स्थान बनायब जतेक सहज अछि ततेक अन्य भारतीय विकसित साहित्य मे नहि। परम्परावादी केँ आइयो एहि अनुपात मे बनल रहबाक एक कारण इहो अछि जे भाषा साहित्यक संपन्न सरकारी-गैर सरकारी केंद्र सभ पर ई वेशी प्रभावित रहल अछि। दोसर दिस, आर्थिक विपन्नता एवं प्रकाशनक घोर अभाव मे प्रगतिशील साहित्यक विकास बाधित होइत रहल। मुदा इएह मूल कारण नहि छैक। अन्य भारतीय भाषा-साहित्यक स्थिति सेहो कोनो बेसी नीक अथवा सरकारी सुविधा बेसी छैक, से बात नहि। जे किछुओ भऽ रहल अछि से लेखकक-वैयक्तिक रुचि एवं सम्मिलित प्रयास मात्र सँ। मुदा मैथिली मे ने आई धरि कोनो लेखकक-संगठन बनि सकल आ ने कोनो साहित्यिक पत्रिका सभक प्रकाशन निजी रुचि किंया सामूहिक प्रयाससँ भऽ रहल अछि। अहिना किछु प्रतिबद्ध साहित्यकार लोकनिक कारणे आंदोलन तऽ नहिं भेल। आंदोलनक स्थिति अवश्य बनल रहल।

मैथिली मे आलोचना विधाक कामचलाउ परम्परा सेहो नहि रहल आ से अहि सभ स्थिति परिस्थितिक कारणे। केहन विडम्बना जे इएह ओ क्षेत्र अछि जतय न्याय आ तर्कशास्त्रक विकास भेल छल। आलोचना कोनहु भाषा-साहित्यक समृद्धिक प्रमाण एवं कसौटी-दुहू होइछ। साहित्यक समृद्धि तथा आलोचनाक समृद्धि सापेक्ष होइत अछि। एहसँ मैथिली साहित्यक समृद्धिक भान होइछ। आजुक तिथि मे सेहो मैथिली मे विशुद्ध आलोचकक संख्या मात्र दुइएटा छथि- पहिल भारद्वाज आ दोसर रामानन्द झा 'रमण'। हिनका सँ पूर्व मात्र रमानाथ झा विशुद्ध आलोचक भेलाह। एकर अतिरिक्तो यदा-कदा कवि कथाकार लोकनि द्वारा आलोचना लिखल जाइत रहल अछि, मुदा से अपन-अपन प्रयोजन भरि, ई आलोचनाक समृद्धि मे सहायक तऽ भए सकैत अछि किन्तु से आलोचनाक स्थापनाक लेल पर्याप्त नहि।

रहस्यक विषय जे मैथिली लेखकक आई धरिक वृहत तालिका मे ब्राह्मण-कायस्थ अतिरिक्त वृहत्तर समुदाय कोनहु आन जातिक लेखक नहि भेलाह। अपवाद स्वरूप जे एकाध पाओलो जाइत छथि से आजादीक बादक उपजा अछि। ऐहन नहि अछि जे एहि कारणेँ अशिक्षा एवं गरीबी छैक। अनेको हिन्दी लेखक एहि क्षेत्र सँ होइत रहलाह अछि आ से वृहत्तर जनसँ मैथिली केँ कटि जेबाक फल थिक। एहेन अपवाद लेखक निश्चित रूपेँ जन-चिंता एवं राष्ट्रीय मुख्यधारा सँ रचनात्मकता संबंधक दबाबेँ उमटाम हेताह, कारण, मानक मैथिली ने तँऽ हिनक परिवारक भाषा होइत अछि आ ने शिक्षाक माध्यम। मुदा आब से युग नहि रहल। आब नितांत प्रयोजनीय जे वृहत्तर समुदाय भागीदारी बढ़वाक चाही, जाहि सँ मानक मैथिली परसँ परम्परावादी वर्चस्व व्यापक रूपेँ टूटय आ मैथिली आंदोलनक पक्ष मे जन-दबाव बनय।

हमरा लोकनि मिथिला मे रहैत छी। ई विदेहक राज्य छल। एहि ठामक माटि-पानि, पर्यावरण, रहन-सहन, आचार-विचार, ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल आदि समग्र वांछित पहलू आन राज्य किंवा देश सँ विशिष्ट अछि। अपन विशाल क्षेत्रफल मे बसनिहार तीन करोड़ तीन लाख जन-समुदाय सभ मैथिल छी आ हमर मातृभाषा समृद्ध मैथिली अछि से आबाल-वृद्धवनिता एहि तथ्य केँ बूझी, अपनाबी आ एकर विकासक लेल तन-मन-धन सँ प्रयासरत रही, जाहि सँ मैथिली आंदोलनक सार्थकता सिद्ध हो।

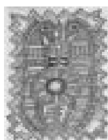
(हिन्दुस्तान, शनि, 29 अप्रिल 1995 ई. सँ साभार)



वितर्क

मैथिलक वर्तमान समस्या

गजेन्द्र ठाकुर



सर्वहारा मैथिल संस्कृति एकटा विप्लवक दौरसं चलि रहल अछि। माइग्रेशन एकटा नीक गप होइत अछि मुदा जाहि संस्कृतिमे एक पीढ़ीमे गामक गाम सुन्न भ गेल ओहिमे माइग्रेशन एकटा अभिशाप बनि आएल अछि। मैथिल संस्कृतिक बीस प्रतिशत भाग नेपालमे आ अस्सी प्रतिशत भाग भारतमे पड़ैत अछि। आ एहि माइग्रेसनसं एतए आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आ सांस्कृतिक संकट उत्पन्न भ गेल अछि।

कारण : 1967 ईस्वीक अकाल आ तकर बादक कएक सालक शिथिल प्रशासन आ फेर बाढ़ि आ तकर बादक कएक सालक शिथिल प्रशासन ई सभ मिलि क एकटा आर्थिक संकट उत्पन्न कएल जाहिसं माइग्रेशन अपन विकट रूपमे सोझां आएल आ एकटा सांस्कृतिक संकट उत्पन्न भेल। आर्थिक स्थिति खराप भेने जातिगत कट्टरता बढ़िते अछि।आ एहि संकट लेल आ एकरासं निकलबाक लेल मिथिलाक संस्कृतिमे बहुत रास सहायक आ विरोधी तत्व सेहो उपलब्ध अछि। एतुक्का भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगहि एतुक्का रहन-सहन आ संस्कृतिक कट्टरता, ई सभटा मिथिलाक इतिहासक अंग अछि। एहिमे राजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म, दर्शन आ साहित्य सेहो सम्मिलित अछि । एतए विद्यापति सन लोक भेलाह जे समाजक

विभिन्न वर्गकें समेटि क राखलन्हि तं संगहि एतए कट्टर तत्व सेहो रहल।

शिक्षा, जाति-पाति आ स्त्रीक दशा : जातिक भीतरक स्तरीकरण, दू जातिक बीचमे मतभेद, बहु-विवाह, बाल-विवाह, बिकौआ विवाह। बाल-विवाहक विरोध आ विधवा विवाहक पक्षमे कोनो सांकेतिक आन्दोलन धरि नहि भेल। शूद्र कवि ऐलूष वैदिक ऋचा लिखलन्हि तं ओ समाज एतेक सुदृढ़ छल जे शुद्रक गण द्वारा एलेक्जेन्डरकें कड़गर विरोध सहए पड़लैक। मिथिलाक सन्दर्भमे सेहो



जखन अपन शिल्पी लोकनि आ सभटा तथाकथित समाजक निम्न स्तरक लोक जखन सुदृढ़ छल तखन जनकक नामकरण जन सं भेल आ फेर सिमरौनागढ़, पजेबागढ़, बलिराजपुर किला, असुरगढ़ किला, जयनगर किला, नन्दनगढ़, कटरागढ़, नौलागढ़, मंगलगढ़, कीचकगढ़, बेनूगढ़, वरिजनगढ़, आदिक एकटा शृंखला मिथिलाक स्थापत्य कलाक रूपमे उद्घाटित भेल। आ ई किला सभ शत्रुकें मथए बला मिथिलाक नामकरणक अनुरूप रहल। बौद्ध खोह, ताक मूर्ति आदि शिल्पी कलाक अन्य रूपक चर्चक रूपमे सेहो उपस्थित अछि। मुदा जे ई कट्टरता बढ़ैत गेल तं आइ मिथिलामे स्थापत्यक नामपर उपलब्धि सेहो शून्य भ गेल। आर्थिक स्थिति एहन भ गेल जे एक सांझ उपास रहए लागल। माइग्रेशन भुखमरी रोकलक मुदा किछु मूल्यपर। तहिना मैत्रेयीसन विदुषी सहस्राब्दी भरि विलुप्त रहलीह से जातिगत कट्टरता (जाति मध्य आन्तरिक अतरीकरण आ दू जाति मध्य-दुनु प्रकार) कारणसं। शिक्षाक ह्रास तं तेहेन भेल जे षड दर्शनमे चारि टा दर्शन मिथिलासं निकलल मुदा आइ गामक गाम मैट्रिक परीक्षामे पास नहि केनिहारसं भरल अछि।

बाढ़ि आ अर्थव्यवस्था : मिथिलाक धरती बाढ़िक विभीषिकासं सेहो जुझैत रहल अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका क्षेत्र तं बिन बाढ़िक, बरखाक समयमये डूमल रहैत अछि।



मुदा ई स्थिति 1978-79 क बादक छी। पहिने ओ क्षेत्र पूर्ण रूपसं उपजाऊ छल, मुदा भारतमे तटबन्धक अनियन्त्रित निर्माणक संग पानिक जमाव ओतए शुरू भ गेल। मुदा ओहि क्षेत्रक बाढ़िक कोनो समाचार कहियो नहि अबैत अछि, कहियो अबितो रहए तं मात्र ई दुष्प्रचार जे ई सभटा पानि नेपालसं छोड़ल गेल पानिक जमाव अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका लोक एहि नव संकटसं लड़बाक कला सीखि गेलाह। हमरा मोन अछि ओ दृश्य जखन कुशेश्वरस्थानसं महिषी उग्रतारास्थान जएबाक लेल हमरा बाढ़िक समयमे अएबाक लेल कहल गेल छल कारण ओहि समयमे नाओसं गेनाइ सरल अछि, ई कहल गेल। रुख समयमे खत्ता-चभच्चामे नाओ नहि चलि पबैत अछि आ सड़कक हाल तं पुछू जुनि। फसिलक स्वरूपमे परिवर्तन भेल, मत्स्य-पालन जेना तेना क कए ई क्षेत्र जबरदस्तीक एकटा जीवन-कला सिखलक। कौशिकी महारानीक 2008 ई.क प्रकोप सोझां आएल। कोशी आ गंडकपर जे दू टा बैराज नेपालमे अछि ओकर नियन्त्रण बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक लग अछि आ एतए बिहार सरकारक अभियन्तागणक नियन्त्रण छन्हि। पानि छोड़बाक निर्णय बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक हाथमे अछि। नेपालक हाथमे पानि छोड़बाक अधिकार तखन अएत जखन ओतुक्का आन धार पर बान्ह/ छहर बनत, मुदा से सालसं ऊपर भेलाक बादो दुनू देशक बीचमे कोनो सहमतिक अछैत सम्भव नहि भए सकल। कोशीपर भीमनगर बैरेज कुशहा, नेपालमे अछि। 1958 मे बनल एहि छहरक जीवन 30 बरख निर्धारित छल, जे 1988 मे बीति गेल। दुनू देशक बीचमे कोनो सहमति किएक नहि बनि पाओल? छहरक बीचमे जे रेत जमा भ जाइत अछि, तकरा सभ साल हटाओल जाइत अछि। कारण ई नहि कएलासं ओकर बीचमे ऊंचाई बढ़ैत जाएत, तखन सभ साल बान्हक ऊंचाई बढ़ाबए पड़त। कोशी अपन मुख्य धारसं हटि कए एकटा नव धार पकड़ैत अछि आ नेपालक मिथिलांचलक संग बिहारक मिथिलांचलकें तहस नहस करैत अछि।

मैथिली भाषा : मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक आधार पर मैथिली सेवी संस्था सभ जे विद्यापति पर्व आ संस्थाक निर्माण, पुरस्कार वितरण कए रहल छथि ओहिमे गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक प्रवेश सीमित अछि मुदा एम्हर ओ बढ़ि रहल अछि। आ ई मैथिलीक लेल एकटा शुभ लक्षण अछि। साहित्यमे सेहो गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ लेखक आ पाठक बढ़ल छथि। मीडिया आ शिक्षा व्यवस्था एहि आधुनिक इन्फॉरमेशन सोसाइटीमे अपन हस्तक्षेपसं

मैथिली भाषा आ मैथिल संस्कृति लेल एकटा प्रहार सन अछि मुदा सौभाग्य मिथिला सन टी.वी. चैनल आ नेपालक कान्तिपुर एफ.एम., जानकी एफ.एम. आ रेडियो मिथिला सन रेडियो स्टेशन एहि प्रहारकें सीमित रूपमे रोकलक अछि। बाल साहित्यक निर्माण सेहो बढ़ल अछि। अन्तर्जाल सेहो एकभगाह मैथिली साहित्यमे हस्तक्षेप कएलक अछि।

उपाय की होअए ? स्थानिक विशेषताक आधारपर स्त्री-शिक्षा, संगणक शिक्षा आ व्यवसाय आधारित शिक्षा देल जाए। प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मिथिला भरिमे मैथिली भाषा द्वारा देल जाए। बाढिक समस्याक समाधान होअए। दामोदर घाटीक आ मयूरक्षी परियोजना जेकां कार्य कोशी, कमला, भुतही बलान, गंडक, बूढ़ी गंडक आ बागमतीपर किएक सम्भव नहि भेल ? विश्वेश्वरैय्याक वृन्दावन डैम किएक सफल अछि ? नेपाल सरकारपर दोषारोपण कए हमरा सभ कहिया धरि जनताकें ठकैत रहब ? एकर एकमात्र उपाए अछि बड़का यंत्रसं कमला-बलान आदिक ऊपर जे माटिक बान्ह बान्हल गेल अछि तकरा तोड़ि कए हटाएब आ कच्चा नहरिक बदला पक्का नहरिक निर्माण। नेपाल सरकारसं त्वरित आ त्वरित समाधान। आ जा धरि ई नहि होइत अछि तावत जे अल्पकालिक उपाय अछि से करब, जेना बरखा आबएसं पहिने बान्हक बीचक रेतकें हटाएब, बरखाक अएबाक बाट तकबाक बदला किछु पहिनहि बान्हक मरम्मतिक कार्य करब, आ एहि सभमे राजनीतिक महत्वाकांक्षाकें दूर राखब। कमला नदीपर 1960 ई. मे जयनगरसं झंझारपुर धरि छहरक निर्माण भेल आ एहिसं सम्पूर्ण क्षेत्रक विनाशलीलाक प्रारम्भ सेहो भए गेल। झंझारपुरसं आगांक क्षेत्रक की हाल भेल से तं हम कुशेश्वरक वर्णन कए दए चुकल छी। मधेपुर, घनश्यामपुर, सिंघिया एहि सभक खिस्सा कुशेश्वरसं भिन्न नहि अछि। कमला-बलानक दुनू छहरक बीच जेना-जेना रेत भरैत गेल, ताहि कारणें एहि तटबन्धक निर्माणक बीस सालक भीतर सभ किछु तहस-नहस भ गेल। कमला धराक हाल ई अछि जे दस घण्टामे पानिक जलस्तर एहि धारमे 2 मीटरसं बेशी धरि बढ़ि जाइत अछि। 1965 ई.सं बान्ह/ छहरक बीचमे रेत एतेक भरि गेल जे एकर ऊंचाइ बढ़ेबाक आवश्यकता भए गेल आ ई मांग शुरू भए गेल जे बान्ह/ छहरकें तोड़ि देल जाए ! एतए विश्वेश्वरैय्या मोन पड़ैत छथि। हैदराबादसं 82 माइल दूर मूसी आ ईसी धपर बान्ह बनाओल गेल आ नगरसं 65 माइलक दूरीपर मूसी धारक उपधारा बनाओल गेल। संगहि धारक दुनू दिस नगरमे तटबन्ध बनाओल गेल। कृष्णराज सागर बान्ह, हुनकर प्रस्तावित 130 फुट ऊंच बनेबाक योजना मैसूर राज्य द्वारा अंग्रेजकें पठाओल गेल तं वायसराय हार्डिंज ओकरा घटा कए 80 फीट कए देलन्हि। विश्वेश्वरैय्या निचुलका भागक चौड़ाई बढ़ा कए ई कमी पूरा कए लेलन्हि। बीचेमे बाढ़ि आबि गेल तं अतिरिक्त मजदूर लगा कए आ मलेरियाग्रस्त आ आन रोगग्रस्त मजदूरक इलाज लए डॉक्टर बहाली कए, रातिमे वाशिंगटन लैम्प लगा कए आ व्यक्तिगत निगरानी द्वारा समयक क्षतिपूर्ति केलन्हि। देशभक्त तेहन छलाह जे सीमेन्ट आयात नहि केलन्हि वरन् बालु, कैल्सियम, पाथर आ पाकल ईटाक बुकनी मिला कए निर्मित सुरखीसं , एहि बान्हक निर्माण कएलन्हि। बान्ह निर्माणसं पहिनहि द्विस्तरीय नहरिक निर्माण कए लेल गेल।



दिल्ली अछि दूर एखनो ! निम्न बिन्दुपर दिल्लीमे केन्द्र सरकारपर दवाब बनाएब। स्कूल कॉलेजमे गर्मी तातिलक बदलामे बाढ़िक समए छुट्टी देबामे कोन हर्ज अछि, ई निर्णय कोन तरहें कठिन अछि? सी.बी एस.ई आ आइ.सी.एस.ई. तं छोड़ू बिहार बोर्ड धरि ई नहि कए सकल अछि। स्थानिक विशेषताक आधारपर स्त्री-शिक्षा, संगणक शिक्षा आ व्यवसाय आधारित शिक्षा आ प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मिथिला भरिमे मैथिली भाषा द्वारा देल जाए। बैरेज बनबाक कालवधियेमे पक्की नहरि धरातलक स्लोपक अनुसारे बनाओल जाए। कच्ची बान्ह सभकें तोड़ि कए हटा देल जाए आ पक्की बान्हकें मोटोरेबल बनाओल जाए, बान्हक दुनू कात पर्याप्त गाछ-वृक्ष लगाओल जाए। बिहारमे सड़क परियोजना जेना स्वप्नक सत्य होअए जेना देखा पड़ि रहल अछि, तहिना सभ विघ्न-बाधा हटा कए, युद्ध-स्तर पर एहि सभपर काज शुरू कएल जाए।



अतीत

मिथिलाक इतिहास

– डा. कमल कांत झा, पं. श्री गणेश राय विद्याभूषण एवं डा. धनाकर ठाकुर



बृहद विष्णु पुराण के दोसर अध्याय मे मिथिला–महाम्य शीर्षक अंतर्गत 20 आओर 21 श्लोक मे कहल गेल अछि :
''मिथिला तैर मुषिश्च वैदेही नैमि काननम
ज्ञान क्षेत्र कृपापीठ स्वर्ण लाङगल पद्धतिय:
जानकी जन्म भूमिश्च नित पेक्षा विकलयशा
रमानन्दकरी विश्वभाविनि नित्य मंगला।''

अहि तरहें मिथिलाक 12 टा नाम अछि। मिथिला, तीरभुक्ति, वैदेही, नेमि कानन, ज्ञानशिला, स्वर्ण लाङगल पद्धति, जानकी जन्मभूमि, विकलमशा, रमानन्दकरी, विश्वभाविनि एवं नित्य मंगला।

मिथिलाक अर्थ–
''अन्तर वाह्यश्च सर्वत्र मध्यान्ते रिपव: सदा
मिथिलानाम सज्ञेय जनकश्च कृत महि
मकारो विश्वकर्ताच थकार सृष्टि पालक:
लकोरो लयकर्ता मै त्री मात्रा शाक्तयो भवन''

(भीतर, बाहर, सब ठाम जे शत्रु के दमन करथि, मिथिला के मतलब जहां जनक राज्य करथि।)

मि–थि–ला, मि के मकार– सृष्टि के निर्माता
थि के थकार– सृष्टि के पालनकर्ता
ला के लकार– सृष्टि के लयकर्ता (संहारकर्ता)
एवं तीनू मात्रा शक्ति के द्योतक थिक।

71टा चतुर्युगी पूर्ण भेला उपरांत इंद्रक पद बदलैत छन्हि जिनका मनु कहल जैत छन्हि आओर ओहि अवधि के मनवान्तर जे 36720000 मानव वर्ष के बराबर होइत अछि। अखन धरि 14 टा इंद्र भऽ चुकलाह।

जिनकर आयु बहुत–बहुत पैघ होइछ वो सभ चिरंजीवी कहाइत छथि। अखन धरि आठ टा चिरंजीवी भऽ चुकल छथि। (अश्वथामा, बालि, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, परशुराम आ मारकण्डेय)

चौबिसम चतुर्युगी के समय मे ब्रह्माजी, वशिष्ठ जी

सऽ मृत्युभुवन जाकऽ सूर्यवंशी राजाक पुरोहित बनबाक आग्रह कैलनि, मुदा वशिष्ठ जी इ कहैत मना कर देलनि जे इ वृत्ति हमरा बढ़िया नहि बुझना जाइत अछि।

तखन ब्रह्माजी हुनका समझौलनि जे हम किछु महान उद्देश्य वास्ते अहां के पठा रहल छी त्रेता युग मे भगवान विष्णु के सूर्यवंशी राजाक घर मे रामावतार होयत।

वशिष्ठ जी मानि तऽ गेलाह मुदा अपन एकटा सुझाव के साथ कि एतवा दिन मृत्युभुवन पर रहनाई बड़ मुश्किल तैं सतयुग के उपरांत जे द्वापर अवैछ तकरा आगाँ-पाछाँ कए पहिने त्रेता युग के आनल जाए, जे मान लेल गेल। तकर बादे सतयुग के बाद त्रेता तखन द्वापर भेनाई आरंभ भेल। ओहि सऽ पहिने 24 बेर, सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलयुगक चक्र भए चुकल रहैक।

(सतयुग-172800 वर्ष, द्वापर-1296000 वर्ष, त्रेता-8040000 वर्ष, कलयुग-432000 वर्ष)

ब्रह्माजी सॅ आज्ञा लऽ वशिष्ठ जी मृत्युभुवन आबि सूर्यवंशी लोकनिक कुल पुरोहित बनलनि।

आब सूर्यवंशी लोकनिक परिचय जानल जाय-

सूर्यदेवक पुत्र रहथि मनु। मनु के चारिटा पुत्र- अंग, बंग, निमिय आओर अवाध रहनि। जिनकर नामे अंग देश, बंग देश, नेपाल देश आओर अवध देशक नाम राखल गेल।

सतयुगक बाद त्रेतायुग में राम जी अवतरित भेलाह, जिनकर विवाह सीता जी सं भेलैन्हि। मुदा दुनूह गोटे समगोत्री ठहरि जैतथि तैं ब्रह्मा जी एकटा युक्ति सोचलनि।

रामावतार सऽ बहुत पहिने जखन कलियुगे रहैक आ मात्र 5087 वर्ष बितल रहैक, तखन ब्रह्मा जी निमिय के एहन मतिभ्रम कऽ देलनि जे सशरीर स्वर्ग जैबाक इच्छा जागृत भेलनि तकरा पूर्ति हेतु वशिष्ठ जी सँ यज्ञ करवाक आग्रह केलनि। वशिष्ठ जी सँ स्वीकृति पाबि यज्ञक तैयारी में जुटि गुलाह। ऋषि मुनि सभ के आमंत्रण पठाओल गेल। यज्ञ मुहुर्त पर सभ ऋषि तऽ पहुंचि गेलाह मुदा वशिष्ठ जी नहि पहुंचलनि। पता लागल जे ओहि मुहुर्त पर वो इंद्र के सेहो वचन देने रहथिन्ह तैं वो नहि ओताह। इ सुनि निमिय बहतु दुखी भऽ गेलनि, जे यज्ञ कर्म नहि भऽ सकत। परञ्च महात्मा सभ विचार कैलनि जे वशिष्ठ जी के अनुपस्थिति मे गौतम ऋषि के आचार्यत्व मे यज्ञ संपादन कैल जाए। गौतम ऋषि यज्ञ आरंभ कैलनि। ओहि युग मे लोकक गोत्रक निर्धारण गुरु के गोत्र सऽ होइक, तै निमिय के गोत्र वशिष्ठ सँ बदलि गौतम भऽ गेलनि, आओर वो यज्ञक संकल्प 500 वर्षक वास्ते रहैक।

जखन वशिष्ठ जी इंद्रलोक सऽ लौटलनि तऽ हुनक पुत्र शक्तिजी सभटा वृतांत सुनौलकन्हि। वशिष्ठ जी कुपित भए निमिय के यज्ञ स्थल पहुंचलनि जतऽ दूनू मे खूब गरमा-गरम बहस भेल। क्रोधाग्नि मे दूनू एक दोसर के शाप देलनि।

वशिष्ठ जी हाथ मे जल लै बजलाह- 'सदृयह विदेहो भव'। तहिना निमिय सेहो शाप देलनि। दूनू के मृत्यु प्राप्त भेलनि। वशिष्ठ जी के आत्मा परकाया प्रवेश विधि द्वारा वरुण के शरीर में निवास कैलनि, जाहि सऽ वरुण मित्र वरुण के नाम सऽ जानल गेलाह।

एक बेर मित्र वरुण उर्वशी के देखि तेहन ने कामासक्त भेलाह जे वीर्य स्खलन भऽ गेलन्हि, जकरा एकटा बड़का घैल मे राखल गेल जाहि सऽ अगस्त्य के जन्म भेलनि आओर वो घटयोनि कहौलनि।

किछु वीर्य छिटकि कऽ कमलक पात पर खसल जाहि सऽ वशिष्ठ जी उत्पन्न भेलाह, जिनका कोना ने कोना वेश्यापुत्र कहल गेल।

निमिय के मृत्यु के पश्चात हुनकर आत्मा आंखिक भौंह पर निवास पौलनि तै निमि कहौलनि। उपस्थिति ऋषिगण हुनका मृत शरीर के मंथन कैलनि जाहि सँ एकटा पुत्र जन्म भेल, जिनका मिथि कहल गेल।



मिथि एक दक्ष राजा रहथि। अपन एकटा नगरी बसौलनि, जे मिथिलापुरी कहल गेल। अपन पिता के शरीर सँ उत्पन्न होयबा कारणे वो जनक सेहो कहौलनि। ओहि दिनक बाद जे किओ राजा होथि जनक के नाम सऽ जानल जाइथ। सीता जी के पिता एकैसम जनक रहथि। हुनका नाम कुशध्वज रहनि।

निमि के यज्ञ में अलग-अलग भूभाग सऽ पधारल 19टा ऋषि मिथिले मे बसि गेलाह, जिनका सभक वंशज हुनकर सभ गोत्र रूपे मिथिला मे अखन धरि वास कए रहल छथि। ओहि गोत्र आओर शरीर परिवर्तन भेला सऽ श्रीराम आओर सीताजी के विवाह विधि सम्मत संभव भेल।

पानिनि के अनुसार- जे देश शत्रु सऽ मुक्त कराओल गेल अथवा शत्रु सँ मुक्त रहल सैह भूभाग मिथिला। जतऽ के लोक शक्ति (पराक्रमी) संपन्न होइत छल। शिरध्वज जनक, जिनका समय मे जगदम्बा जानकी अवतरित भेली, बहुत रास शत्रु के पराजित कैने रहथि जाहि मे सकसंय राज सेहो रहथि।

विदेह जनकक खानदान मे 57टा राजा भेल रहथि। लोक सभ दीर्घजीवी होथि। द्वापर अवैत-अवैत राजशक्ति कमजोरि होइत गेल आओर दूभाग मे बंटि गेल रहैक पछिम मिथिला (तिरहुत) हस्तिनापुरक समर्थक रहथि आओर पूरब मिथिला (मत्स्य जनपद) राज विराटक नेतृत्व मे पांडवक समर्थक रहथि। पांडव अज्ञातवास विराटनगर मे बितौने रहथि। जनकवंशक अंतिम राजा खड़ाब प्रकृति के रहथि तैं, लोक सभ आचार्य सभक नेतृत्व में राजसत्ता में बेदखल कऽ देलनि। सक्षम राजा के आशा मे मिथिला बहुत दिन धरि राजाविहीन बनल रहल। वास्तव मे संसार मे सभ सऽ पहिने प्रजातंत्रक व्यवस्था मिथिले सऽ आरंभ भेल रहैक। आचार्य लोकनि के देखरेख मे पंचायती



व्यवस्था सऽ सभटा कार्य संपादन होइक। लोक धर्मदंडक भय सऽ स्वत: सुमागी रहैक।

कहल जाइक- ''न राजा न च राज्य आसित,
न दण्डयो न च दण्डिका,
धर्मे नैव प्रजा से वै:
रक्षंतिम परस्परम''

कहबाक मतलब इ जे- न राजा रहैक, न दंडाधिकारी रहैक न दंड रहैक। लोकसभ धर्म सऽ डेराइक आओर सुरक्षित रहैक।

वैशाली समेत संपूर्ण मिथिला में बहुत समय धरि प्रजातांत्रिक व्यवस्था रहल। बाहिरी लोकक आक्रमण केनाइ शुरू भऽ गेल। सोझ सहृद मैथिल के हरौनाइ तखन कोनो मुश्किल नहि रहि गेल रहैक। वाजी संघ, लिच्छवी, शैमुङ्ग, नंद वंश, सुनग वंश, कन्त वंश, गुप्त वंश, वर्धन वंश आदि समय-समय पर मिथिला पर राज केलनि। ओहि समय (पांचम-छठम शताब्दी) मे जयवर्धन सल्हेश राजा भेला, जिनकर राजधानी महिसौथा- बिरहा (वर्तमान मे नेपाल) रहनि। तिब्बती लोक बहुत बेर आक्रमण कैल मुदा पराक्रमी राजा सल्हेश ओकरा सभके पहाड़ के पार धरि खेहारि भगौलनि, जाहि सऽ वो शैलेश (पहाड़क राजा) सेहो कहौलनि। हुनकर पराक्रम सऽ संपूर्ण पूर्वोत्तर भारत सुरक्षित रहैक।

छठम सऽ नवम शताब्दी- परञ्च हुनका बाद मिथिला पाल वंश द्वारा तीन सौ वर्ष शासित भेल। पाल बौद्ध धर्मावलंबी रहैक, जकर अंतिम शासक मदन पाल रहैक। वर्तमान बलिराज गढ़ (बाबू बरही, मधुबनी जिला) संभवत: हुनक राजधानी रहनि, जकर गहन खोज आओर उत्खननक आवश्यकता अछि। मदन पाल कमजोर राजा रहथि जे आदि सुर, सामन्त सेनक सेना के सामना नहि कऽ सकलाह।

नवम शताब्दी-एगारहम शताब्दी- सेन वंश सामंत सेन सनातनी (वैदिक) रहथि तैं मैथिल जे स्वयं सनातनी रहथि, सामंत सेन के सहयोग कएलनि।

प्रख्यात विद्वान वाचस्पति मिश्र ओहि समयान्तरक वर्णन 'न्याय कणिका' पुस्तक में एना कऽ कैने छथि : 'निज भुज विर्यमस्थ्य, सुरन आदि सुरोजियति' आदि आदिसुर (सामंत सेन) अपना बाहुबल सऽ जीत रहल छथि। सेन वंश मे पांच टा राजा रहथि, सामंत सेन, हेमन्त सेन, विजय सेन, वल्लाल सेन एवं लक्ष्मण सेन (एगारहम शताब्दी धरि)। कर्नाट वंशक नान्य देव लक्ष्मण देव के पराजित कै सेन वंशक अंत कैलनि। नान्य देव पच्छिम मिथिला के कब्जा कऽ सिमरौनगढ़ (बिरगंज) में डेरा जमौलनि तत्पश्चात पूरा मिथिला के जिति कमलादित्य स्थान (कमलाथान) में अपन राजधानी स्थापित कैलनि। न्याय नेवक खानदान के लेल कहल गेल अछि,

षष्ट नान्य पतिर्भव तदानु श्री गंगा देवो नृप:
तत्सुनूर नरसिंघ देव नृपतय: राम सिंघ सतत:,
तत्सुनु खलु शक्ति सिंघ: नृपति: भूपाल बस्ती जात:।

न्याय देवक पश्चात गंग देव, नरसिंघ देव, शक्ति सिंघ देव एवं हरि सिंघ देव भेलाह, जे मैथिली ब्राह्मण और कायस्थक पंजी व्यवस्था शुरू करवाक प्रसिद्ध काज कैलनि।

हरि सिंघक प्रधानमंत्री पं. चंद्रशेखर ठाकुर रहथि, (महाकवि विद्यापति जी के पितामहक भाई) । वो बहुत रास ग्रंथक रचना कैलनि एवं तेहन वीर रहथि जे नेपालक पहाड़ धरि अपना राज्यक विस्तार कऽ सकलाह (नेपालक तराई तऽ पहिनहि सऽ मिथिलाक भाग छल।)

हरि सिंघ देवक राज पंडित रहथि कामेश्वर ठाकुर (ओइनवार वंशज)। ओहि समय वर्ण रत्नाकर ग्रंथक रचना भेल, जे संभवत: उत्तर भारीय भाषाक प्रथम गद्य एवं विश्वकोष अछि। जकर रचनाकार रहथि कवि शेखराचार्य ज्योतिरेश्वर ठाकुर।

ब्राह्मण शासन (राज) 1326-1526

1326 में फिरोजशाह तुगलक मिथिला पर भयंकर आक्रमण कैलक, तखन महाराजा हरिसिंघ देव अपन राजपाट पं. कामेश्वर ठाकुर के जिम्मा लगा पं. चंद्रशेखर ठाकुर के संग कऽ नेपाल कऽ परा गेलाह।

इतिहासकार डा. उपेन्द्र ठाकुरक अनुसार हरिसिंघ देव के परैलाक बाद 27 साल धरि मिथिला राजा विहीन रहल। 1353 ई मे फिरोजशाह तुगलक पं. कामेश्वर ठाकुर के अपन कारद राजा नियुक्त कैलक।

जखन कामेश्वर ठाकुर कर (मालगुजारी) वसूली मे असक्षम साबित भेलाह तखन फिरोजशाह तुगलक हुनका हटा हुनकर शक्तिशाली पुत्र भोगीश्वर ठाकुर के मित्रता स्वरूप मिथिला राज्य प्रदान कैलनि। वो सभ ओइनी ग्रामवासी (मुजफ्फरपुर) रहथि तैं ओइनवार राजा कहौलनि। अहि तरहे 1326-1353 सऽ मिथिला में ब्राह्मण शासन आरंभ भेल।

किछुए समय बाद भोगीश्वर ठाकुर के छोट भाई भवेश ठाकुर सत्ता के खिलाफ साजिश रचि बगावत शुरू कऽ देलनि। आजिज भऽ कऽ पंडित लोकनि भवेश ठाकुर (भव सिंघ) के सुगौना (राजनगर) स्टेट देवा देलथिन्ह, मुदा भवेश ठाकुर असंतुष्ट रहि साजिश रचनाई जारि रखलाह।

भोगीश्वर ठाकुर के स्वर्गीय भेला पर हुनक पुत्र गंगेश्वर सिंघ राजा भेला। परञ्च एकटा मुसलिम जमींदार असलन साजिश द्वारा छुरा घोपि कर 1361 एटी में वीरसिंघ एवं कीर्ति सिंघ के हत्या करवाक योजना बनौने रहैक परञ्च कहुना छुपि कऽ दुनू बांचि गेलाह। दुनू राजा गुप्त रूप सऽ किछु दिन बाद तुगलक सम्राट आगाँ अर्जी पेश कैलनि। सम्राट दुनू भाई संग सेनाक पलटन पठौलनि। लड़ाई मे असलन आओर राजकुमार वीरसिंघ सेहो मारल गेलाह।

कीर्ति सिंघ राजा बनलनि, मुदा बेसी समय धरि राज नहि कऽ सकलाह। तीनू भाई मे सऽ किनको सखा संतान नहि भेलनि। पुनः भवसिंघ राजा बनाओल गेलाह। एहि तरहे भोगीश्वर ठाकुरक आगाँ वंश नहि चललनि।

भवसिंघ के पश्चात हुनका ज्येष्ठ पुत्र देवसिंघ राजा भेलाह जे अपना नया राजधानी देवकुली (देकुली धाम) में स्थापित कैलनि जतऽ बहुत रास मंदिर एवं पोखरिक निर्माण करौलनि। हुनक मृत्यु उपरांत हुनक ज्येष्ठ पुत्र शिवसिंघ राजा भेलाह जे महाकवि विद्यापति के सखा रहथिन्ह, जिनका खेलन कवि सेहो कहल गेल। शिवसिंघ गजरथ गढ़ मे नया राजधानी बनौलनि। वो सम्राट के कर चुकेनाई बंद कऽ स्वतंत्र राजा होयाक घोषणा केलनि।

सम्राट इब्राहिम साह तुगलक ई जानि क्रोधित भऽ 1416 मे भारी सेना के संग आक्रमण कए देलक। मिथिलाक लोक वीरतापूर्वक लड़ल। दुनू तरफ सँ भारी जन-धन के हानि भेल। दुर्भाग्यवश शिवसिंघ शहीद भेलाह मुदा हुनक शव शत्रु द्वारा छिपा देल गेल। लोकसभ सोचलनि जे महाराजा हिमालय दिस कतौ परा गेलाह से जानि रानी लखिमा 12 वर्ष धरि द्रोणवार राजा (गढ़ बनैली) के राज में समय बितौलनि। 12 वर्ष धरि प्रतीक्षा कैलाक उपरांत रानी लखिमा महाराज के मृत मानि सती भेलीह।

महाराजा शिवसिंघ संतानहीन रहथि तै, हुनका छोट भाई पद्म सिंघ (कारद) राजा बनलनि मुदा वो हो 1428 ई मे मृत्यु कैं प्राप्त भेलाह। हुनकार मृत्यु के पश्चात रानी विश्वास देवी राज काज अपना हाथ में लेलनि। रानी सेहो संतानहीन रहथि, तखन शिवसिंघक छोट भाई हरि सिंघ राजा भेलाह तकर बाद नरसिंघ राजा भेला, जे 1461 ई. में स्वर्गीय भेलाह।

महाकवि विद्यापति अपन सौ सालक जीवन (1350-1450) में मिथिलाक दसटा राजा आओर रानी के देखि सकलाह। (भोगीश्वर ठाकुर सऽ हरिसिंघ धरि) 1460 मे राजा नरसिंघ के मृत्यु सऽ एक वर्ष पहिने हुनकर पुत्र धीरसिंघ राजा बनलनि। धीरसिंघक मृत्युक पश्चात हुनकर छोट भाई भैरव सिंघ राजा भेलाह। वो बहुत लोकप्रिय रहथि। हुनकर शासनकाल मे साहित्यिक विकास संगहि संपूर्ण मिथिलांचल मे पोखरि, इनार, मंदिर, रास्ता आदि के निर्माण भेल। हुनकर मृत्यु 1515 ई. मे भेलनि। तकर बुद हुनकर पुत्र रामभद्र सिंघ देव राजा भेला। हुनकर व्यक्तित्व बहुत सुन्दर रहनि ताहि कारने लोक हुनका रूप नारायण सेहो कहनि। ओहि समय मे मिथिलाक फैलाब बंगाल सऽ उत्तर प्रदेश धरि रहैक। दुर्भाग्यवश हुनक पुत्र लक्ष्मीनाथ सिंघ ओहन बहादुर नहि रहथि से वो ओइनवार वंशक अंतिम राजा साबित भेलाह।



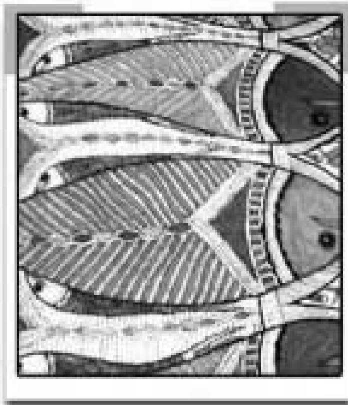
1526 ई मे भैयारी फुट, पटिदारी इर्ष्या आओर सिकन्दर लोधी द्वारा मिथिला पर आक्रमण में लक्ष्मी नाथ मारल गेला। सिकन्दर लोधी अपना जमाय (दामाद) अलाउद्दीन के मिथिला के शासक बना पठौलक। ताबत धरि दिल्ली में मुगल वंशक शासन स्थापित भऽ चुकल रहैक। तकर बाद लगभग 50 वर्ष धरि मिथिला पर मुसलमानक शासन रहल जाहि बीच लोक शोषण अनवरत होइत रहल। सर्वत्र जंगल राज जकाँ मचल छल। बहुत रास मैथिल इस्लाम धर्म अपनाव लै मजबूर भेलाह। बहुत रास महत्वपूर्ण ग्रंथ जरा देल गेल। विद्यापतिक डीह बिस्फी के हिन्दू-विहीन कै देल गेल। हुनका वंशज सौराठ पराकऽ जान बचौलनि। भयाक्रांत भऽ विद्वान एवं साहित्यकार लोकनि किछु ग्रंथ कें साथ मिथिला सऽ बाहर नेपाल, बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात आओर आसाम जाकए अपन जान, धर्म, साहित्य, संस्कृति के रक्षा कैलनि।

50 साल बाद जखन अकबर महान दिल्ली के सम्राट बनला तखन

वो मिथिला मे शांति के प्रयास कैलनि आओर एहि निष्कर्ष पर पहुंचला जे कोनो मैथिल ब्राह्मण के राजा बनौला सऽ शांति स्थापना एवं करऽक संग्रह भऽ सकैछ। तखन ओ राज पंडित चंद्रपति ठाकुर (स्रोतीय) के गढ़ मंगला (म.प्र.) सऽ दिल्ली बजा हुनक माझिल पुत्र महेश ठाकुर के मिथिलाक शासनक बनौलनि। ताहि उपलक्ष्य मे किछु कवि गढ़ मंगल में लिखने छथि-

''अति पवित्र मंगल करन, रामजन्म के दिन,
अकबर तुषित महेश को, तिरहुत राजा कौन?
नवग्रह वेद वसुन्धरा शकमे अकबर शाह,
पंडित सुबुध महेश को, किन्हो मिथिला राज''

(रामनौमी के दिन 1499 सन के पंडित महेश ठाकुर मिथिलाक राजा भेलाह)



शुरू मे महेश ठाकुर कर वसूली एवं सत्ता संचालन मे असफल रहला कारण जे बहुत दिन धरि मिथिला राजा विहीन एवं जंगल राज के आदि भऽ गेल छल। सम्राट अकबर रूष्ट भऽ राजपाट छीन लेबाक धमकी देलथिन्ह, मुदा महेश ठाकुर सखा पंडित रघुनंदन दिल्ली जाकऽ सम्राट के समझा-बुझा कऽ मनौलनि। पंडित महेश ठाकुरक मूल खरौरे भौर रहनि तैं हुनकर वंश 'खंडवाल कुल कहायल आओर हुनक राजधानी सरिसव पाही के पश्चिमोत्तर राजग्राम मे रहनि।

महेश ठाकुरक मृत्यु पश्चात हुनक ज्येष्ठ पुत्र गोपाल ठाकुर राजा भेलथि। वो अल्पायु भेलाह, हुनक बाद हुनक छोट भाई परमानंद ठाकुर राजा बनलाह। हुनकर मृत्युक बाद महेश ठाकुरक पांचम पुत्र शुभंकर ठाकुराजा बनला जिनकर मृत्यु 1617 ए.डी. मे भेलनि। तकर बाद हुनक पुत्र पुरुषोत्तम ठाकुर राजा बनला मुदा 1623 मे षडयंत्र मे मारल गेलाह। तकर बाद हुनकर सतवां भाई नारायण ठाकुर राजा बनला। 1645 मे हुनक मृत्यु पश्चात हुनक बालक सुंदर ठाकुर राजा भेलथि। हुनका पश्चात महिनाथ ठाकुर राजा भेलथि। तखन दिल्ली के तख्त पर औरंगजेब आबि चुकल।

महिनाथ ठाकुर के बाद हुनकर पुत्र नरपति ठाकुर राजा भेलाह जे अपन राजधानी राजग्राम सऽ दरभंगा स्थानांतरण केलाह जे अखनो रामबाग महल कहल जाइत अछि। वो वृद्धावस्था मे अपन प्रतापी पुत्र राघवसिंघ के राज पाट सौंपि काशीवास प्रस्थान कैलनि।

राघवसिंघ महान योद्धा एवं शासक रहथि। कैकटा युद्ध अपना भुजबल सऽ जिति मिथिला के मान बढ़ौलनि। हुनकर मृत्युक पश्चात हुनक ज्येष्ठ पुत्र विष्णु सिंह राजा भेला परञ्च वो मात्र चारि साल शासन कऽ सकलाह। मकवानपुर (नेपाल) के जमींदार छल सऽ जनकपुर धाम बजा कऽ हत्या कऽ देलकन्हि। परिस्थितिवश हुनक छोट भाई नरेंद्र सिंघ सत्ता रूढ़ भेला, वो नीक योद्धा रहथि, जलदिए भाई के हत्यारा सऽ बदला चुकैला।

1760 ई. मे नरेंद्र सिंघ के मृत्यु के बाद हुनकर पितिऔत प्रताप सिंघ राजा भेला तथा हुनका बाद माधव सिंह राजा भेलाह। तखन धरि अंग्रेज भारत मे अपन जड़ि जमा चुकल छल।

अंग्रेज मिथिला मे कोनो शक्ति संपन्न राजा नहि चाहैत रहैक तैं कैकटा छोट-छोट सावंत, जमींदार राजा सब ठाढ़ कै देलक। सीधा सादा मैथिलजन अंग्रेजक फरेब के नहि बुझि सकलाह। पूर्वी मिथिला अलगे शासन व्यवस्था के तहत बांटि देल गेल।

1807 ई मे दरभंगा महाराज माधव सिंघ के मृत्युक बाद हुनकर पुत्र छत्र सिंघ राजा भेला, हुनक पश्चात रूद्रसिंघ, तकर बाद महेशवर सिंघ गद्दी सम्हारलाह। 1860 ई. मे महेश्वर सिंघ के मृत्यु के समय हुनक पुत्र लक्ष्मीश्वर सिंघ अबोध रहथिन्ह, तैं अंग्रेज सरकार दरभंगा राज के 'कोर्ट आफ वार्डस' अंतर्गत राखि देलक। अंग्रेजक साजिश के शिकार पच्छिम मिथिला राजभाषा के रूप मे मातृभाषा मैथिली के बदलि उर्दू परिशियन एवं अंग्रेजी के थोपल गेल।

जखन लक्ष्मीश्वर सिंघ 21 बरखक भेलाह लिखित क्लेम कैला सऽ राज तऽ हुनका वापस जरूर भेटि गेल मुदा 1912 में बंगाल विभाजन के समय मिथिला अलग राज्य नहि बनिक सकल बल्कि बिहार राज्य के अंतर्गत राखल गेल। बुझी जे मिथिलाक दुर्भाग्य तहिए सऽ शुरू भऽ गेल।

महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंघ के मृत्यु के बाद रामेश्वर सिंह महाराजा बनला, हुनकर मृत्यु के पश्चात जे महाराजा बनला वो छथि कामेश्वर सिंघ जे अंतिम महाराजा रहथि। 1947 मे भारत स्वतंत्रता के बाद महाराजाक शासन खत्म भऽ गेल।

बिहार राज्य के जहिया जन्म नहि रहैक आ जहिया सऽ मानव सभ्यताक आरंभ भेल, तहिया सऽ मिथिला राज्यक अस्तित्व छल। मुदा षडयंत्र कऽ मिथिला के बिहार राज्य में मिला देल गेल।

1912 में बंगाल सऽ बिहार, 1936 मे बंगाल सऽ उड़िसा अलग कैल गेल। 2000 मे बिहार सऽ झारखंड के अलग कैल गेल परञ्च मिथिला के अखनो धरि बिहार मे राखल गेल अछि।

घोर आश्चर्यक बात! मिथिलाक लोक अखन धरि अपन राज्य नहि बना सकलाह, मैथिलजन पौरूषहीन तऽ नहि छथि?

संदर्भ-

1. सल्हेश महागाथा -मौखिक
2. कीर्तिलता- विद्यापति
3. मिथिला तत्व विमर्श- महामहोपाध्याय पं. रामेश्वर झा
4. मिथिलाक इतिहास- डा. उपेन्द्र ठाकुर
5. पं. महेश ठाकुर महाराज दरभंगा- डा. कृतनाथ ठाकुर
6. पं. सहदेव झा- अन्हराठाढ़ी
7. पं. युगेश्वर झा-हरिपुर मजराही टोल

-अंग्रेजी सँ अनुवाद : ललित कुमार झा



अप्पन भाषा

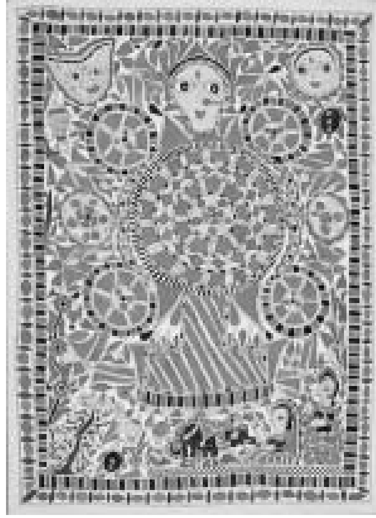
लोकोक्तिक महत्त्व

डॉ. लालपरी देवी



साहित्य मनुष्यक जीवनक एकटा महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति थिक। लोकोक्ति सेहो मनुष्यहिक लौकिक जीवनक स्वाभाविक भाषिक अभिव्यक्ति थिक आओर तेँ साहित्य मे लोकोक्तिक महत्त्व कैँ अस्वीकार नहि कएल जाए सकैत अछि। सामान्यरूप सँ ओही साहित्यकैँ विशेष गौरव प्राप्त होइत अछि जे लोक-जीवनक अभिव्यंजन करैछ। एहि लेल ओकरा हेतु ई आवश्यक अछि जे सर्वसाधारण लोकक हृदय मे स्पन्दन तथा उत्प्रेरणा उत्पन्न करबाक क्षमता एहि मे रहए। से ताबत धरि नहि भए सकैत अछि यावत् धरि लोककैँ ई विश्वास नहि भए जाइक जे ई साहित्य हमरे जीवनसँ वा हमारे सदृश लोकक जीवनसँ संबंधित अछि। भाव तथा भाषाक साम्य प्राप्त भेलें ताहि प्रकारक आस्था सुगमतापूर्वक उत्पन्न भए सकैत अछि। आओर जे हेतु लोकोक्ति वा काव्यधारा वार मोहावरा लोकक जीवनक अनुभव सिद्ध मान्यताक सुनिश्चित अभिव्यक्ति थिक; तेँ एकर प्रयोग द्वारा जनसाधारण लोकक हृदय कैँ सरलतापूर्वक द्रवित वा उद्दीप्त कएल जाए सकत अछि।

लोक जीवन मे प्रचलित वाक्य वा वाक्यांश जे एक निश्चित स्वरूप मे तथा निश्चित अर्थ मे दृष्टांत रूपेँ अनेको व्यक्ति द्वारा प्रयोग कएल जाए लगैत अछि, तकरे लोकोक्ति कहल जाइत अछि। भिन्न-भिन्न परिस्थिति मे भिन्न-भिन्न व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त भेलोपर लोकोक्ति शब्द-योजना मे एकरूपता सुरक्षित जकाँ रहैत अछि। ओकर स्वरूप मे कोनो तेहन परिवर्तन नहि अबैत अछि। एकर शब्द संयोजना तथा अर्थ दुनू रूढ़ भए गेल रहैत अछि, आओर जखन लोककेँ अपन कथनक यथार्थता प्रमाणित करबाक इच्छा होइत अछि उपयुक्त लोकोक्तिक प्रयोग करै तखन तकर अछि। उदाहरणार्थ मानि लिअ जे केओ व्यक्ति उचित तथा अनुचित अवसर पर असावधान रहि ओहि अवसरक उपयोग नहि करैत अछि किन्तु समय व्यतीत भए गेलापर ताहि पाछाँ लुबुधन रहि अपसिआँत होइत रहैत अछि। एहन बुद्धिहीन व्यक्तिक प्रसंग एहि लोकोक्तिक प्रयोग कएल जाइत अछि जे 'गूड़ गेल केहुनी, हाथ चटिते छथि'। एहि कथनक आशय ई अछि जे गूड़ यावत धरि हाथ मे रहैत अछि तावते ओकरा खाए लेबाक चाही, यदि शीघ्रतापूर्वक ओकरा नहि खाए लेल जाए तँ ओ पिघलिकेँ हाथक नीचाँ दिसी अर्थात केहुनी दिसी चल जाएत आओर तखन हाथ चटलापर गूड़क आस्वादनीक जकाँ नहि भए सकैत अछि। पूर्व समय मे गूड़ एहन बनैत छल जे बड़ शीघ्र पिघलि जाइत छल। ओकरा कटोरा वा ताही प्रकार कोनो पात्र मे राखल जाइत छल। तरहत्थी पर बेसी काल धरि रखलापर ओ पिघलिके नीचाँ खसि पड़ैत छल। तँ यदि केओ गूड़ खएबाक इच्छुक होइत छलैक, जँ तरहत्थी पर लए कँ अविलंब मुहँमे लए जाएब आवश्यक रहैत छलैक। जँ तरहत्थी पर बेसी काल धरि राखल रहैत छल तँ ओ पिघलिकेँ केहुनी दिसि चल जाइत छल आओर तखन तकर भक्षण करब सुलभ नहि रहैत छल। जे व्यक्ति आलसी आ दीर्घसूत्री रहैत छल आओर गूड़केँ तरहत्थी पर राखि बड़ी काल धरि एम्हार-ओम्हर देखैत रहि समय व्यतीय कए दैत छल तकर हाथक गूड़ पिघलिकेँ केहुनी दिसि चल जाइत छलैक आओर तखन यदि गूड़ खएबा लेल मुँह मे हाथ लय जाइत छल। तं हाथ मे लागल-भीड़ल कनेक-मनेक गूड़क रसटा चाटि सकैत छल। मुख्य अंश तँ पूर्वहि पिघलिकेँ टघरि गेल रहैत छल। तहिना जे व्यक्ति उचित समय पर शीघ्रता पूर्वकि अपन काज संपन्न नहि कऽ लैत अछि तकरा पूर्ण सफलता लाभ नहि होइत छैक। दीर्घसूत्री व्यक्तिक एहि प्रकारक पराभवक वर्णन करबाक लेल गूड़ खएवा मे



आलस्य कएनिहारक पराभवक दृष्टांत देल गेल अछि आओर ई दृष्तांत वचन बहु प्रचलित भए गेलें लोकोक्तिक रूप ग्रहण कए लेने अछि।

जखन कोनो कथन लोकोक्ति रूप मे प्रचारित भए जाइत अछि, एक शब्दक स्थान मे कोनो दोसर शब्दक प्रयोग नहि कएल जाए सकैत अछि। जेना उपर्युक्त लोकोक्ति मे गूड़क स्थान मे 'तरहत्थी' शब्दक प्रयोग द्वारा नहि कएल जाए तँ भावार्थ मे समानता रहितहुँ एहि लोकोक्तिक प्रभाव क्षीण भए जाएत। कथनक तात्पर्य मे भिन्नता यद्यपि नहि आओत किन्तु से प्रयोग रूढ़िक अनुकूल नहि रहबाक कारण मान्य नहि होएत। जएह स्वरूप रूढ़ भए गेल अछि, केवल सएहटा ग्राह्य मानल जाइत अछि। बजनिहार व्यक्तिक आशय लोकोक्तिक प्रयोग द्वारा दृष्टांतसँ समर्थित भए प्रामाणिक भए जाइत अछि। लोकोक्ति रूप मे एहि प्रकारक वाक्यांश लोकमे बड़ बेसी प्रचलित रहैत अछि। एकर प्रयोग कोनो व्यक्ति विशेष धरि सीमित नहि रहि ई सर्व साधारणक भाषा भए गेल रहैत अछि। तँ एकरा लोकोक्ति अर्थात साधारणक उक्ति कहल जाइत अछि।

एहि प्रकारक उक्ति यद्यपि सर्वप्रथम कोनो विशेष व्यक्ति द्वारा विशेष अवसर पर भेल रहैत अछि। किन्तु पाछाँ एकर चमत्कार दिस मुग्ध भए आनो आन लोक एकर पुनरूक्ति करए लागल। कालक्रमे सर्व साधारणक उक्ति भए जाइत अछि आओर जे लोकोक्तिक नाम सँ ज्ञात होइत अछि।

विद्यापति अथवा कवीश्वर चंदा झाक कविता मे एहन बहुत रास उक्ति भेटैत अछि जे सर्वप्रथम तँ हुनके द्वारा प्रयोग मे आनल गेल किन्तु पाछाँ सर्वसाधारणक लोक अपन दैनिक जीवन मे ओकर प्रयोग करए लागल अछि एवं आब से लोकोक्तिक सत्ता प्राप्त कए लेलक अछि। जेना, गौढ़िक हेम बदन महं झलकए' । (विद्यापति)

'लोभहिँ पतन कहल संसार' (चंदा झा) इत्यादि एही प्रकारक लोकोक्ति थिक।

कोनो कथन कोना लोकोक्तिक स्वरूप धारण कए लैत अछि, तकर हेतु गंभीर अछि। एकर पहिल हेतु ई थिक जे एहि प्रकारक उक्ति मे जाहि प्रकारक आशय निहित रहैत अछि से मनुष्यक वास्तविक जीवनक स्वभाविक तथा गंभीर उच्छ्वास रहैत अछि, अपन जीवन मे लोक प्रेम, घृणा, हास्य, क्रंदन, शोक, क्रोध, भय, उत्साह, आशा तथा निराशा इत्यादि विभिन्न अनुभूति प्राप्त करैत रहैत अछि। साधारण लोक तँ तकरा सभकेँ बिसरि जाइत अछि। किन्तु केओ-केओ चिन्तनशील व्यक्ति ओहि अनुभूति सबहिक मंथन करैत रहैत छथि तथा निष्कर्ष रूप मे जे भाव प्राप्त होइत छन्हि तकरा अपन स्मृति मे सुरक्षित राखि उपयुक्त अवसर पर अपन दृष्टिकोणकेँ प्रमाणित करबाक हेतु ओहि संचित ज्ञान-तत्वकेँ सूत्र रूप मे प्रकाशित करैत छथि। आओर सएह सूत्र-बचन पाछाँ आबि जन साधारण मे विशेष प्रचलित भए गेलापर लोकोक्तिक संज्ञा प्राप्त करैत अछि। जाहि निष्कर्ष कँ अभिव्यक्ति करबाक हेतु

कवि लोकनि नाना प्रकारक कल्पना कएकेँ शब्द जाल भरैत रहैत छथि, सएह निष्कर्ष लोकोक्ति द्वारा सोझ भाषा मे सर्वसाधारणक मुँहेँ अभिव्यक्त होअए लगैत अछि। कविक रचनाक मर्मधरि पहुँचबाक सामर्थ्य कम्मे लोक मे रहैत अछि, किन्तु लोकोक्ति मे ई चमत्कार रहैत अछि, जे गमारसँ गमार व्यक्ति सेहो ओकर तात्पर्य सरल रूपेँ बुझि सकैत अछि।

शास्त्र पुराण वा काव्येतिहास मे वर्णन विस्तृत रहैत अछि, मुख्य गप्प संग आनो-आन बात ओझराएल रहैत अछि, आओर ताहिसँ ओहि मुख्य भावकेँ फरिछाएकेँ बहार करा लेब सर्व-सामान्य लोकक हेतु सर्वांशत: सरल नहि रहैत अछि। किन्तु लोकोक्तिक ई विशेषता थिक जे एहि मे सबटा बात सूत्र रूपहु मे पूर्णत: स्पष्ट कहल गेल रहैत अछि। आइली-बाइली बात नहि कहल गेल रहैत अछि, तथापि काव्यात्मक चमत्कारक अभाव नहि रहैत अछि। साधारणो व्यक्तिकेँ तेँ एकर भाव बुझवामे असौकर्य नहि होइत छैक, जेना लौहाकेँ गलाए देलापर अन्तमे जे सारतत्व अवशिष्ट रहि जाइत अछि ताहिसँ इस्पात बनाओल जाइत अछि। तहिना मानव-जीवनक बहुविध अनुभवक जे सारतम वस्तु रहात अछि तकर सूत्रबद्ध अभिव्यक्ति लोकोक्ति रूपमे श्रुतिगोचर होइत अछि। वयिक्तगत अनुभूतिक अभिव्यतिक रहितो ई सर्वसाधारणक वस्तु भए गेल रहैत अछि। काव्यपुराणक काल एवं व्यक्तिक परिधिसँ आबृत कहल जाए सकैत अछि किन्तु लोकोक्तिक प्रयोग ताहि प्रकारक कोनो सीमासँ घेरल नहि रहैत अछि, जकर परिणामस्वरूप ओकर प्रभाव निस्सीम रहैत अछि। तेँ रामायण वा महाभारत आदि ग्रन्थ सबमे सेहो जे अंश लोकोक्ति रूपमे प्रयुक्त भेल अछि तकर महत्व विशेष प्रकारक अछि। ओहि ग्रन्थ सबमे लोकोक्तिक प्रयोग पर्याप्त मात्रामे भेल अछि। मनुष्य जीवनक सत्य-सत्य अनुभवक मन्थनसँ प्राप्त वस्तुक शाब्दिक अभिव्यंजना रहबाक कारण एहिमे कोनो वैयक्तिकताक बन्धन नहि रहैत अछि। इएह कारण थिक जे लोकोक्तिक शब्द-विन्यास रूढ़ भए गेल रहैत अछि। जेना लोहा वा काँसा इत्यादि द्रव्यक बनल वस्तु माटिक बनल वस्तुक अपेक्षा बहुत सक्कत तथा स्थायी रहैत अछि, तहिना भाषाक अन्य उक्तिक अपेक्षा लोकोक्तिमे दृढ़ता तथा स्थायी गुण बहुत बेसी रहैत अछि। भाषा वैज्ञानिक अध्ययनक दृष्टिसँ सेहो लोकोक्तिक महत्त्व बड़ विशेष अछि। भाषाक जे कोनो तत्त्व अछि तथा ध्वनि, शब्द पद वाक्य रचना तथा अर्थ ताहि

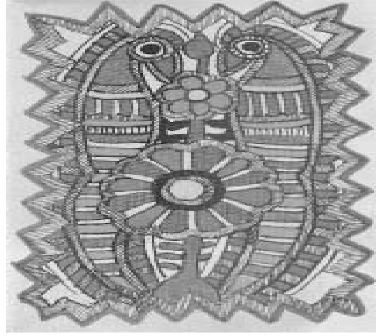


सबमे भाषा वैज्ञानिक लोकनि वाक्य रचना तत्त्वहिकेँ सर्वाधिक महत्त्व प्रदान करैत छथि। कारण भाषाक स्वभावक अध्ययन द्वारा जतेक प्रामाणिक तथ्य प्राप्त होइत अछि ततेक ध्वनि वा शब्द वा अर्थ तत्त्वक अध्ययन द्वारा नहि भए सकैत अछि। कोन भाषाक स्वाभाव कोन प्रकारक अछि, ओकर मौलिक स्वरूप केहन अछि तथा ओ कोन परिवारक थिक इत्यादि बातक निर्णय हेतु ओहि भाषाक वाक्य रचना विधानक अध्ययन जतैक बेसी उपयोगी होइत अछि तेतेक उपयोगी अन्य तत्त्वक अध्ययन नहि भए सकैत अछि। तकर कारण इएह थिक जे भाषा ध्वनि अथवा शब्द इत्यादि मे जतेक बेसी शीघ्रतासँ परिवर्तन होइत रहैत अछि ताहि अपेक्षा वाक्य रचना विधान मे परिवर्तनक गति बड़ बिलम्बित रहैत अछि आओर तेँ ओहि भाषाक मौलिक स्वरूप जतैक दीर्घकाल घरि वाक्य रचना विधान मे स्थिर रहैत अछि ततेक अन्य भाषा तत्त्व सबमे नहि रहैत अछि।

एहि प्रसंग इहो बात स्वयं सिद्ध अछि जे भाषा मे जतेक प्रकारक वाक्य प्रयोग होइत अछि ताहि मे लोकोक्ति सर्वाधिक स्वायी वाक्य प्रयोग थिक। लोकोक्तिक वाक्य संयोजन रूढ़ रूप मे रहबाक कारण अपरिवर्त्तनीय रहैछ। एक तँ भाषा विभिन्न तत्त्व मध्य वाक्य तत्त्व सर्वाधिक स्थिर रहनिहार थिक आओर ताहू मे लोकोक्ति विशेष रूढ़ रहबाक कारण अपन भाषाक मौलिक स्वभावक सुरक्षा जतेक-अविकल रूप मे करैत अछि ततेक अन्य कोनो भाषा-प्रयोग द्वारा संभव नहि अछि। भाषाक स्वरूप लोकोक्ति द्वारा जतेक विलक्षण रूप सँ सुरक्षित रहैत अछि ततेक आन प्रकार सँ नहि संभव अछि। भाषाक आन-आन वाक्यक स्वरूप लोकोक्ति जकाँ एकरूप नहि रहैत अछि ओ परिवर्त्तनशील रहैत अछि, मुदा लोकोक्ति विभिन्न व्यक्ति द्वारा वा विभिन्न परिस्थिति मे प्रयुक्त होइतहुँ एकरूप रहैत अछि। अनेक शब्द वा शब्द खंड जँ आब प्रचिलित भए गेल अछि से लोकोक्ति सब मे एखनहुँ सुरक्षित अछि। जेना- 'बरे बुड़िबक त जैतुक के लेत।' एहि लोकोक्ति मे प्रयुक्त 'जैतुक' शब्द वर्तमान मैथिली मे सामान्यत: प्रचलित नहि अछि। मुदा उपर्युक्त लोकोक्ति मे 'जैतुक' शब्द एखनहुँ सुरक्षित अछि आओर ताहि आधार पर ई प्रमाणित होइत अछि जे मैथिली भाषा मे पूर्व मे 'जैतुक' शब्द प्रयोग होइत छल। तहिना एकटा लोकोक्ति अछि- 'जतए गाछ ने विरिछ ततए अड़ेर महापुरुष।' एहि मे अड़ेर शब्द वर्तमान समय मे मैथिली भाषा मे प्रचलित नहि अछि, एहि स्थान मे 'अण्डी' शब्दक प्रचार अछि, तथा संस्कृत मे एकरा 'एरण्ड' कहल जाइत अछि। एरण्ड शब्द विकसित भएकेँ 'अड़ेर' बनल छल आओर तखन अण्डी भए गेल अछि। 'एरण्ड' तथा अण्डी शब्द मध्यवर्ती शब्द 'अड़ेर' छल से केवल एहि उपर्युक्त कहबी सँ प्रमाणित होइत अछि। एहि प्रकारक ज्ञान द्वारा शब्दक विकास पद्धति निर्धारण करब सुलभ होइत अछि । एही प्रकारेँ विविध प्रत्यय, उपसर्ग, प्राचीन लोकोक्ति अन्य भाषा-वस्तुक अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण अछि।

लोकोक्ति द्वारा लोकक सांस्कृतिक तथा सामजशास्त्रीय अध्ययन मे सेहो बड़ सहायता भेटैत अछि। जाहि समाज वा भाषा-भाषी क्षेत्र मे जे लोकोक्ति सभ प्रचलित रहैत अछि से ताहि समाज वा भाषा-भाषी क्षेत्रक समष्टिगत प्रवृत्ति ओ रीति-नीतिक अभिव्यंजन रहैत अछि आओर तैँ ओहि लोकोक्ति सबहि द्वारा ताहि क्षेत्रक स्वभाव ओ प्रवृत्तिक परिचय बड़ विलक्षण रूप सँ भेटैत अछि। उदाहरण रूप मे ई बात देखबा मे अबैत अछि जे मैथिली भाषा मे मत्स्य भक्षण सँ संबंधित बहुतो रास लोकोक्ति प्रचलित अछि; जेना- 'पानि मे माछ नओ-नओ कुटिया बखरा।' 'टेंगरा पोठी चालि दिअए, रोहुक सीर बिसाए', 'सडलो भुन्ना, रोहुक दुन्ना' इत्यादि ताहि ई संकेतिक भए रहल अछि जे मिथिला मे मत्स्य-भक्षण वा मत्स्य व्यापार बहुत प्राचीनेकालसँ प्रचलित अछि। एहि ठामक सवर्ण हिन्दू लोकनि सेहो माछ खाएब वर्जित नहि मानैत छथि। संगहि इहो ध्वनित होइत अछि जे नदी तथा जलाशयक कारण एहिठाम मत्स्य व्यापार प्राचीन काले सँ चलैत रहल अछि। यदि से नहि रहैत तँ माछक स्वभाव वा स्वाद संबंधी अनुभव पर आधारित कहुबी सबहिक एतेक प्रचुरता नहि रहैत। भारत वर्ष जाहि क्षेत्र मे मत्स्य-मांस भक्षण सवर्ण हिन्दू लोकनि मे प्रचलित नहि अछि; यथा राजस्थान वा मध्य प्रदेश इत्यादि क्षेत्र मे माछ-मासु संबंधी लोकोक्तिक अभाव जकाँ अछि। तहिना 'गाछ मे कटहर ठोर मे तेल' एहि लोकोक्तिक प्रचार ओहि क्षेत्र मे कदापि नहि भए सकैत अछि, जाहि क्षेत्र मे कटहर दुर्लभ अछि।

काव्य रचना मे लोकोक्ति महत्त्व एहु बात लएकैं अछि जे एकर प्रयोग द्वारा कवि लोकनिक काव्य परखबाक परीक्षण होइत अछि। दोसर शब्द मे ई कहि सकैत छी जे लोकोक्ति प्रयोग कवि लोकनिक हेतु एकटा कसौटी थीक। ओना ई बात परंपरागत रूप सँ प्रसिद्ध अछि जे कवि लोकनि निरंकुश रहैत छथि। छंद पूर्तिक शब्दक तोड़-मड़ोर कए सकैत छथि। ह्रस्व कैं दीर्घ कए सकैत छथि, किन्तु लोकोक्ति प्रयोग करबाकाल हुनके लोकनिकैं ओहि लोकोक्तिक मौलिक स्वरूप यथावत राखए पड़ैत छन्हि। लोकोक्तिक ह्रस्ववर्णकैं दीर्घ अथवा दीर्घवर्ण के ह्रस्व बनाएकैं छन्द वा लयक अनुरोध पालन भने कए लेथु, किन्तु ओकर शब्द योजना वा वाक्य, रचना विधान मे कोनो तेहन परिवर्तन ओहो लोकनि नहि कऽ सकैत छथि। तैँ ई बात निर्विवाद रूप सँ कहल जा सकैत अछि जे कविता मे लोकोक्ति प्रयोग करबा मे बेसी दक्षताक आवश्यकता रहैत अछि। जेना गील माटिकैं थोपि-थोपि भित्ति ठाढ़ कए लेब सरल अछि, अथवा चौरस ओ छोट-छोट



आकारक ईंटा जोड़ि-जोड़िकैं दिबाल बनाए लेब सुलभ अछि तेना, पैघ-पैघ किन्तु टेढ़-टूढ़ तथा विषम आकारक पाथरक टुकड़ा सबके जोड़ि-जोड़ि समतल दिबाल गछि लेब सुलभ नहि अछि। इएह कारण थिक जे सानल माटि अथवा ईटा द्वारा निर्मित भित्तिक अपेक्षा विषम आकारक पाथरक टुकड़ा द्वारा निर्मित दिबालक निर्माण कएनिहार राजमिस्त्री विशेष सम्मान प्राप्त करैत अछि। ठीक एही प्रकारैँ जाहि कविता मे केवल वर्ण वा शब्दक संयोजन द्वारा अर्थविधान कएल गेल रहैत अछि ताहि अपेक्षा ओहि प्रकारक कविता विशेष प्रशंसनीय मानल जाइत अछि जाहि मे रूढ़ वाक्य अथवा वाक्यांशक संयोजन रूप मे भेल रहैत अछि जे ओहो कवि वचने जकाँ आभासित होइत रहैत अछि; यथा कविताक चारि चरण मे एक चरण कोनो लोकोक्ति रहए आओर अन्य तीन चरण कवि-कल्पित वचन रहए तथा एहि प्रकारक संयोजन एतेक दक्षतापूर्वक कएल गेल रहए जे लोकोक्ति वर्ण सबहिक वा मात्रा सबहिक संख्या एवं आरोह अवरोह ध्वनि कविताक अन्य चरण सबहिक वर्ण वा मात्राक संख्या एवं आरोह-अवरोह ध्वनिक संगति सुचारू रूप सँ रखैत रहए तँ एहन रचना कएनिहार कवि अवश्वमेव विशेष पटु मान्य होइत छथि। संस्कृति साहित्यमे बाल्मीकि, कालिदास, भारवि, माघ प्रभृत कविक जे एतेक बेसी ख्याति अछि तकर एकटा कारण इहो थिक जे हिनका लोकनिक काव्य मे लोकोक्ति (जकरा परिमार्जित शब्द मे सुभाषित सेहो कहल जाइत अछि) पर्याप्त मात्रा मे प्रयुक्त भेल अछि। हिंदी साहित्य मे तुलसीदास तथा कबीरदासक रचना मे लोकोक्तिक पर्याप्त प्रयोग भेटैत अछि, तहिना मैथिली साहित्य मे विद्यापति तथा चंदा झाक काव्य मे एकर प्रयोग बड्ड चमत्कारपूर्ण भेल अछि, कविवर सीताराम झा, काशीकांत मिश्र मधुप, चंद्रनाथ मिश्र 'अमर' तथा रवींद्रनाथ ठाकुरक काव्य जे एतेक बेसी लोकप्रिय अछि तकर एकर हेतु हिनका लोकनिक लोकोक्ति प्रयोगक चाटुता सेहो थिक।

एवंप्रकारे देखबा मे अबैत अछि जे काव्य रचना मे लोकोक्ति प्रयोग अनेकों दृष्टि सँ महत्वपूर्ण अछि, रचना शिल्प भाव सँ प्रेषण तथा भाव संवाहन इत्यादि । जाहि दृष्टि सँ देखल जाए ताहि दृष्टि सँ एकर महत्व मान्य अछि।

तकर सबहिक अतिरिक्त भाषा शास्त्रक दृष्टि सँ सेहो ई तहिना महत्वपूर्ण अछि। तैँ कविक काव्य चातुरीक विश्लेषण करबा लेल ई आवश्यक भए जाइत अछि जे हिनका रचना मे प्रयुक्त लोकोक्ति सबहिक विन्यास पर सेहो दृष्टि राखल जाए। कोनो कवि लोक जीवन सँ केतक सन्निकट छथि ताहि बातक निर्णय करबाक हेतु हनिका लोकनिक रचना मे प्रयुक्त लोकोक्तिक निरीक्षण बड़ सहायक तत्त्व थिक। तहिना जाहि कविक जन्म स्थान वा समय संदिग्ध रहैत अछि तनिका प्रसंग तकर सबहिक अनुसंधान कएनिहार लोकनिकैं लोकोक्तिक निरीक्षण ओ विश्लेषणसँ बहुत प्रमाणिक अंत:साक्ष्य प्राप्त भए सकैत छैन्हि। एतावता काव्य रचना मे लोकोक्तिक महत्त्व निस्सन्दिग्ध रूप सँ मान्य थिक।

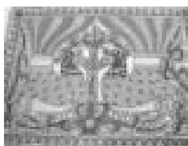
(वैदेही सं साभार)



समन्वय

मिथिला ओ असमक सांस्कृतिक सम्पर्क

डॉ. भूपेंद्र कुमार चौधरी



मध्यकाल मे मिथिला जेना असमकेँ बहुत किछु देलकैक तहिना ओकरासँ बहुत किछु ग्रहण सेहो कएलक जे स्वाभाविक प्रक्रिया छल। असम ओ मिथिला बहुत आरम्भहिसँ पड़ोसी जनपद रहल अछि। पौराणिक काल मे मिथिलाक एक राजपुत्र 'नरक' असम पर अपन शासन स्थापित कयल। ऐतिहासिक काल मे मिथिलाक ब्राह्मण ओ कायस्थ लोकनि असम मे आदरपूर्वक बसाओल जाइत रहलाह। मिथिलाक शाक्त प्रवृत्ति ओ तांत्रिक विश्वास तथा असमक विश्वविश्रुत शक्तिपीठ 'कामाख्या' तथा ओहिठामक तन्त्राचार पटुताक कारणेँ दु जनपदमे निकटता बनल रहलैक। एहि सभक माध्यमसँ भाषा ओ साहित्यक सेहो खूब-आदान-प्रदान होइत रहल।

मिथिला ओ असमक बीच कोशी नदी सीमा रेखाक काज करैत अछि। जहिना मिथिलाक पूर्वी सीमा पर कोशी अछि तहिना असमक पश्चिमी सीमा पर कोशी अवस्थित अछि।

कामरूपक राजा 'नरक' आर्य-संस्कृतिसँ पूर्णतया प्रभावित छलाह एवं अपन राज्यक

विस्तार कामरूपसँ 'विदेह 'धरि कएलन्हि।' नरकक राज्यक सीमाकेँ एन.एन. आचार्य्या रेखाङ्कित करैत कहैत छथि जे उत्तर मे हिमालय, दक्षिण के बंगालक खाड़ी, पश्चिम मे मिथिलाक राजधानी छलैक आओर मध्यमे कामरूप मे रहि ओ अपन शासन करैत छलाह।

एकर पश्चात मिथिलाक संग असमक सांस्कृतिक सम्पर्क ऐहितासिक सूत्र छठम-सातम शताब्दीसँ पूर्णरूपेँ भेटए लगैत अछि। एहि शताब्दीक पहिल चरणमे महाभूमि बर्म्मनक दान-पत्र सँ बुझल होइत अछि जे 'चन्द्रपुरी' विषय जे एखन पूर्णियाँ जिला मे अछि, 'निधनपुर' सूचीक आधार पर जे भूमि हुनका द्वारा दान देल गेल छलैक से ओहि समय मे कोशी नदीक पुरान धाराक कातमे पड़ैत छलैक। दोसर प्रमाण जे एही समय मे त्रिपुराक राजा 'आदिधर्मा'क महल पर कोनो अशुभ पक्षी बैसि गेल, एहि अशुभक शान्त्यर्थ 'ज्योतिष्टोम यज्ञ' करबाक निश्चय कएलन्हि। किन्तु ओहि समय मे गौड़-देश मे वैदिक ब्राह्मणक अभाव छल। एहने समय मे कोनो सूत्रसँ हुनका ज्ञात भेलन्हि जे जनकक भूमि मिथिलामे एखनो वैदिक ब्राह्मणक कोनो अभाव नहि छैक। ई जानि ओ तत्कालीन मिथिलेशक ओहिठाक पांच गोट कर्मकाण्डी वैदिक ब्राह्मणक याचना कएलन्हि।

ओहि समय वलभद्र नामक मिथिलेश आदिधर्मा नामक त्रिपुरा नरेशक याचया पर श्रीनन्द, आसन्द, गोविंद, श्रीपति एवं पुरुषोत्तमकेँ ओतए पठओलन्हि। हिनक लोकनिक आगमनसँ ओहिठाक अत्यन्त प्रसन्नताक वातावरण भए गेलैक। ई लोकनि विधिवत यज्ञ सम्पादन कएलन्हि। ओहिठाम ओ यज्ञकुण्ड एखनो धरि श्रीहट्ट'क मङ्गलपुर गाम मे निर्दिष्ट कएल जाइत अछि।

यज्ञ समाप्त भेलाक पश्चात जखन ओ लोकनि विदा होअए लगलाह तँ त्रिपुराधीश हुनका लोकनिकेँ ओतहि रहि जएबाक आग्रह कएल। ओ लोकनि अपन स्वीकृति दऽ देलथिन्ह। एहि हेतु त्रिपुराधीश हुनका लोकनिकेँ पर्याप्त ब्रह्मोत्तर देल जे पंचखण्ड कहओलक आ जकर अस्तित्व एखनो धरि अछि। ई क्षेत्र सम्प्रति सिलहट जिला मे स्थित अछि।

दोसर भूमिदान बारहम शताब्दीक मे 'निधिपति' केँ 'मनुकुल' प्रदेश मे प्राप्त भेलन्हि जे सम्प्रति आधुनिक ईटा क्षेत्र मे अछि। सिलहटक पूर्वीय भाग हिन्दू समाज एखनहुँ धरि वाचस्पति मिश्रक 'मैथिल स्मृति' सँ अनुशासति अछि।

म.म. उमेश मिश्र रघुनाथ शिरोमणिक विषयमे लिखने छथि- जे ओ अत्यन्त निर्धन मैथिल ब्राह्मण वंश मे जन्म लेने छलाह। पिताक मृत्युक उपरांत हुनक माय हुनका नदिया लए गेलीह। ओतए वासुदेव सार्वभौम एक टोलक स्थापना कए एक प्रख्यात नैयायिक रूपमे प्रसिद्ध छलाह। ओतहि रघुनाथ शिक्षा ग्रहण करय लगलाह। ओहि समय मे मिथिलाक प्रसिद्ध नैयायिक पक्षधर मिश्रक ख्याति रघुनाथो धरि पहुँचल। तदर्थ ओ मिथिलाक यात्रा कएलन्हि आ पक्षधर मिश्रसँ ज्ञान प्राप्त कएलन्हि। वासुदेव सार्वभौम सेहो पक्षधर मिश्रक शिष्य छलाह। पंद्रहम शताब्दी मे रघुनाथ शिरोमणि पक्षधर मिश्रक आज्ञा सँ नदिआमे नय न्यायक पाठशालाक स्थापना कएलन्हि।

एखनहुँ असममे पुरान ब्रह्मणक परिवार सभ अछि जनिका लोकनिक उपाधि मिश्र, शुक्ल, तिरहुतिया थिकन्हि। एहिठामक किछु नागर ब्रह्मण लोकनि कालक्रमेँ कायस्थ भए जाइत गेलाह।

असमक सामाजिक इतिहास मे मैथिल कायस्थ लोकनिक महत्त्वपूर्ण योगदान अछि। नवीन अनुसंधानसँ ई तथ्य प्रकट भेल अछि जे बलाइनि मूलक बीजी पुरुष लक्ष्मीकर ठाकुर प्रसिद्ध आर्य श्रीधर ठाकुरक पूर्वज पालवंशीय राजा धर्मपालक आश्रय ग्रहण कयने छलाह। ओ कालक्रमे 'कोचबिहार' मे स्वतंत्र रूपेँ राज्य करए लगलाह। कामरूपक तत्कालीन राजा हिनका 'सामन्त राजा'क उपाधि देने रहथिन्ह। कोचबिहारक एहि राजक प्रसंग कारण कायस्थ लोकनि पंजीग्रंथ मे उल्लेख अछि।



मिथिलामे कर्णाट वंशक शासनसँ पूर्व एहिठामक कायस्थ लोकनि 'करण' कहाबथि एवं कर्नाट देशसँ जे कायस्थ लोकनि एतए अएलाह अथवा आन-आन प्रांत गेलाह से सभ अपना केँ 'करण' कहथि।

ई तँ सभ जनैत अछि जे मिथिला अत्यन्त प्राचीनकालसँ आर्य सभ्यताक केंद्र थिक ओ पूर्वकाल मे प्राग्ज्योतिषपुर अथवा कामरूप वा ओहूसँ आगाँ धरि तकर प्रभाव पहुँचि गेल छल। मध्यकाल मे जेना-तेना मैथिल लोकनिक प्रवाह असम मे बनल रहबे कएलैक। एखनहुँ असमक गौरीपुर राज्यक प्रभाव ओहि प्रांत पर पूर्ण रूप सँ छैक।

मिथिलाक इतिहाससँ ज्ञात होइत अछि जे कर्णाटवंशी संस्थापक नान्यदेव मिथिला मे अपन राज्यक स्थापना कयल। ओहि समय हुनक मंत्री श्रीधर छलथिन्ह। एही श्रीधर ठाकुरक स्थापित कएल आइ-काल्हुक अन्हराठाढ़ी मठ अछि।

एही श्रीधरकवंशज लोकनि कर्णाट राजा नान्यदेवक वंशज लोकनि परंपरागत मंत्री रहैत आयल छथिन्ह। एही वंशक अंतिम राजा भेलाह हरिसिंहदेव जनिक मंत्री छलथिन्ह श्रीधरक वंशक सूर्यकर ठाकुर। कर्णाट शासनक समाप्ति बाद मिथिला पर ओइनवार वंशक शासन। शासन आरम्भ भेल आ एही कुलक राजा शिवसिंहक मंत्री छलथिन्ह सूर्यकर पौत्र अमृतकर।

अमृतकरक एक पौत्र 'नरहरि' परमशाक्त छलाह ओ कामाख्याक उपासना मे अधिककालक असम जाइत छलाह। ओही समय मे असमक कूचबिहारक राजा विश्वसिंह अपना ओहिठाम यज्ञक निमित्त कतेको पंडित लोकनिकेँ मिथिलासँ बजओने छलाह जाहिमे एक पंडित जनिक नाम सार्वभौम महाशय छल, हुनका विश्वसिंह अपने कुल-पुरोहित बनओलन्हि।

ई कूचबिहार राज्य अवक्रमित होइत एखन गौरी नामक राज्यक रूप में जानल जाइत अछि। एखनहुँ धरि एहि राज्य परिवारक कुल पुरोहित मिथिलाक सनकोर्थ गामक यदुनन्दन झाक परिवारक सदस्य लोकनि छथिन्ह।

यथार्थत: गौरी राज्यक स्थापनाक सोहलम शताब्दीक मध्यकाल धरि मिथिला ओ असमक आवागमन ततेक बढ़ि गेलै जे ओहिठामक भेष-वूषा, भाषा, लिपि पर मिथिलाक तेहन उत्कट प्रभाव पड़ल जे एखनहुँ धरि ओकर अवशेष कोनो ने कोनो रूपमे पाओल जाइत अछि; जेना मिथिला मध्यकाल मे असम कैँ बहुत किछु देलकैक तहिना ओकरा सँ किछु अंश जे ग्रहण कएलक से स्वाभाविके प्रक्रिया छलैक। जेना मिथिलामे जे शक्ति पूजाक एतेक प्रधानता देखबामे अबैत अछि एवं तन्त्र मार्ग मे जे 'चीनाचार' पद्धति एतेक विख्यात अछि से असमहिसँ अथवा असमक माध्यम सँ मिथिला मे आएल। नैना-जोगिनक इतिहासक संबंध मे कहल जा सकैत अछि जे नवम-दसम शताब्दीक मे जँ एकदिस तांत्रिक साधना मे स्त्रीक प्रधानताकेँ दोहाइ देल गेल छैक तँ



दोसर दिस 'औपनिषदिक' विचारधाराक पुन: प्रचार-प्रसार भेला सँ स्त्रीकेँ भ्रांतिमूलक एवं मुक्ति मार्गक बाधक कहिकेँ उपहास कएल गेलैक अछि। एकरे फलस्वरूप 'वशीकरण'क आवश्यकता प्रतीत भेलैक जकर प्रतिफल 'नैना-जोगिन'क विधि थिक।

मिथिला मे वैवाहिक सभ रीतिकेँ पूर्णत: तंत्र सँ संबंध छैक। संगहि नैना जोगिनक विधानक संबंध योग सँ छैक। नैना जोगिनकेँ 'त्राटक' सँ संबंध छैक। एहि प्रक्रियाक संपादन जोगिन द्वारा होइत छैक जकरा चक्रपूजासँ सम्बन्ध छैक। यथार्थत: तंत्रक उद्‌भव स्थल बंगाल थिक। ओतहिसँ ई शास्त्र असम, नेपाल, तिब्बत आओर चीन देश मे पसरल छल।

गौड़े प्रकाशिता विद्या मैथिले प्रबलीकृता।
क्वचित क्वचिन्महाराष्ट्रे गुजेरे प्रलयग तऽ।

उपरोक्त श्लोकसँ स्पष्ट अछि से तंत्रक प्रबीलकए मिथिला मे भेल। फलत: मिथिलाक तंत्र मंत्र सं कामरूप-कामाख्या एवं नैना-जोगिनक नामक दोहाई देबाक परंपरा स्थापित भए गेल छल।

असम आओर मिथिलाक संस्कृति, इतिहास एवं भाषा मे सेहो बड़ सामंजस्य छैक। एहि प्रसंग मिथिलाक विद्वान लोकनि द्वारा लिखल पोथीक आधार पर मंत्र एवं तंत्र, ग्रह शान्तिक संग-संग नृत्य आदि संचालन होइत छलैक। एहि प्रसंग मे शुभङ्कर कविक लिखल 'हस्तमुक्तावली'क वर्णनकेँ नहि छोड़ल जाए सकैत अछि जकर एक प्रति हरप्रसाद 'शास्त्री' केँ नेपाल मे भेटलन्हि आओर दोसर प्रति मिथिला मे छलैक जकरा देखला उत्तर कामरूप ओ मिथिलाक प्रगाढ़ सांस्कृतिक संबंधक वर्णन प्राचीनकाल सँ चलैत आबि रहल छैक एहन चर्चा आयल छैक। एहि प्रसंगक अभ्यन्तर एकटा आओर चर्चा आवश्यक जे कुचबिहारक राजा विश्वसिंह मिथिलाक प्रसिद्ध पंडित घुसौटे नगार मूलक मैथिल ब्राह्म देवनाथ ठाकुरकेँ अपना ओहिठाम रखने छलाह। ई देवनाथ ठाकुर विश्वसिंहक विशेष चर्चा अपन 'तन्त्रकौमुदी' नामक ग्रंथ मे कयने छलाह। एहि ग्रंथक संपादन स्व. रमानाथ झा द्वारा कएल गेल प्रकाशित अछि।

– वैदेही सं साभार



संस्मरण

सम्मेलनसँ प्रशिक्षण धरि

डा. कमलकान्त झा



बीसम अन्तर राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन कानपुर 20-21 दिसंबर 2009 कऽ भाग लेबाक छल। एक मास पूर्वहि स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस ट्रेन मे चारू गोटेक आरक्षण करा लेने रही। चारू गोटे वरिष्ठ नागरिक। हम आ परिषदक केन्द्रीय कोषाध्यक्ष श्री कपिलदेव, कुँवर दुनू सपत्नीक रही। आरक्षण एक दिन पूर्वहिक अर्थात 18 दिसंबरक लऽ लेने रही– कोन ठेकान ट्रेन जँ अधिक विलम्ब भऽ गेल तँ सब गूड़ गोबर भऽ आयत।

मुदा आशंका निराधार छल। जयनगर सँ दानापुर इण्टर सिटी पकड़ि चारूगोटे दरभंगा एक बजे दुप्पहर मे पहुँचक रही। स्वतंत्रता सेनानी छल दरभंगा सँ 3.30 मे। कपिलदेवजीक बेटी अपन मायसँ भेट करऽ आबि गेलि छलनि तँ तीनू जनीक समय गप्प सप्पमे निकलि गेलनि। ओहि दिन समयपर ट्रेन खुजल आ ठीक समयपर दोसर दिन भोरे छौ बजेमे कानपुर पहुँचि गेल। ओही गाड़ीमे दोसर डिब्बामे मिथिला राज्य संघर्ष

समितिक अध्यक्ष श्रीचुनचुन मिश्र तथा महासचिव श्रीउदयशंकर मिश्र सेहो रहथि। सम्मेलनक संयोजक श्रीप्रेमकान्त झा कैँ पूर्वहि फोन कऽ देने रहियनि तैँ ओ अपन कोशाध्यक्ष श्रीलक्ष्मण चौधरीक संग एकटा गाड़ी लऽ कऽ ओतेक भोरहुमे स्टेशन पर पहुँचि गेल रहथि। मुम्बइसँ श्रीचक्रधर झा सेहो आबि चुकल रहथि। सब केओ दूटा गाड़ीमे अँटि गेलहुँ आ सामान सहित सम्मेलन स्थल प्रसिद्ध आवासीय उच्च विद्यालय एन.एस. डी. शिक्षा निकेतन' मे भोरे भोरे पहुँचि गेलहुँ। विद्यालय विशाल अछि। ओकर चारूभाग पैघ-पैघ अट्टालिका, क्रीड़ा मैदान, विशाल प्रार्थना भवन आ बाहरक सभामंचक सुन्दरता देखि लागल विद्याभारतीक सम्पूर्ण देशक गनल चुनल विद्यालयमेसँ एक विद्यालय ईहो अछि। बादमे पता लागल कानपुर स्थित ई विद्यालय ने केवल विशालताक लेल प्रसिद्ध अछि, अपितु उत्तरप्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्डक मेधा सूचीमे लगातार बीसमे पन्द्रह संख्या तक एकरे छात्र रहैत छैक। बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंहक प्रतिमा फुलबाड़ीमे लागल देखि हुनक विशाल व्यक्तित्व ध्यानमे आबि गेल। पता लागल हुनकर बहुत पैघ योगदान छलनि एहि विद्यालयक निर्माण ओ विकासमे। फुलबाड़ीमे फलसँ लदायल रंग विरंगक नेबो गाछ एवं आनो फलक गाछसबकैँ देखि स्वर्गिक आनन्द प्राप्त भऽ रहल छल।

हमरालोकनि सम्मेलनसँ एक दिन पूर्वहि शनि दिन 19 दिसंबर कऽ पहुँचि गेल रही, तैँ विद्यालयक एकटा कार्यालय कक्षमे प्रवेश करा देल गेल। कागज पत्र फाइल आदि एक कातमे लगा सम्पूर्ण हॉल हमरालोकनिक आवास लेल उपलब्ध भऽ गेल। शौचालय, स्नानागार आदि भवनसँ सम्बद्ध भीतरहिमे छल। मोटगर गद्दा जाजिम आ मसनद लगा देल गेलैक आ जिनका जेना जेमहर मोन भेलनि स्नान ग्रहण कऽ लेलनि। साँझधरि अधिकांश प्रतिनिधि आबि गेल रहथि। सभक भोजन, जलपान, चाह आदिक व्यवस्था छात्रावासक भोजनालयमे छल आ से बहुत नीक छल, साफ सुथरा, पवित्र आ अनुशासित ढंगसँ सब कार्य समय पर सम्पन्न भऽ रहल छल। ओहि दिन हमरालोकनिक हाथमे भरि दिन समय छल। जनिका जेमहर मोन भेलनि टहलि गेलाह। एक गाड़ीसँ हम सपत्नीक, कपिल देवजी आ उदयशंकर जी चारूगोटे कानपुरक दर्शनीय स्थल देखबालेल भोजनोपरान्त निकलि गेल रही। गाड़ी स्थानीय समितिक अध्यक्ष श्री ठाकुरजीक छलनि आ गाइड सेहो हुनके ड्राइवर छल। सर्वप्रथम यमुना घाट (पुल)पर पहुँचलहुँ। हिलसगर लताम बिका रहल छल-चालक सँ मंगबाकऽ खाइत गेलहुँ। यमुनाजीक जल नीक नहि छलनि, लल्होन लगैत छलनि, कल कारखानाक नालीक प्रदूषित जल सँ रंगीन भेल।

यमुना घाटसँ निकलि नगरक बाहर सुदूर देहातमे महान सन्त श्रीसुधांशुजी महाराजक आश्रम देखबाक हेतु गेलहुँ। सुरक्षा व्यवस्था कड़गर छल, किन्तु नि:शुल्क प्रवेश छल। केवल बाहर गाड़ीक पार्किंग लेल यूनियनबला बीस टाका लऽ लेलक। एक दू ठाम नगर पंचायतबलासब सेहो बीस तीस टाका कऽ गाड़ीक टैक्स लऽ लेलक। महाराजजीक आश्रम परिसर विशाल अनेक भवन एवं फुलबाड़ीसँ सुसज्जित दर्शनीय अछि। रंग विरंगक फल फूलसँ सुसज्जित फुलबाड़ी देखलहुँ, जाहिमे एक भागमे धात्रीक अनेक गाछ फलसँ लदायल छल-वेश आकर्षक लगैत छल। एकटा पहाड़ बनाकऽ दर्शनीय गुफा बना देल गेल अछि। एक भाग मुख्य फाटकक सामने दहिनाभाग विशाल मंचयुक्त प्रवचन भवन देखलहुँ।

ओहिठामसँ निकलि नानासाहेब पेशबा किला गेलहुँ। किला तँ आब खण्डहर भऽ चुकल अछि, मुदा एमहर किछु खर्च कऽ कऽ परिसरकैँ सजयबाक चेष्टा कयल गेल अछि। कनेक चाकर नाला बना ओहिमे मोटरसँ पानि भरि जलबिहार हेतु नावक व्यवस्था कऽ देल गेल अछि, जकर शुल्क पृथके नीक सन लगैत छैक। पहिने तँ मुख्य द्वारहि पर प्रवेश शुल्क जमा करऽ पड़ैत छैक, ताहिपर गाड़ीक पार्किंग शुल्क अलग। मिला



जुला कऽ लागल पैसा ओसूल करबाक नीक जोगाड़ कऽ लेल गेल अछि।

ओहिठामसँ निकलि ब्रह्मावर्त तीर्थ बिठूर पहुँचलहुँ, यमुना नदीक बिठूर घाट वा ब्रह्मावर्त घाट कहबैत अछि। केओ-केओ एकरा गंगाघाट सेहो कहैत छथि। शास्त्र पुराण मे एहि घाटक वेश महत्त्व प्रतिपादित कयल गेल अछि। महाकवि विद्यापति सेहो एहिठाम पन्द्रहम शताब्दीक प्रारम्भहिमे आयल छलाह, जकर उल्लेख भूपरिक्रमामे भेटैत अछि। देबालपर नगर पंचायत द्वारा लिखा देल गेल अछि – 'नि:शुल्क पार्किंग की सुविधा' 'दलालों से सावधान' मुदा वापसीमे

हमरालोकनिकैं कार निकालैत काल पचास टाका लैए लेलक। देबाल लेखन दिस ध्यान दिऔलियैक तँ कहलक - ''अरे लिख देने से क्या होता है - यहाँ का यही नियम है।'' भरिसक ओ दादागिरी शुल्क लेने छल।

हमर पत्नी शैलदेवी थाकि गेलि रहथि। प्राय: ठेहुनक दर्द बढ़ि गेल छलनि, तेँ ओ घाटपर नीचाँ नहि उतरलि रहथि, हमहीं यमुनाजल आनिकऽ सिक्त कऽ देलियनि। आब ओ वापसीमे कतोक दर्शनीय स्थल ओहिना गाड़ियेसँ देखैत जा रहलि छलीहि। हुनका पाँचो डेग पैदल चलबाक साहस नहि रहि गेल छलनि। सूर्यास्त समकाल धरि आपस शिक्षानिकेतन पहुँचि गेल रही। ताधरि किछु आर महिला प्रतिनधि लोकनि आबि गेलि रहथि, तेँ हुनका लोकनिक आवास ऊपर एकटा पृथके कमरा दऽ देल गेलनि-शैल कुमारीजी सेहो ओहीमे चलि गेलीहि। हमरा आ डा. गुरुमैताजीकैं पृथक-पृथक कोठली भेटल छल।

सायं आठ बजेसँ काल्हुक उद्घाटन सत्रक तैयारी केर दृष्टिसँ सम्मेलनक संयोजक श्री प्रेमकान्तजी, कानपुर शाखाक अन्तर राष्ट्रीय मैथिली परिषदक अध्यक्ष श्री पी.सी. ठाकुरजी, सचिव श्रीकमलकान्त मिश्र, कोषाध्यक्ष श्रीलक्ष्मण चौधरी एवं किछु अन्य कार्यकर्ता लोकनिक संग हमरो बैसऽ पड़ल। चिनियाँबदाम कैं फँाड़ैत 9.30 बजे राति धरि विचार विमर्श चलैत रहल। फेर सभक संग भोजनालय जा सबकेओ भोजन करैत गेलहुँ। कानपुरक बन्धुलोकनि अपन-अपन डेरादिस गेलाह आ हमरालोकनि अपन आवास दिस। राति भरि दूर-दूरसँ प्रतिनिधिलोकनिक आगमन जारी रहल।

रवि दिन 20 दिसंबर कऽ 10.30 बजे पूर्वाह्नमे शिक्षानिकेतनक क्रीड़ा मैदानक विशाल मंचसँ उद्घाटन सत्र प्रारम्भ भेल। सर्वप्रथम अध्यक्ष एवं विशिष्ट अतिथि लोकनिक मंचपर आसन ग्रहणक पश्चात् अन्तर राष्ट्रीय मैथिली परिषदक संरक्षक डा. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता द्वारा विद्यालय परिसर स्थित बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंहक स्थापित प्रतिमापर माल्यार्पण कार्यक्रम सम्पन्न कयल गेल। तकर बाद मंचपर दीप जराकऽ सम्मेलनक उद्घाटन कानपुरक महापौर श्रीरवीन्द्र पाटनी कयलनि। अध्यक्षता डा. कमलकान्त झा कऽ रहल छलाह। श्रीमति रागिनी झा द्वारा गोसाउनिक गीत 'जय जय भैरवी' प्रस्तुत कयल गेल। अपन उद्घाटनभाषणमे श्रीपाटनी (भाजपा) कहलनि जे मिथिलाक भाषा ओ संस्कृति के देशमे विशिष्ट महत्त्व अछि। अहाँलोकनिक समृद्ध साहित्यिक ओ सांस्कृतिक परम्परा अछि। आइ मिथिला चित्रकलाक स्थान विश्व प्रसिद्ध भऽ गेल अछि। ओतेक विशिष्टता रहलाक बादो आइ आर्थिक पिछड़ापन अछि। ओहन स्थिति मे अहाँलोकनिक राज्यक मांग जायज अछि। हम अहाँक मांगक समर्थन करैत छी। मुख्य अतिथि केन्द्रीय कोयलामंत्री श्री प्रकाश जायसवाल किछु विलम्ब सँ अयलाह तथापि हुनक स्वागत सत्कारमे कमी नहि कयल गेलनि। दूनू अतिथिक संगहि डा. गुरुमैता, अध्यक्ष डा. झा, महासचिव रामरिझन यादव, प्रवक्ता डा. धनाकर ठाकुर, प्रसिद्ध नाटकार श्री महेन्द्र मलंगिया आदिकैं पाग, माला ओ ऊनीशालसँ सम्मानित कयल गेलनि। एक मात्र डा. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैताकैं 'मिथिला सपूत' सम्मानसँ सम्मानित कयल गेलनि, जो हुनका मुख्यअतिथिक हाथसँ देल गेलनि। प्रशस्तिपत्रमे कहल गेल अछि जे मैथिली भाषाक भारतीय संविधानमे स्थान दिअयबामे विशिष्ट योगदानक हेतु अपनेकैं 'मिथिला सपूत' सम्मानसँ सम्मानित कयल जाइत अछि। ज्ञातव्य जे अन्तर राष्ट्रीय मैथिली परिषद एहि वर्ष सँ 'मिथिला सपूत' सम्मान केर रूपमे एकटा नव परम्परा प्रारम्भ कयलक अछि।



मुख्य अतिथि पदसँ अपन उद्गार व्यक्त करैत केन्द्रीय मंत्री श्री प्रकाश जायसवाल कहलनि जे अहाँलोकनिक समस्यासँ हमरालोकनि वाकिफ छी। केन्द्र सरकारक ध्यान अहाँक समस्या दिस आकृष्ट भेल छैक। भगवान करथिन तँ समाधानो हेबे करतैक। मिथिलाक्षेत्रक एकटा विशिष्ट परम्परा एवं जीवन दर्शन छैक, तकरा नकारल नहि जा सकैत अछि। ओहिसँ पूर्व डा. गुरुमैताक हाथसँ दू पोथीक लोकार्पण कराओल गेल। प्रथम पोथी डा. कमलकान्त झा लिखित 'अन्तर राष्ट्रीय मैथिली परिषद : विकास यात्रा' तथा दोसर मिथिला सांस्कृतिक परिषद जमशेदपुरक 'स्मारिका 2009।' एहि अवसरपर अनेक प्रतिनिधिलोकनि अपन उद्गार व्यक्त कयलनि जाहिमे प्रमुख छलाह-सर्वश्रीरामरिझन यादव (केन्द्रीय महासचिव), महेन्द्र मलंगिया (वरिष्ठ साहित्यकार), चुनचुन मिश्र (अध्यक्ष, संघर्ष समिति), उदयशंकर मिश्र (महासचिव, संघर्ष समिति), डा. राममोहन झा (दरभंगा) ,विष्णुकान्त झा (मुजफ्फरपुर)

भीमसिंह मैथिल (फरीदाबाद), सुरेन्द्रनाथ पाठक (रायपुर), चक्रधर झा (मुम्बई), अशोक ठाकुर (जयपुर), कृपानन्द झा (राष्ट्रीय महासचिव दिल्ली), डा. धनाकर ठाकुर (राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केन्द्रीय प्रवक्ता), रत्नेश्वर झा (दिल्ली), डा. गुरुमैता (पूर्वअध्यक्ष एवं वर्तमान संरक्षक) आदि। कानपुर श्रोताक उपस्थिति आशाक अनुरूप नहि छल रवि दिन रहितहुँ, तथापि कार्यक्रम प्रभावशाली रहल। अपन अध्यक्षीय भाषणमे डा. झा मिथिला राज्यक औचित्यकेँ प्रतिपादित कयलनि। श्री पी.सी. ठाकुर स्वागत भाषण तथा श्री प्रेमकान्त झा धन्यावाद ज्ञापन कयलनि।

दोसर सत्र सायं 6 बजेसँ महिला सत्रक रूपमे प्रारम्भ भेल, जकर अध्यक्षता श्रीमती रागिनी झा कयलनि। संचालन अशोक अविचल कऽ रहल छलाह। परिचर्चाक विषय छल 'मिथिला मैथिलीक उत्थानमे नारीसमाजक योगदान।' विषय प्रवेश डा. धनाकर ठाकुर करौलनि, जाहिमे ओ मैथिल महिलाक गौरवशाली परम्पराक विस्तारसँ चर्चा कयलनि। महिला सत्रमे महिलाकलोकनिक योगदान नगण्ये छल, मात्र अध्यक्षता करैत श्रीमती रागिनी झा अपन पैघ व्याख्यान देलनि, जाहिमे ओ मैथिल महिलाक विवशताकेँ रेखांकित कयलनि तथा अपन तर्कक समर्थनमे एकदूटा गीत सेहो गौलनि। सायं सात बजेसँ तेसर सत्र प्रारम्भ भेल, जकर विषय छल 'मिथिला राज्यक पुनर्गठन।' अध्यक्षता डा. धनाकर ठाकुर तथा संचालन श्री उदयशंकर मिश्र कऽ रहल छलाह। वक्ता छलाह सर्वश्री डा. राममोहन झा, भीमसिंह मैथिल, सुरेन्द्र नाथ पाठक, रामरिझन यादव, जीवन ज्योति झा, शिवनारायण राम (तीनू नेपाल) आदि। वक्तालोकनि मिथिला राज्यक पक्षमे जोरदार तर्कसब प्रस्तुत कयलनि।

चारिम सत्रक विषय छल 'महाकवि सुमनजी : व्यक्तित्व ओ कृतित्व।' संचालन श्री अशोक अविचल तथा अध्यक्षता केन्द्रीय अध्यक्ष डा. झा कयलनि। वक्तालोकनिमे श्रीउदयशंकर मिश्र एवं डा. धनाकर ठाकुर प्रमुख छलाहजे हुनक व्यक्तित्वक बखान कयलनि। अपन अध्यक्षीय भाषणमे डा. झा महाकवि सुमनजीक कृतित्व सभक संक्षिप्त चर्चा कयलनि। ज्ञातव्य जे 2010 ई. सुमनजीक जन्मशताब्दी वर्ष पड़ैत अछि। अगिला सत्र काव्य पाठ रूपमे राखल गेल, जकर अध्यक्षता एवं संचालन पूर्ववते रहल। काव्य-पाठ कयनिहार छलाह सर्व श्री डा. धनाकर ठाकुर, डा. अशोक अविचल, विधुकान्त मिश्र, शुभाकर ठाकुर, कमलकान्त मिश्र, विष्णुकान्त झा एवं अध्यक्ष डा. झा।

रातुक भोजनक विलम्ब भऽ चुकल छल। समय छैक 9 बजे किन्तु हमसब भोजनालय पहुँचलहुँ साढ़े दस बजेमे। बारिकक अभावमे स्वरूचि भोजन करऽ पड़ल। स्वयं बारिक स्वयं भोक्ता तथापि कोनो असुविधा नहि छल।



सोम दिन 21 दिसंबर कऽ नौ बजे धरि तैयार भऽ कऽ जलपानोपरान्त पुन: सबकेओ सभाभवनमे एकत्र भेलहुँ। वृत्तनिवेदन एवं समारोप सत्र छल। किछु प्रतिनिधि वृत्त निवेदन सत्रक औपचारिकताक निर्वहन करैत अपन-अपन संस्थाक गतिविधिक चर्चाकयलनि। संघर्षक अग्रिम रणनीति पर विचार विमर्श कयल गेल। नेपालक प्रतिनिधिलोकनिसँ सेहो अन्तरंग वार्ता भेल। एकैसम सम्मेलन अररियामे 24-25 अप्रैल 2010 कऽ होयत से पूर्व निर्धारित अछि। उक्त सम्मेलनक संयोजक श्री सुधीरनाथ मिश्र ठाढ़ भऽ अपन उद्गार व्यक्त करैत प्रतिनिधिलोकनिकेँ अररिया अयबाक हेतु आमंत्रित कयलनि। अन्तमे यात्री रचित प्रार्थना 'भगवान हमर ई मिथिलाक सुख शान्ति के घर हो' सँ सम्मेलन सम्पन्न भऽ गेल। भोजनोपरान्त प्रतिनिधिलोकनि प्रस्थान कऽ गेलाह।

हमरालोकनिक दिल्ली जयबाक गाड़ी 'श्रम शक्ति एक्स. राति साढ़े एगारह बजेमे छल। हमर सार श्रीविजयबाबूक पुत्री सौ. आरती कानपुरहिमे अछि- सबकेओ काल्हि उद्घाटन सत्रमे आयलो छलाह। डेरापर अयबाक हुनकालोकनिक बड़ आग्रह छलनि। हमरो अवसर भेटि गेल। चि. ओझाजी समयपर टेम्पू लऽ कऽ आबिए गेलाह। हुनकर आवास चलि गेलाक कारण समय बितायब आसान भऽ गेल। मोन सेहो लागि गेल आ चाय कॉफीक संगहि नीक भोजन सेहो भेटि गेल।

सोमक रातिमे कानपुरमे ट्रेन पकड़ि मंगलकऽ भोरे छौ बजेमे (22 दिसंबर कऽ) नई दिल्ली स्टेशन पहुँचि गेलहुँ। चि. पवनजीसँ बात भऽ गेल छल। तदनुसार सामान

अधिक रहलाक कारण एकटा कुलीक मदतिसँ दूनू गोटे पचास टाकामे टैक्सीस्टैंड आबि गेलहुँ। टैक्सी ड्राइवर पूर्वहिसँ संग लागल छल तेँ कनेक मोल-मोलइ कऽ ओकरहि गाड़ीमे सामान राखि आरामसँ बैसि गेलहुँ। कानपुरसँ आबयबला अन्य प्रतिनिधिलोकनि ओतहि फ्रेश हेबाक जोगाड़मे लागि गेलाह। आधा घण्टामे हमरालोकनि टैक्सीसँ कौशाम्बी स्थिति पवनजीक आवास सीमान्त बिहारमे पहुँचि गेल रही। आइ 22 दिसंबर मैथिलीक अधिकार दिवस छल आ एहि अवसरपर अन्तर राष्ट्रीय मैथिली परिषद मिथिला राज्य लेल दिल्ली केर जन्तर मन्तर पर प्रतिवर्ष धरना प्रदर्शन करैत अछि, तेँ हमहूँ शीघ्रतामे तैयार भऽ गेलहुँ आ श्रीपवनजी (रत्नेशचन्द्र झा) क संग मोटर साइकिलक पाछाँमे बैसि जन्तर मन्तरपर लगभग एगारह बजेमे पहुँचि गेल रही। कार्यकर्त्तालोकनि बड़का-बड़का पोस्टर बैनर लगा नमहर स्थान दफानिकऽ दसे बजेसँ बैसि गेल रहथि। डा. विद्यानाथ झा 'विदित' आ डा. भुवनेश्वर प्रसाद गुरूमैता प्रारम्भहिमे आबि थोड़ेक काल बैसि कऽ चलि गेल रहथि। कार्यकर्त्तालोकनि सैकड़ोक संख्या मे रंगविरंगक नारा लगबैत धमगज्जर कऽ रहल छलाह, किन्तु माइकक अभाव खटकि रहल छल। तथापि उत्साहमे कोनो कमी नहि छल। प्रदर्शनकारी लोकनि में प्रमुख छलाह सर्वश्री डा. धनाकर ठाकुर, चुनचुन मिश्र, उदयशंकर मिश्र, डा. राममोहन झा, भीमसिंह मैथिल, कपिलदेव कुँवर, अशोक कुमार ठाकुर, डा. अशोक अविचल, कृपानन्दझा, भवेश नन्दन, रत्नेश्वर झा, घनश्याम ठाकुर, चक्रधर झा, रामरिझन यादव, शिवनारायण राम, जीवन ज्योति झा, श्रीमती लक्ष्मी अधिकारी, सुधीरनाथ मिश्र, मुकेश झा, अनिल मिश्र, धर्मेन्द्र ठाकुर राजेशरंजन झा, दिनेश कुमार मेहता, रणधीर कुमार मिश्र, सज्जन कुमार पाठक, रामनारायाण यादव, विनय चन्द्र मिश्र, संजय यादव, महेन्द्र दास आदि। स्मारपत्र लऽ कऽ महामहिम राष्ट्रपित महोदया, मा. प्रधान मंत्रीजी आ मा. गृहमंत्रीजीक ओहिठाम जयबाक भार हमरे (डा. कमलकान्त झाकेँ) भेटल। 2 बजे अपहाह्नमे ड्युटी पर तैनात एकटा पुलिस अधिकारी कोनो एक प्रतिनिधिकेँ लऽ अयबाक हेतु अयलाह। यद्यपि हमरा लोकनिक स्मारपत्र तैयार छल। तथापि किछु आर समय लऽ लेलियनि ताधरि



हमरालोकनिक भाषण धुआँधार चलि रहल छल, जकर संचालन संघर्ष समितिक महासचिव उदयशंकर मिश्र कऽ रहल छलाह। बेराबेरी अधिकांश कार्यकर्त्ता भाषण कयलनि। तीन बजे अपराहनमे फेर उक्त पुलिस अधिकारी अयलाह। आब तैयार भऽ स्मारपत्रक फाइल हाथमे लय प्रस्थान कऽ गेलहुँ। आगाँ बढ़लापर हमर सुरक्षामे दू स्थानीय कार्यकर्त्ता पछोड़ धऽ लेलनि- श्री रत्नेश्वरजी आ एकटा आर कार्यकर्त्ता छलाह,जनिक नामक विस्मरण भऽ अछि। तीनू गोटे पुलिसक गाड़ीपर बैसि गेलहुँ। लद्दाखबला दू प्रतिनिधि अपन राज्यलेल स्मारपत्र लऽ कऽ पुर्वहिसँ गाड़ीमे बैसल छलाह। सर्वप्रथम हमरालोकनि राष्ट्रपति भवनक कार्यलय पहुँचल रही। मेटल डिटेक्टरसँ सब गोटेक जाँच भेल। बेराबेरी दूनू क्षेत्रक स्मारपत्र स्वीकार कयल गेल आ रिसीविंगपर मोहर मारि आपस कऽ देल गेल। आब प्रधानमंत्रीक ओहि ठाम अयबाक छल। हुनक कार्यालयपर आर अधिक जाँच पड़ताल भेल। दूनू क्षेत्रक एकहक्के गोटेकेँ भीतर जाय देलक। ओतहु एकप्रति लऽ लेलक आ एकपर मोहर लगा आपस कऽ देल गेल। तकर बाद सबकेओ उक्त गाड़ीसँ गृमंत्रीक कार्यालय गेलहुँ। ओतहु वैह विधिसब भेल। परुकोसाल एहिना भेल छल। आब सबकेओ आपस भऽ रहल छलहुँ। रास्तामे श्रीरत्नेश्वरजी लद्दाखक दूनू प्रतिनिधिकेँ आश्वासन देलथिन- राज्य लेल अहाँलोकनि जे संघर्ष कऽ रहल छी ताहिमे हमरहुलोकनि अहाँक संग छी। ओलोकनि 'धन्यावाद' कहलनि। सबकेओ अपन धरनास्थल पर आबि गेलहुँ। पूर्व भाजपा महासचिव श्री गोविन्द आचार्यक अबैया छलनि तेँ हुनक प्रतीक्षामे बैसि गेलहुँ। ताधरि श्री कृपानन्दजी एकटा हैण्डी माइक लऽ अनने रहथि। ओहि माइकक उपयोग प्रारम्भ भऽ चुकल छल। बड़ीकालक बाद श्री गोविन्द आचार्य धरफरायल अयलाह। हुनकर स्वागतमे स्वागतभाषण डा. धनाकरजी कयलनि। अपन भाषणमे श्री आचार्य कहलनि जे पृथक राज्यक मांग पृथकतावादी वा राष्ट्रविरोधी मांग नहि थीक। ओकोलकनि अज्ञानी छथि जे एहि मांगक विरोध करैत छथि। द्रुत आर्थिक विकास एवं प्रशासनिक सुविधाक लेल देशमे छोट-छोट राज्यक गठन आवश्यक अछि। विश्वक सर्वाधिक राज्यबला संघ यदि हमर देश बनि जाइत अछि तँ सेहो भारतकेँ गौरवान्विते करत। हम मिथिला राज्यक हार्दिक समर्थन करैत छी।

श्री गोविन्द आचार्य भाषणक बाद धन्यावाद ज्ञापन भेल आ सभा (धरना) समाप्त भऽ गेल। जन्तर मन्तर सँ सबकेओ लग भग पाँच बजे धरि प्रस्थान कऽ गेलहुँ। हमरा लेबाक हेतु श्री पवनजी आबि गेल रहथिन। हुनकासंग बाइकसँ आवास आबि गेलहुँ। काल्हिसँ चारि दिनक प्रशिक्षण शिविर

चलयबाक छल तँ ओकर तैयारी प्रारम्भ भऽ गेल ।

बुध दिन 23 दिसंबरकऽ डेरापर फोनसँ श्रीकृपानन्दजी सूचित कयलनि जे 3 बजे अपराह्न धरि बुरारी बस अड्डापर पहुँचबाक अछि, जकरालेल आनन्दबिहारसँ बस भेटत। हम अनुमान कयलहुँ जे एक घण्टासँ अधिक तँ पहुँचबामे नहियेँ लागत, तें आवाससँ एक बजेमे रिक्शा पकड़ि आनन्द बिहार बसस्टैंड पहुँचल रही। जखन बड़ीकालधरि बुरारीक बसक पता नहि चलल तखन भीतर बस पड़ावमे जाकऽ पता लगैलहुँ। अढ़ाइ बजेमे बुरारी बाइपासक बस भेटल। लोक कहलक एक घण्टामे पहुँचब। बहुत अधिक दूरी रहलाक कारण निश्चिन्तसँ बैसि गेलहुँ। बीच-बीचमे पुछियैक तँ कहय ''अभी बहुत दूर है।'' परिणाम भेल जे बुरारी चौकसँ एक कि.मी. आर आगा बढ़लापर पता चलल चौक तँ पछैँ छुटि गेल। गाड़ी रोकबौलहुँ आ धरफराकऽ उतरलहुँ। श्रीघनश्यामजीकेँ फोन केलियनि आ पैदल आपस भेलहुँ। रिक्शाक कतहु पता नहि छल। आधा घण्टामे जखन चौकपर पहुँचलहुँ तँ घनश्यामजीक निर्देशानुसार एकटा ऑटो पकड़ि उत्तर मुँह बढ़ि दस बारह मिनटमे बुरारी बस अड्डापर चारि बजेधरि पहुँछल रही। ओहिठाम पूर्वहिसँ हमर प्रतीक्षामे श्री चक्रधरजी, श्री रत्नेश्वरजी एवं घनश्यामजी ठाढ़ रहथि। श्री घनश्यामजी सबगोटेकेँ अपन आवासपर लऽ गेलाह। प्रशिक्षण शिविरक संयोजक बैह रहथि। थोड़ेक कालमे डा. धनाकरजी, कृपानन्दजी आदि अनेक लोक आबि गेलाह। चाह जलपानक बाद पचीस शिक्षार्थीक बीच सायं सात बजेसँ प्रशिक्षण कार्यक्रम पार्श्वमे एकटा कार्यालय पर प्रारम्भ भेल। सर्वप्रथम गोसाउनिक गीत भेल, तकर बाद परिचय कार्यक्रम चलल। उद्घाटन भाषण डा. धनाकरजी कयलनि। तीनटा सत्रमे रातुक 9.30 भऽ गेल। ओमहर पवनजीक फोन कतोक बेर आबि चुकल छल। कृपानन्दजी जखन आश्वासन देलथिन जे ओ अपन बाइकसँ डेरा पहुँचा देताह तँ ओ आश्वस्त भेलाह। डाक्टर साहेबकेँ साथ देखबाक हेतु



रातुक भोजन घनश्यामेजीक ओहिठाम करऽ पड़ल। बुरारी मोहल्लामे मैथिलक संख्या वेश बुझना गेल।

रातुक दस बजे श्रीकृपानन्दजीक पाछाँमे बाइक पर बैसि कौशाम्बीक सीमान्त बिहार लेल प्रस्थान कयने रही। दूरी बहुत अधिक छल। कृपानन्दजी गाड़ी बड़ तेजीमे चलबैत छथि, डरो होइत छल। ताहिपर जाड़क राति-हमर देह तँ सर्द भऽ गेल छल। मिथिला मैथिलीक कार्य करब आसान नहि छैक। सीमान्त बिहार पहुँचबामे रातुक लगभग एगारह बाजि गेल। नहि बेसी तँ तीस पैंतीस कि.मी. दूरी अवश्य तय कयने हैब। ताहिपर स्थान-स्थानमे ट्रक बलासब सड़क जाम कयने - तकर होग- हागसँ बाइक निकालैत चौक-चौटाहापर दहिना-बामा होइत कृपानन्दजी निकालैत जारहल छलाह।

लगातार चारि दिन धरि प्रशिक्षण चलल रहय। चारू दिन केवल सायंकाल तीन-साढ़े तीन घण्टाकऽ। महानगरमे लोककेँ दिनमे छुट्टी कतऽ? ओना कबैया ड्यौढ़मे तँ लगभग चालीस गोटे भाग लेने रहथि, मुदा नियमितता मात्र बीस कार्यकर्त्ताकेँ रहलनि। तँ ओतबे गोटे केँ अन्तिम दिन दीक्षान्त सत्रमे प्रशिक्षणक प्रमाणपत्र देल गेलनि। आब दिल्लीक दोसर मोहल्ला खोरा (साहिबाबाद) मे अगिला 1 अप्रैलसँ 4 अप्रैल 10 धरि प्रशिक्षण शिविर चलत से हुनकालोकनिक आग्रह पर तय भऽ गेल अछि। ओहि मोहल्लामे 'मिथिला बिहार' बनाय हमर भातिज चि. रामकुमार लोकनि रहैत छथि। ओतहु मैथिलक जमघट अछि। एहि प्रकार कानपुरसँ दिल्ली धरिक एहि खेपक प्रवास महत्त्वपूर्ण रहल।

सम्पर्क -
शिक्षानिकेतन, सुभाषचौक,
पो. - जयनगर, जि. - मधुबनी (मिथिला)।
दूरभाष - 06246222473
चलन्त - 9473013050, 9934098844

मैथिली सिनेमाक दशा आर दिशा

अरुण कुमार झा



मिथिलाक प्रतिभा देशे नहि विदेशो मे अपन सफलताक डंका बजा रहल अछि। शिक्षा, विज्ञान, ज्योतिष, कला-संस्कृति सहित अनेको क्षेत्र मे अकर परचम लहरा रहल छैक। सिनेमा आ छोटका पर्दा (टीवी) मे सेहो मिथिलांचलक अनेक सपूत नाम कमा रहल छैथ। प्रकाश झा सनक नामी सिनेमा निर्माता अही मिहिला भूमिक देन अछि, मुदा मैथिली सिनेमाक स्थिति देखि हमरा ग्लानिक अनुभव होइत अछि। सिनेमा आजुक युग मे समाजक एकटा सशक्त माध्यम छैक। अहि मे समाजक छवि स्पष्ट रूपे परिलक्षित होइत छैक। मिथिला समाजक समृद्धि सांस्कृतिक परंपरा रहल अछि, मुदा नीक सिनेमाक अभाव मे अकर प्रदर्शन नहि भऽ सकल अछि। पत्रिका आर पोथी सेहो समाजक दर्पण छैक, मुदा ओकर प्रभाव सिनेमा जेकां नहि होइत छैक। आइयो जतेक लोक सिनेमा देखैत अछि, ओकर एक-चौथाइयो पोथी आ पत्रिका नहि पढ़ैत अछि। सिनेमाक माध्यक सऽ हम अपन संस्कृति, रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान आ सोच विचार के प्रचारित आ प्रसारित कऽ सकैत छी। वर्तमान मे मैथिली छह-सात करोड़ लोकक भाषा अछि। अहि भाषाके आब संवैधानिक मान्यता सेहो प्राप्त छैक। साहित्यिक क्षेत्र मे सेहो मैथिली आगू बढ़ि रहल अछि। अकर धरोहर मे नीक-नीक उपन्यास आ कहानी छैक। ओकरा सिनेमाक रूप मे परोसल जा सकैत अछि। हमरा सबके अहि दिशा मे सोचबाक चाही।

मैथिली सऽ कम समृद्ध भाषा मे आई अनेको सिनेमा बनि चुकल अछि, मुदा मैथिली अहि दिशा मे बहुत पहुआयल अछि। 1961 ई. मे जखन तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरूक पहल पर मैथिली भाषा के अकादमी मान्यता प्रदान कैलक- ओकरा बाद 1965 मे मैथिली भाषाक 'शेक्सपियर' हरिमोहन झाक उपन्यास पर आधारित पहिल मैथिली सिनेमा 'कन्यादान' बनल। अकर निर्देशन फणि मजुमदार कयने छलाह। अहि सिनेमाक कथावस्तु एहन छलै जे सिनेमा नायक मैथिली नहि बुझैत छैक आर नायिका मात्र मैथिलीऐ बुझैत छैक। अंग्रेजिया वर आर देहाती कनियाक संबंध पर बनल अहि सिनेमा मे मैथिली आ अंग्रेजी-हिन्दी मिलल-जुलल संवाद छैक।'कन्यादान' सिनेमा समाज मे बेमेल विवाहक की परिणाम होइत छैक- ओकर सीख दैत अछि। मिथिला समाजक बेमेल विवह गंभीर समस्या अछि।



मैथिलीक दोसर सिनेमा 'ममता गाबय गीत' संभवत: 1983-84 मे प्रदर्शित भेलै। अहि सिनेमाक गीत खूब लोकप्रिय भेलै। सुमन कल्याणपुर आर गीता दत्त अहि सिनेमा मे अपन स्वर देने छलीह। अहि सिनेमाक अन्य कलाकार लोकनि सेहो मैथिली रंगमंच सऽ जुड़ल छलाह। ओकर प्रभाव छलै जे सिनेमा मिथिलांचल मे खूब चललै।'ममता गाबय गीतक' सफलता सऽ प्रभावित भऽ आनंद मिश्र 1994 मे एकटा टेली सिनेमा 'इजोत' बनौलन्हि। आनंद मिश्र मैथिली भाषा के संवैधानिक मान्यता दिएबाक आंदोलन मे सेहो बढ़ि-चढ़ि कऽ भाग लेने छलाह। 'इजोत' सिनेमा मे मिथिलांचलक युवा वर्गक वास्तविक स्थिति के दर्शायल गेल अछि। शिक्षाक उपरांत रोजगारक लेल मिथिलांचलक युवा कतेक अपमानित होइत अछि- ओकर जीवन 'अंधकार' सऽ भरि जाइत छैक। ओहना स्थिति मे ओ 'इजोतक' तलाश कोना करैत अछि, अहि सिनेमाक कहानी अही पर आधारित छैक। अहि सिनेमा मे पार्श्वगायक उदित नारायण गीत गयने छथि। आनंद मिश्र अहि सऽ पूर्व एकटा आर मैथिली वीडियो सिनेमा 'एना कतै दिन' बनौने छलाह। ओकरा बाद 1998 ई. मे एकटा आर मैथिली सिनेमा 'सस्ता जिनगी महक सिंदुर' बनलै। अहि सिनेमाक निर्देशन बालकृष्ण झा केने छलाह। अहू सिनेमाक गीत खूब चलल। अहि सिनेमाक बाद मैथिली सिनेमाक निर्माण मे ठहराव जेकां आबि गेलै। बीच-बीच मे एक-आध मैथिली टेली आ वीडियो सिनेमा बनैत रहल मुदा ओकर प्रभाव दर्शक पर नहि भेलैक। वर्ष 2007 मे एकटा आर मैथिली फिल्म 'सिन्दुर दान' बनल मुदा किछु तकनीकी कारण सऽ ओकर प्रदर्शन नहि भऽ सकलै। फिल्मक निर्माता नव रूप मे अहि सिनेमा के दर्शकक समक्ष प्रदर्शित कयलनि अछि। उपरोक्त तथ्य सऽ जाहिर होइत अछि जे 45 सालक दरम्यान मात्र चारि-पांच मैथिल सिनेमाक निर्माण भेल। आंकड़ा सऽ स्वत: मैथिली सिनेमाक दशा स्पष्ट होइत अछि। यदि आबो हम गंभीरता सऽ मैथिली सिनेमाक बारे मे सोची तऽ अकर दिशा सकारात्मक भऽ सकैत छैक।

लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक 14-०2-2०1० कँ प्रयागमे लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न भेल।

संगोष्ठीक आयोजन श्री विधुकान्त मिश्र, मैथिली अकादमी आ मिथिला सांस्कृतिक संगमक सहयोगसँ भेल। मुख्य वक्ता रहथि- राँचीसँ डॉ. धनाकर ठाकुर, अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद, भाषिक, भौगोलिक एवं सामाजिक आधारपर लघु राज्य विशेष क' मिथिलांचलक गठन पर जोर देलखिन्ह। संगोष्ठीमे ई. प्रदीप झा, कर्नल देवकान्त झा, डॉ. ए.के. झा, श्री अखिलेश झा, श्री सुधीर मिश्र, संजीव झा आदि गोटे सभ अपन विचार प्रकट कयलन्हि। समारोहक अध्यक्षता कर्नल डी.के. झा कएलन्हि।

भालचन्द्र झाकँ साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार



भालचन्द्र झाजी कँ क साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार हुनकर मराठीसँ मैथिली अनुवाद बीछल बेरायल मराठी एकाँकी (मराठी सम्पादक सुधा जोशी आ रत्नाकर मतकरी) लेल देल गेल अछि। एहि पुरस्कारमे पचास हजार टाका आ ताम्रपत्र देल जाइत अछि।

भालचन्द्र झा, ए.टी.डी., बी.ए., (अर्थशास्त्र), मुम्बईसँ थिएटर कलामे डिप्लोमा। मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आ गुजरातीमे निष्णात। 1974 ई.सँ मराठी आ हिन्दी थिएटरमे निदेशक। महाराष्ट्र राज्य उपाधि आ थिएटर वर्कशॉप पर अतिथीय भाषण आ नामी संस्थानक नाटक प्रतियोगिताक हेतु न्यायाधीश। आइ.एन.टी. केर लेल नाटक सीता केर निर्देशन। वासुदेव संगति आइ.एन.टी.क लोक कलाक शोध आ प्रदर्शनसँ जुड़ल छथि आ नाट्यशालासँ जुड़ल छथि विकलांग बाल लेल थिएटरसँ। निम्न टी.वी. मीडियामे रचनात्मक निदेशक रूपेँ कार्य- आभलमया (मराठी दैनिक धारावाहिक एपीसोड), आकाश (हिन्दी, जी.टी.वी.), जीवन संध्या (मराठी), सफलता (रजस्थानी), पोलिसनामा (महाराष्ट्र शासनक लेल), मुन्गी उदाली आकाशी (मराठी), जय गणेश (मराठी), कच्ची-सौन्धी (हिन्दी डी.डी.), यात्रा (मराठी), धनाजी नाना चौधरी (महाराष्ट्र शासनक लेल), श्री पी.के अना पाटिल (मराठी), स्वयम्बर (मराठी), फिर नहीं कभी नहीं(नशा-सुधारपर), आहट (एड्सपर), बैंगन राजा (बच्चाक लेल कठपुतली शो), मेरा देश महान (बच्चाक लेल कठपुतली शो), झूठा पालतू(बच्चाक लेल कठपुतली शो),टी.वी. नाटक- बन्दी (लेखक- राजीव जोशी), शतकवली (लेखक- स्व. उत्पल दत्त), चित्रकाठी (लेखक- स्व. मनोहर वाकोडे), ह्रदयची गोस्ता (लेखक- राजीव जोशी), हद्दापार (लेखक- एह.एम.मराठे), वालन (लेखक- अज्ञात)।लेखन-बीछल बेरायल मराठी एकांकी(अनुवाद), सिंहावलोकन (मराठी साहित्यक वर्ष), आकाश (जी.टी.वी.क धारावाहिकक एपीसोड), जीवन सन्ध्या(मराठी साप्ताहिक, डी.डी, मुम्बई), धनाजी नाना चौधरी (मराठी), स्वयम्बर (मराठी), फिर नहीं कभी नहीं(हिन्दी), आहट (हिन्दी), यात्रा (मराठी सीरयल), मयूरपन्ख (मराठी बाल- धारावाहिक), हेल्थकेअर इन ए.डी.) (डी.डी.)। थिएटर वर्कशॉप- कला विभाग, महाराष्ट्र सरकार, अखिल भारतीय मराठी नाट्य परिषद, दक्षिण-मध्य क्षेत्र कला केन्द्र, नागपुर, स्व. गजानन जहागीरदारक प्राध्यापकत्वमे चन्द्राक फिल्मक लेल अभिनय स्कूल, उस्ताद अमजद अली खानक दू टा संगीत प्रदर्शन।श्री भालचन्द्र झा एखन फ्री-लान्स लेखक-निदेशकक रूपमे कार्यरत छथि।

प्रबोध सम्मान जीवकान्तकेँ भेटलन्हि

प्रसिद्ध साहित्यकार जीवकांत के एहि बेसका प्रबोध सम्मान दरभंगा मे आयोजित भव्य समारोह मे प्रदान कैल गेलन्हि।

जीवकान्त- 1936

पूर्ण नाम- जीवकान्त झा

पिता-गुणानन्द झा, माता-महेश्वरी देवी, जन्म तिथि-25.7.1936 स्थान अभुआढ़, जिला-सुपौल

शिक्षा-मैट्रिक,(1955)आइ.एस.सी. (1957 आर.के.कॉलेज, मधुबनी), बी.ए. (1964 बिहार वि.वि.स्वतंत्र छात्र), डिप.इन.एड.(1969 मिथिला वि.वि.)

नौकरी-उच्च विद्यालयमे सहायक शिक्षक। विज्ञान शिक्षक (उ.वि.खजौली 1957-81), हिन्दी शिक्षक (उ.वि.डेओढ़ एवं उ.वि.पोखराम 1981-98)

पहिल रचना-इजोड़िया आ टिटही (कविता, जनवरी 1965 मिथिला मिहिर)

पहिल छपल पोथी- दू कुहेसक बाट (उपन्यास 1968)

नवीनतम पोथी-खिखिरक बीअरि (2007 बाल पद्य कथा), अठन्नी खसलइ वनमे (पद्य-कथा संग्रह) आ पंजरि प्रेम प्रकासिया (जीवन-वृत्तक अंश) प्रेसमे

पुरस्कार-साहित्य अकादेमी (दिल्ली 1998), किरण सम्मान (1998), वैदेही सम्मान (1985)

प्रकाशित पोथी-

कविता संग्रह : नाचू हे पृथ्वी (71), धार नहि होइछ मुक्त (91), तकैत अछि चिड़ै (95), खाँड़ो (1996), पानिमे जोगने अछि बस्ती (98), फुनगी नीलाकाशमे (2000), गाछ झूल-झूल (2004), छाह सोहाओन (2006), खिखिरिक बीअरि (2007)

कथा-संग्रह : एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे (72), सूर्य गलि रहल अछिकविता (75), वस्तु (83), करमी झील (98)

उपन्यास : दू कुहेसक बाट (68), पनिपत (77), नहि, कतहु नहि (76), पीयर गुलाब छल (71), अगिनबान (81)

हिन्दी अनुवाद- निशान्त की चिड़िया (हिन्दी अनुवाद-तकैत अछि चिड़ै, साहित्य अकादमी, दिल्ली 2003)



महाकवि विद्यापति।



प्रसिद्ध पत्रकार श्रीयुक्त हैदर हुसैन दीप प्रज्ज्वलित करैत।



मंच पर अतिथि श्री मंत्रेश्वर झा, श्री हैदर हुसैन, श्री शरदिन्दु चौधरी व समिति के अध्यक्ष प्रेमकान्त चौधरी।



दर्शकदीर्घा में सुसभ्य दर्शकगण।



मंच संचालन मे
एन के मिश्रा



ओजपूर्ण भाव में भाषण दैत
श्री हैदर हुसैन।



गद्‌गद्‌ मुद्रा में वक्तव्य दैत
श्री शरदिन्दु चौधरी।



अध्यक्षक भाषण दैत
श्री प्रेमकांत चौधरी



स्वागत समितिक अध्यक्ष
श्री जगनिवास झा।



श्री मंत्रेश्वर झा जी के प्रशस्ति पत्र प्रदान करैत अध्यक्ष।



महिला कलाकार के सम्मानित करैतं श्रीमती विभा झा।



समर्पित मैथिल मणिकान्त झा के सम्मानित करैत समिति के अध्यक्ष।



श्री हरगोविन्द झा श्री मत्रेश्वर झा के सम्मानित करैत।



कुंज बिहारीक बोलक अनमोल रसास्वादन करैत श्रोता–दर्शक।



मिथिलाक तन–असमकमन श्री संजीव शर्मा बिहू दल के सम्मानित करैक दृश्य।



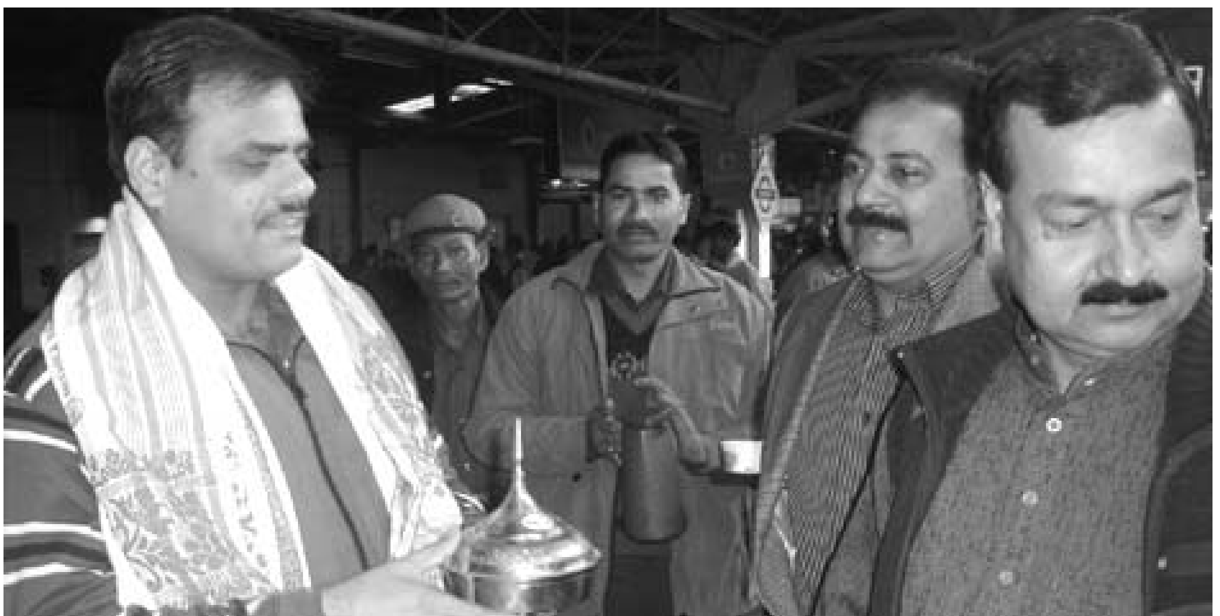


समितिक होली मिलन (ठहाका) के एक दृश्य।





समितिक सर्वभाषा कवि सम्मेलन मे मंच पर (बाम सँ) विजय बहादुर सिंह, डा. गंगेश गुंजन, बलदेव बंशी, ब्रजेंद्र त्रिपाठी आऽ डा. कृष्णमोहन झा आऽ मंद मुस्कानक संग श्रोतागण।



श्री दीपक कुमार (डीआईजी) के पदस्थान्तरण के अवसर पर समिति द्वारा भावपूर्ण विदाई।

AmV§H$dmX Am _r{S>`m

प्रेमकांत चौधरी



कल्पना करु की ओसामा विन लादेन कोनो देशक राष्ट्रपति बा प्रधानमंत्री बनी गेहाल आ हुनका विश्वक सब सऽ प्रतिष्ठित शांति पुरस्कार यानी नोवेल शांति पुरस्कार देल गेलैन्ह? दुनिया एकरा कोन दृष्टि सऽ देखत? छोट-मोट गुण्डा-गरदी सऽ पैद्य गुण्डा-गरदी करैत-करैत राजनीति मे लोक ग्राम पंचायत सऽ लऽ संसद भवन तक पहुंच जाईत अछि। तहिना यदि सरकार कोनो आंतकी संगठन सऽ वार्त्ता क-कऽ शांति बहाल करैत अछि आ ओ व्यक्ति वा संगठन के लोक के सरकार सामुहिक रूप सऽ क्षमादान दऽ दैत छैक आ पुन: ओहन व्यक्ति के अनेको राजनीतिक पार्टी अपना-अपना ओहिठाम ओहिना आनै के लेल तैयार रहैत अछि जहिना श्वाति के आश मे चातक कालान्तर मे ओहन व्यक्ति राजनीति मे आवि देशक सर्वोच्य पद पर आसीन भऽ जाईत तऽ की आश्चर्य? एकर अनेको उदाहरण अछि! अत: मानल जायकि ओसामा विन लाडेन के नोवेल शांति पुरस्कार भेट जाय वा ओ कोनो देशक सत्ता पर काबिज भऽ जाय कि आश्चर्य?

वर्त्तमान भौतिकवादी समय मे जहां लोक भाग-दौड़ केऽ जीवन जी रहल अछि। अपपन मेहनत सऽ स्वयं परिवार आ समाज-देशक उन्नति में आर्थिक सहयोग कऽ रहल अछि ओहन स्थिति मे आतंकवादी संगठन सऽ शांतिवार्त्ता तऽ कएय जाय संगहि अनेक तरहक विषय पर सेहो विचार-विमर्श काएल जाय, कारण एहन अनेको परिस्थिति उत्पन्न होयत अछि जाहि मे एहन आंतकी संगठनक लोक सरकार द्वारा सार्वजनिक क्षमादान के तहत पुन: राजनीति मे आवि विघटन कारी नीति जारी रखैत छथि।

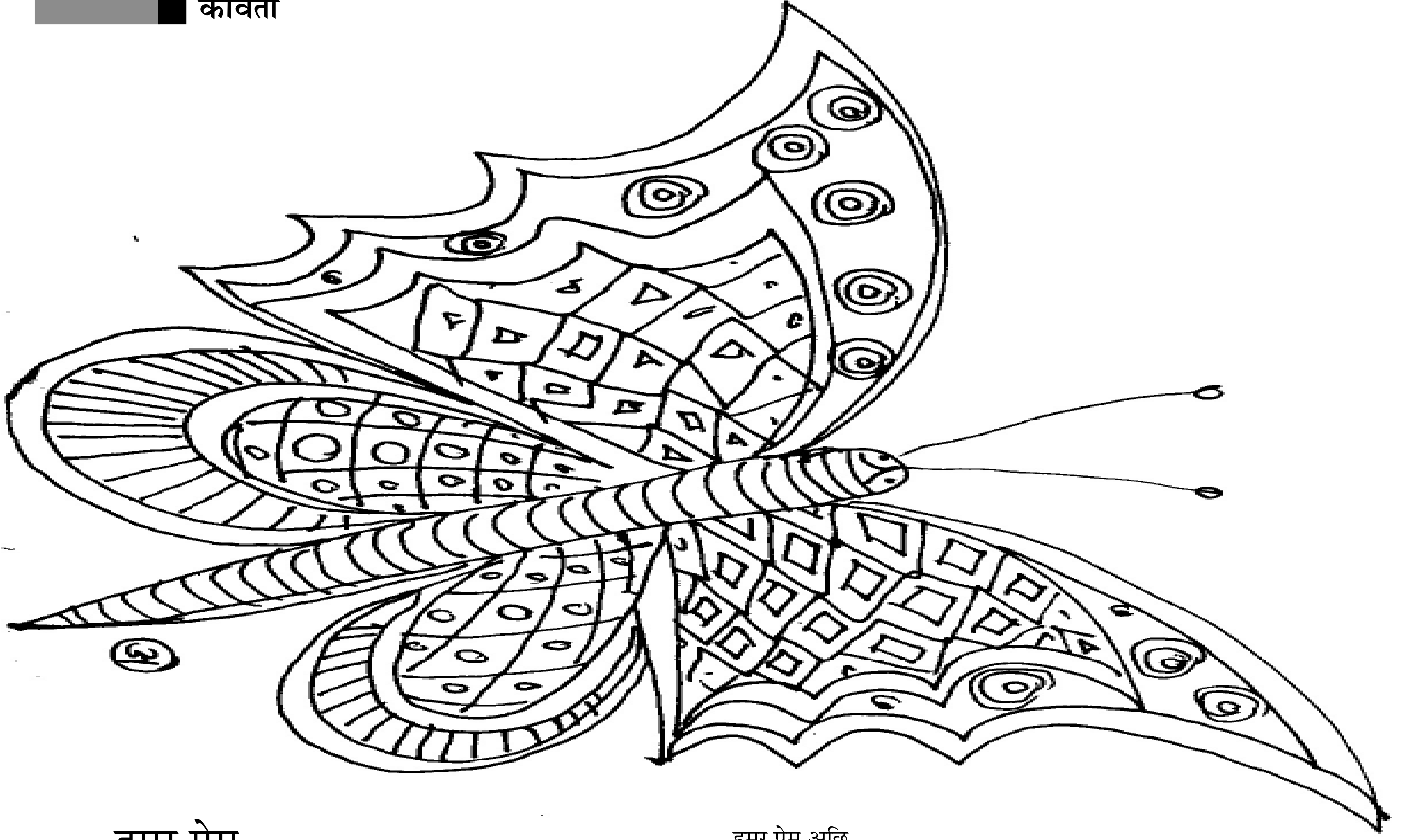
वर्त्तमान समय मे असम मे जे किछु घटि रहल अछि ओकर दुरगामी प्रभाव पुन: समाज पर पड़तैक जे घटल अछि। अल्फा के एकटा पैध व्यक्ति छोड़ी कऽ बाकि सब के सब एखन पुलिस विरासत मे अछि आ पूछ-ताछ जारी छैक। समय-समय पर अखबार क न्यूज चैनल



पर समाचार अवैत रहैत अछि जे केन्द्र राज्य एवं अल्फा के बीच वार्त्ता होयत वा वार्त्ता केऽ माहौल तैयार कैल जा रहल अछि। वार्त्ता हेवाक चाहि आ उचित समाधान से हो खोजल जाय। परन्तु जाहि तरहे पछिला दिन अल्फा के शीर्ष नेता पकड़ल गेल आओर कोर्ट मे हाजिर कैल गेल आ ओहि समय मे किछु युवक अल्फा जिन्दावाद के नारा लगैलन्हि आ अखबार आ विषेश रूप सऽ इलेक्ट्रोनिक मिडिया जाहि तरहे दिन भरि आतंकी लोकनि केऽ अपन टी.वी. जैनल पर देखौलन्हि जेनाकि ओ हीरो छथि। ओहि सऽ एकटा मन मे अंदेशा उटल जे वास्तव मे ओ की छथि, आतंकी जे पछिला तीन दसक मे हजारो-हजार व्यक्ति के मारलथि वा समाज के हित मे कोन-कोन ओ काज केलैनीक आ एखन मिडिया इनका हीरो बनबैत छन्हि? वस्तुत: ओ नायक सऽ शुरु-शुरु मे अवश्य छलाह परन्तु धीरे-धीरे किछु लोकक नायक खलनायक सऽ (आतंकवादी) समाज के नजरि मे बनि गेलाह।

ओ लोकनि जिनकर प्रियजन पछिना वीस बरख सऽ विभिन्न आंतकि हमला मे मारल गेल तिनका सऽ पुछियौन्ह कि ओ की छथि। यदि हुनकर याददास्त एखन धरि कमजोर नहि पड़ल छन्हि तऽ हुनका सबके अवश्य ई बात जेहन मे हेतैन कि हजारो-हजार क संख्या मे मारल गेल हुनकर निर्दोष परिजन कोन रूपे आतंकी-बमक शिकार भेलाह। परिवार क परिवार उजड़ीगेल बच्चा अनाथ भऽ गेल ओकर भविष्यक चिंता केनिहार नहि बचल, 'स्त्रीगण' विधवा भऽ गेलिह तथा बूढ़ माय-बापक सहारा छीन गेल। अल्फा के अनेको एहन कारवाई मे निर्दोष लोक मारल गेल। मिडिया द्वारा एहन तस्वीर देखाओन गेल कि जेना नेल्सन मंडेला होई। एतेक भावना मे बहनाई ठीक नहि। कारण समाज मे एहि तरहक बात लोक बुझऽ लागत कि एहने काज केला केऽ बाद लोक प्रतिष्ठि भऽ सकैत अछि। धिया पुत्ता केऽ पढ़ाई छोड़ि एहन काज करबाक लेल प्रोत्साहन भेटतैक जे कोनो तरहे समाजक हित मे नहि। नव पीढ़ी केऽ बचेनाई वर्त्तमान पीढ़ी केऽ उत्तरदायित्व छैक एहि बात सऽ मुंह नहि मोड़ि सकैत छी। एहि बात सऽ मुंह मोड़नाई मतलब भेल सामाजिक अपराध। अत: वर्त्तमान समय मे अपन-अपन राग अलापि रहल स्थानीय एवं राष्ट्रीय मिडिया के ई दायित्व बनै छैक जे समाचार सम्पादन ऐहि रूपे करि जाहि सऽ सामाजिक ढांचा बचल रहै। एहन विषय पर समाचार समाज के अवश्य दी परन्तु ओकरा अनर्गल तरह सऽ पेश नहि करि। भ्रामक नहि बनाबी। उत्तेजक नहि बनाबी?

अत: वर्त्तमान समय मे आतंकवाद अपन चरमसीमा पर पहुंच गेल अछि तहिना समाचार पत्र (प्रिंट मिडिया) इलेक्ट्रोनिक मिडिया अपन चरमसीमा पर पहुंच गेल अछि। आतंकवादी क कोनो निष्ठा नहि होईत छैक परन्तु प्रिंट मिडिया व इलेक्ट्रोनिक मिडिया के अपन दायित्व छैक। शैतान के भगवान् नहि बनावी त अति उत्तम। ताकि कोनो एहन व्यक्ति हीरो बनि कऽ सर्वोच्य पद पर काबिज भऽ जाय जाहि सऽ समाज के नुकसान होई वा नव पीढ़ी ओहन काज करवाक गेल प्रोत्साहित नहि होई!



हमर प्रेम

कृष्णमोहन झा

हमर ठोरक पपड़ी पर जे एकटा मर्म सुखा रहल अछि
हमर जिह्वा पर जे धूरा उड़ि रहल अछि
हमर सोनितक धार सं जे धधरा उठि रहल अछि
हमर देहक शंख सं जे समुद्रक आवाज आबि रहल अछि
हमर आत्माक अंतरिक्ष मे जे चिड़ै–चुनमुनी कलरव क रहल अछि
हमर स्मृतिक गाछ पर जे झिमिर–झिमिर बरखा भ रहल अछि
तकरा सभक चोट आ खोंच कें
टीस आ मोंच कें
रूप आ रंग कें
स्वर आ गंध कें
कोना पानक एकटा बीड़ा बनाक
हम अहांक आगू राखि दी आ कही–
लिअ ग्रहण करू
ई थिक अहांक प्रति हमर प्रेम

जखन कि हमरा बूझलए
जे हमर प्रेम
गुड़ियाम मे बान्हल एक टा पियासल बरद अछि
जे खाली बाल्टी कें देखि–देखिक भरि राति हुकरैत अछि

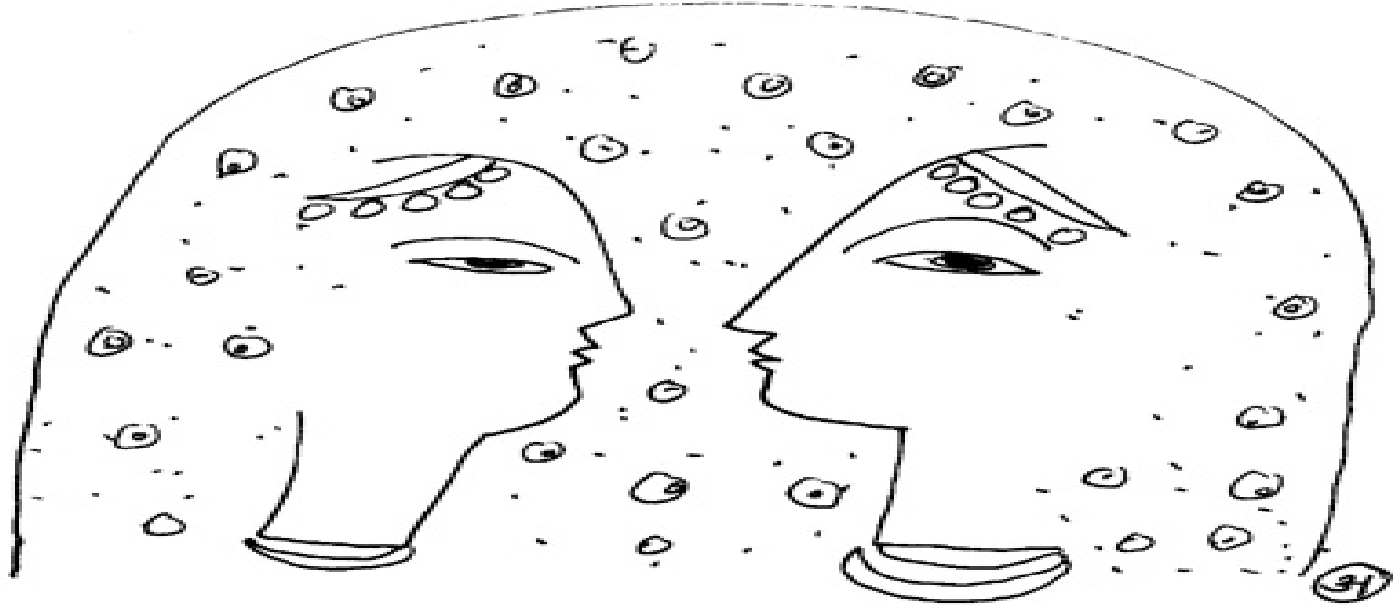
हमर प्रेम अछि
छिट्टा सं झांपल एक टा छागर
जे बन्द दुनिया सं बहरयबाक बेर–बेर चेष्टा करैत अछि

हमर प्रेम धूरा–गर्दा मे जनमल एक टा टुग्गर चिलका अछि
जे दीने–देख हेरा गेल अछि
बीच बाजार मे

तखन अहीं कहू
कोना हम अपन आत्माक फोका कें
एक टा मृदुल भंगिमाक संग अहांक सम्मुख तस्तरी मे राखि दी
आ कही–
लिअ ग्रहण करू

हमर प्रेम जं किछु अछि तं एक टा फूजल केबाड़
हमर प्रेम जं किछु अछि तं एक टा कातर पुकार
कि आउ
अइ दुनियाक सभ सं कोमल आ सभ सं धरगर चीज बनिक'
आबि जाउ

अहांक स्वागत मे
हमरा ठोर सं लक अहांक ओस धरि जे ओछाओल अछि
ओ कोनो कालीन नहि
अहांक तरबा लेल व्यग्र
खून सं छल करैत हमर हृदय अछि



आ हमर हड्डीक प्राचीन अंधक मे
ओसक एक टा बुन्न सन कोमल
अनेक युग सं अहांक बाट ताकि रहल अछि हमर प्राण

हमर प्राण अछि अहांक आघात लेल आतुर
अहांक आघात एहि जीवनक एक मात्र त्राण

सम्पर्क:रीडर,हिन्दी विभाग, असम विश्वविद्यालय,सिलचर, असम
788011 फोन:03842–270964/ 09435073896

दूगो प्रेम–कविता

नारायणजी

(1)
हमरा लेल सुलभ अछि



अहाँसँ नीक अछि
अहाँक सपना
सपना मे फूलक सुगंधि
सुगंधि संग नहुँ–नहुँ बजैत आदिम–राग

बादरि
फसिलक आमंतण पर बरिसैत
अहाँसँ नीक अछि
अहाँक सम्वाद
सम्वादक एक खण्ड धरती
धरती पर सिहकल जल–हवा

एक हाँज चिड़ै
आकाशक नीरवताकेँ भंग करैत
अहाँसँ नीक अछि
अहाँक एकान्तक साक्षी चितकाबर अन्हार
अन्हारक पोर–पोर मे सन्हियायल रुधिर–ताप
रुधिर–तापक आत्मा धरि छिटकल इजोरिया

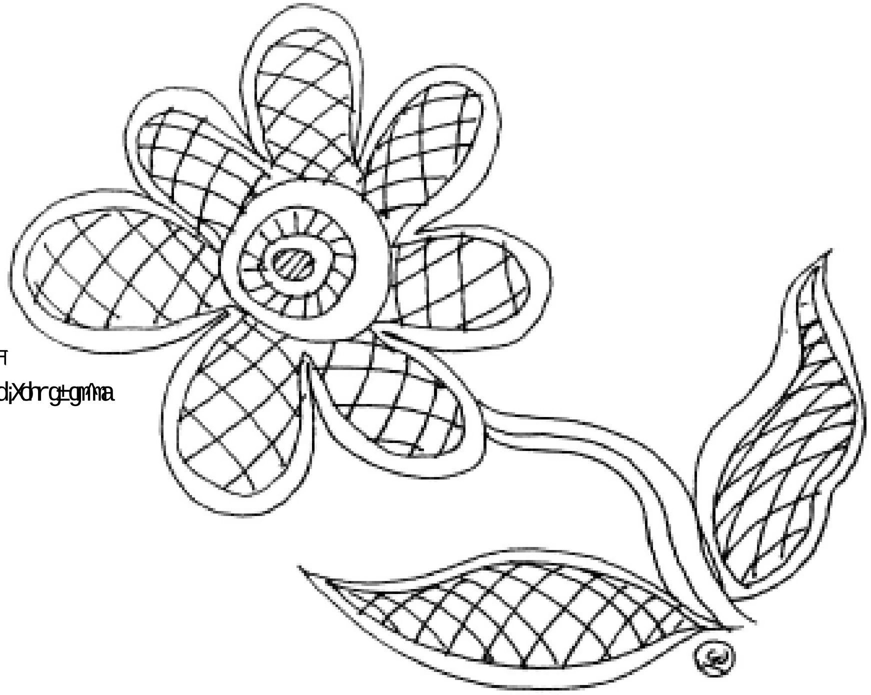
अहाँ सँ नीक अछि
मरने ओ इनार
ओ अछि
हमरा लेल सुलभ अछि
अहाँक स्मृति मे फिरि आयब....
....

(2)
ओकर छांह मे

चान उगत नहि
ओकर विवश मन मे
कहियो
ठाढ़ि फुटैत छल
फुटैत छल धार
ओकर रोम सँ
देहसँ धधरा फुटैत छल
लोक कहैत अछि–
ओकर पयरमे बान्हल छल घुड़घुड़ा

ओ
हाड़ धरि भीजय
निर्वस्त्र
इजोरिया मे
होइत रहय विभोर
अपन पयर
धरतीक तऽर धरि सन्हियाय लेलक अछि
पसारि लेलक अछि डेन
अपनाहि डेनक पसार मे
ओ बन्न भऽ गेल अछि
चान उगत कोना
ओकर छांह मे?
अपन विस्तृत अन्हार मे
ओ बसा लेलक अछि
एकटा छोट सन इन्द्रप्रस्थ
आब गेल नहि हैत ओकरा
उत्तेजनाक लहरि मे
ओकर छांह मे
त्वचाक स्पर्श बिलहैत
चोर-प्रेमी निर्भीक अछि
ओकर छाँह मे उगत नहि चान

-d¡Xdhrg±gm^a



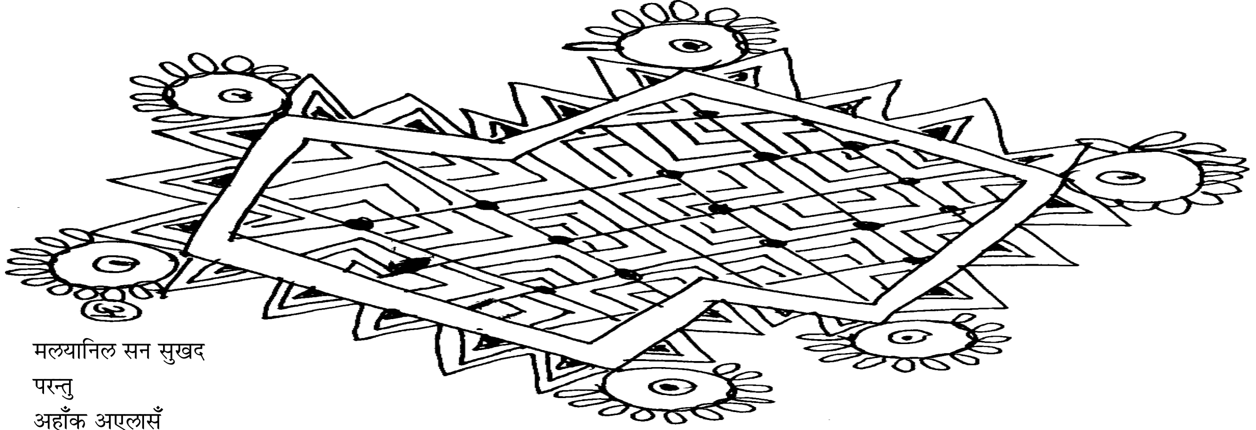
दूटा प्रेम कविता

राजदेव मंडल

(1) युग्मक फाग-पत्ती

(प्रथम)
फगुआक रंग
लागल अंग-अंग
जागल अनंग
अहाँ नहि छी संग।
(द्वितीय)
षीत भागल
बसंत जागल
पिक पागल
कतए छी अभागल।
(तृतीय)
रितुराजक सुमन
झूमैत कण-कण
पिपासित मन
अहाँ छी दुसमन।
(चतुर्थ)
कहने रहि- नहि घबराएब
हम षीघ्रे आएब
आब कतेक कमाएब
ई मधुमास पुन: पाएब।
(पंचम)
परेमक संगहि विरह रहत
जीनगीक संगहि गिरह रहत
आब कतेक मन दुख सहत
आउ न फगुआ की कहत।

(2) आगमन
अहाँक आगमनसँ
अंत भऽ गेल
आँखित पतीक्षा
आस छल आएब अहाँ
किन्तु
नहि जनैत छलौं
आबि सकब अहाँ
एतेक षीघ्र
सोचने छलौं
अहाँक स्पर्ष होएत
मृदुल आओर कोमल



मलयानिल सन सुखद
परन्तु
अहाँक अएलासँ
झन-झना उठल
हमर हृदय
किएक तँ
अहाँक आएब नहि अछि सच्चा
कहि रहल गोदीक बच्चा
पतझड़ी जिनगीक आब
हमरा करए पड़त सामना
तइयो अहाँक लेल
कऽ रहल छी मंगल कामना।

पता- ग्राम-मशहूरनियाँ, रतनसारा(निर्मली)
जिला- मधुबनी, 847452
मो. 9199592920

कतेक मोन पारु

कल्पनाप्रेम

कतेक मोन पारु
ओहि इजोरिया राति मे
संग-संग चलैत
हाथ मे नेने हाथ
आनन्द पथ पर -
'प्रेम' क फूल देने रहिं
मोन पारु -
ओ पूर्ण चन्द्रमासिक राति छल
दूधिया मे नहायल ताज छल
ताज तऽ प्रेमक प्रतीक अछि
ताजक समझ
हम लाल गुलाब देने रहि
मोन पारु -
ताजक सुन्दरता क बीचो-बीच
अहांक सुन्दरता पर
हम सुनेने रहि
एकटा 'प्रेम' क गीत
मोन पारु -
कखनो चन्द्र केऽ
कखनो ताज केऽ
कखनो फूल केऽ
कखनो आहां केऽ
बेर-बेर
अनेक बेर
निहारैत रहि
मोन पारु-
'कल्पना' करैत रहि
तुलना करैत रहि
चारु के बारे मे
चन्द्र-ताज-फूल
आओर-आहां
केऽ सुन्दर, केऽ सु-सुन्दर
केऽ अतिसुन्दर
आओर के सम्पूर्ण सुन्दर
मोन पारु -
ओहि दुधिया राति मे
चन्द्र सुन्दर परन्तु अतिदूर
ताज सु-सुन्दर परन्तु विशाल
फूल अति सुन्दर सुगंधित परन्तु 'कांट'
आओर - मात्र आहां
केवल आहां
चन्द्र-ताज-फूल
सब सऽ विशिष्ट गुण सऽ परिपूर्ण
कोमल-हृदय, सतीत्व, पत्नीत्व
मातृत्व, बन्धुत्व, अपनत्व
केऽ सागर-आहां
सम्पूर्ण सुन्दर।
मोन पारु -
आई भोरे-भोर
एतेक बरखक वाद
कतेको नीक अघलाह के वाद

संग-संग रहै के वाद
जीवनक दोसर पहर मे
आहां उत्तर देलौह
की -
मोन पारु -
हमहूं तऽ 'प्रेम' केलौह
'प्रेमक' 'उपहार' देलौह
संग-संग साथ देलौह
अहींक सब बात केलौह
मोन केऽ मारी कऽ
कतेक बेर-हाथ देलौह?
मोन पारु-ने
तीन टा 'फूल'
बेली-चमेली
आओर
सुन्दर लाल गुलाब।
आंगन मे खिलल बिहुसल
नव-नव जीवन।
अहींक संग विताओल
दरक्षण-प्रतिपल
मोन परैत अछि।
सवटा - गप्प - शप्प
की-की-मोन पारु?
कतेक मोन पारु?

दूटा प्रेम गीत

ललित कुमार झा

(1)
सावन के रिम झीम मे, सिहकैत बसात मे।
तन मन धधैक उठल, एहन बरसात मे॥
तन मन बेकल भए अहीं के बजायल।
बहुत याद आयल, बहुत याद आयल॥
टिपिर-टिपिर बूंद परै राति अन्हरिया।
दामिनि दमकि उठए, हंसए बदरिया॥
परिधान सुखल, मोन अछि दहायल।
बहुत याद आयल, बहुत याद आयल॥
बरखा के बूंद जखन केराक पात पर।
काबू नहि राखि पावी, अपना हालात पर॥
ठनका ठनकि उठए, देह थर थरायल।
बहुत याद आयल, बहुत याद आयल॥
संगे जे रहितहुं तऽ बरखा मे भिजितहुं।
मेघक मादकता मे तनमन जुरबितहुं॥
बरखा के सूर मे अहीं के नाम गायल।
बहुत याद आयल, बहुत याद आयल॥
सावन के बरखा अऽ प्रेमी विछोहित।
प्रकृति विरुद्ध बात, क्रीया अशोभित॥
दंश विछोहक 'ललित' के तड़पायल।
बहुत याद आयल, बहुत याद आयल॥



(2)
कहूने,
यो कहू ने,
किया मोन, आहां के उदास!
आयल बसंत,
मोन भेल उड़न्त,
रतिमय, ऋतु केर रास॥
कहू ने, यो कहूने,
किया मोन अहां के उदास!
प्रेमक डोरी
जा संग बान्हल,
वैह बसल दूर देश।
नहिं फोन
नहिं चिट्ठी-पत्री
नहिं कोनो संदेश॥
(भग्य हृदय, निरर्थक जीवन)
टूटल सभटा आश।
कहूने, यो कहू ने
किया मोन अहां के उदास!
ऋतु चक्र मे पतझड़ पाछां,
हरदम अबैछ बसंत।
जे पसंद करैछ अहां के,
तकरे करू पसन्द॥
टूटल हृदय, हम पुनि जोड़ब,
फेकि कऽ प्रेमक पास।
कहू ने यो कहू ने,
किया मोन आहां के उदास!
पतझड़ वितल, बसंत पियासल,
आहांके निमंत्रण खास।
दूधक पाकल छी बिलाड़ि हम
फुकि-फुकि करब विश्वास॥
मानू ने, यो मानू ने,
हमहिं आहां के ओ सांस।
मानै छी ऐ मानै छी,
अहिं हमर जीवनक खास।
(अहीं हमर जीवनक खास)

संपर्क : द्वारा -प्रो. ए. पाठक
जीएस कालोनी, फटाशिल, गुवाहाटी
मो. : 98640-65553

सहयोगी पत्र-पत्रिका

(1) **मैथिली अकादमी पत्रिका**
g§mXH$: aËZoída àgmX og´h
मैथिली अकादमी, शिवपुरी, पटना-23

(2) **घरह्नबाहर** (त्रैमासिक)
संपादक : **उदयचन्द्र झा 'विनोद'**
चेतना समिति, विद्यापति मार्ग, पटना

(3) **अंतिका** (त्रैमासिक)
संपादक : **अनलकांत**

(4) **समय-साल** (मासिक)
संपादक : **शरदिन्दु चौधरी**
मनोरमा प्रकाशन, रोड नं. 6,
राजीवनगर (दच्छिन), पटना - 24,
(PmaIS>H$_¡{Wbr àhar)
g§mXH$: lranYm H$\$U
{gbS>rh, Xn_noXanwaamoS>, mo. : AnB©EgJE .
{Obm : YZ-nX•4 (PmaIS>)

(6) {_{Wbmgwa{^ (Ì¡_m{gH$)
g§mXH$: {H$emoaHw$_ma Pm {g¨ŠH$Z
A½Ha{eg_{V, -hoS>r, Xa^S>m

(7) भूमिजा
({_{Wbm n[afX ^mJbnwa H$ à_wI n{ÌH$m)
g§mXH$ • S>m. ào_eH$a gh
G$Mn`Z24, amYmanZr {gYmamoS>, ^mJbnwa•812001

(8) भोरूकवा (_m{gH$)
g§mXH$•A_aZmW Pm "^maVr'
1/gr., HmHo$íoda Vebm boZ, dmbr, hmdS>m•711201

(9) मैथिली संदेश
g§mXH$•S>m. YZmH$aR>mHw$a
g§H$•A{Vam`Ì>r`_¡{Wbm n[afXH$m ìm`
gw^mf Mm¡H$, O`ZJa ({_{Wbm)•847226

(10) गामघर (gmËVm{hH$)
g§mXH$•am_^amog H$m{S>"^«a'
g§H$ •1/555 gañdVr gXZ, OZH$nwaYm_ (Zomb)

(11) श्री मिथिला
(dm{UpÁ`H$, AmJ¡Úmo{JH$ Edß
gm¡hmX©`rUÇ> ZmW©_¡{Wbr_m{gH$)
g§mXH$•_hoÝÐ hOmar
N>E, ŠbmB^amo, 5 dm§ Vebm, H$_amZ§. 6/16,
H$mobH$mVm•700001

(12) कर्णामृत (Ì¡_m{gH$)
g§mXH$: amOZ§XZ bmb Xmg
6/28, grAmB©Q>r {¶pëS>¨J
16, ~mJ_mar boZ, H$mobH$mVm•70054

(13) रचना (Ì¡_m{gH$)
g§mXH$: {dídZmW
¡{Wbr aMZm§M, gmo_ZmW {ZH$oV
ew^§H$anwa, Xa^§Jm•846006

(14) आरंभ
g§mXH$: amO_mohZPm
gm{dÌr H$m°{Q>a, K¥$VmH$mQ>amoS>, nQ>Zm • 80006

(15) भारती मंडन
g§mXH$: H$oXmaH$mZZ, {H$emoZH$m°{Q>a, gwnm¡b•852131

(16) बागमतीदामोदरटाइम्स (Ì¡_m{gH$)
àYmZ g§mXH$: n§MmZZ
~r. •7, àJ{VMº$a, a_oe VZJa
H$m°_{e©`b H$m°åßboŠg, ZB© {Xëbr•110008

(17) **मिथिला दर्शन**
ए-132, लेक गार्डेन, कोलकाता-700045

(18) **उलुपी**
ई- 404, प्रशांति प्राइड अपार्टमेंट,
तरुण नगर रोड, गुवाहाटी-81005
फोन : 9435049631



पावनि - तिहार

तारीख		दिन	तिथि/पावनि
31 मार्च	'10	बुधवार	प्रथम बैशाख कृष्ण पक्ष
9 अप्रैल	'10	शुक्रवार	भदवारंभ
10 अप्रैल	'10	शनिवार	वरूथनी एकाशदी
11 अप्रैल	'10	रविवार	प्रदोष व्रत
14 अप्रैल	'10	बुधवार	अमावस्या सतुआईन भदवा समाप्ती रेवती
15 अप्रैल	'10	गुरुवार	जूड़ि शितल
15 अप्रैल	'10	गुरुवार	मलमास (पुरुषोत्तम मास) आरंभ
24 अप्रैल	'10	शनिवार	एकादशी
26 अप्रैल	'10	सोमवार	प्रदोष
28 अप्रैल	'10	बुधवार	पूर्णिमा
6 मई	'10	गुरुवार	भदवारंभ
9 मई	'10	रविवार	एकादशी
11 मई	'10	मंगलवार	प्रदोष भदवा समाप्ती
14 मई	'10	शुक्रवार	अमावस्या मलमास समाप्ती
16 मई	'10	रविवार	अक्षय तृतीया
24 मई	'10	सोमवार	एकादशी
25 मई	'10	मंगलवार	प्रदोष
27 मई	'10	गुरुवार	पूर्णिमा बैशाख समाप्ती
2 जून	'10	बुधवार	भदवारंभ
8 जून	'10	मंगलवार	एकादशी भदवा समाप्ती
9 जून	'10	बुधवार	प्रदोष
12 जून	'10	शनिवार	वट सावित्री अमावस्या
22 जून	'10	मंगलवार	निर्जला एकादशी
23 जून	'10	बुधवार	प्रदोष
26 जून	'10	शनिवार	पूर्णिमा

प्रस्तुति : पं. देवनारायण झा
हनुमान मंदिर, भजनका भवन, दिसपुर,
गुवाहाटी, (मो.) 9864444251

कथा

प्रेम न हाट बिकाय

प्र दी प बि हा री

गजेन्द्रकें गप भ' गेल रहैक। मेम साहेब तँ पहिनेसँ मुस्कियाइत छलीह। हुनका मुस्कियाइत केओ नहि देखने रहनि। ओ गजेन्द्रकें फोन परक गप सुनि मुस्किाइत छलीह। मुदा, मोने-मोन तामस सेहो उठनि। अपन चालिसँ बाज नहि आओत गजेन्द्र। गप भेलाक बाद मलिकाइनकें मुस्किआइत सभ देखलकनि। मढ़ौतसँ झाँपल मुह पर मुस्कुराहटि देखब साँचे बड़ आनन्ददायक होइत छैक। गजेन्द्रक गप सठलैक आ मलिकाइन घिरनी भ' गेलीह। भनसाघरक काजमे लागि गेलीह।

मलिकाइन पहिनहुँ घिरनी होइत छलि। प्राय: सदिखन घिरनीए जकाँ काज करैत छथि, मुदा जहिया फोन पर गप करैत सुनैछ, घिरनीक स्वर मधुर भ' जाइछ।

मेम साहेब पुछलनि गजेन्द्र, 'आइ ककरा बनौलियैक अछि ठाकुर? के आबि रहल अथि?'

'निशांत सर आबि रहल छथि।'

निशांतक नाम सुनि मेम साहेबक मोन आदरसँ भरि गेलनि। आन समय रहितैक तँ फज्झति करितथि गजेन्द्रक। अनेरे हठ करैत छैक मलिकाइनक संग। ठाकुरक आगमन बेसाहि लेत आ सम्हार' पड़तनि हुनका दुनूकें। बजलीह, 'सरकें तँ रैलीक काज लेल अयबाक छनि। दोसर हुलिमालि किए बेसाहि देलही गजेन्द्र,

सिन्हा साहेब ड्राइंग रूममे पैसैत बजलाह, 'केहन हुलिमालि? गजेन्द्र फेर कोनो उकट्ठी कयलकै-ए मलिकाइनक संग?'

'ठाकुर आयबाक घाटि तँ फेनि देलकै-ए। आब जा धरि ठाकुर आओत नहि, बड़ी पकबैत रहतैक मलिकाइन।' मेम साहेब बजलीह।

'अहाँ रहबे करब कतेक काल? सी. एम. हाउसमे महिला प्रकोष्ठक बैसार आ तकर बाद रैलीक तैयारीक समीक्षा। दिन तँ एहिना ससरि जायत अहाँक। साँझ धरि तँ निशांत सर आबिए जयताह।' बजलाह साहेब, 'आ हमहूँ कोम्हरो चलि जायब। मलिकाइनक पकमान चीख' ले'



थोड़े रहब फ्लैट ओगरने। जानय मलिकाइन, जानय ठाकुर।'

दुनू प्राणी भानसघरसँ मलिकाइनक हँसी सुनलनि।

मलिकाइन ओहि घरक नौड़ी अछि। मेम साहेब नैहरसँ आयलि अछि।

जखन राजधानीक एहि फ्लैटमे रहबाक बात स्थिर भ' गेलैक, तँ मेम साहेबक पिता संग क' देने रहथिन पिता कहने रहथिन पुत्रीकें, 'तोरा दुनूक वियाहमे क्रांतिकारी डेग नीरजक भेलनि अछि। लोक हुनके समाज–जातिसँ बारतनि। हुनके आलोचना होयतनि जे मैथिल कायस्थ एकटा दुसाधिनसँ वियाह क' लेलनि। हुनका अपन पीठ सक्कत कर' पड़तनि। सोझाँमे केओ नहि कहतनि। मुदा...' किछु थम्हैत पुन: बजलाह, 'तोहर अपन राजनीतिक कैरियर सेहो छह। ओकरा सेहो देखबाक छह। एहना स्थितिमे घरक काम–काज ले' ई ठाकुरक कनिया बेसी सहायक होयतह। एकरो मोन बन्हयतैक तोरा सभक संग। गाममे जे अनेरो लोक समसं पुछैत रहैत छैक जे कहिया औतैक ठाकुर? कहिया खतम हेतैक भारत–पाकिस्तानक लड़ाइ? से सभ तँ बन्न भ' जयतैक एकर। ओत' रहत, किसिम–किसिम के लोक सभकें देखत। मोन बहटरि जयतैक।'

मेम साहेब मलिकाइनक मादे सोच' लागल रहथि। मुदा मोनमे पुन: पिताक गप अभरलनि, 'सभसँ पैघ बात छै प्रेम! एहि बातकें गिरह बान्हि क' राखिह'। जें प्रेम तें ने नीरजसँ तोहर सम्बन्ध भेलह। तोरासँ वियाह क' नीरज कोनो सरकारी सुविधाक स्वार्थ नहि ने पोसलनि। सभ दृष्टियें भरल–पुरल। मात्र प्रेम ने जे बान्हलकह तोरा दुनूकें। तें खियाल राखियह जे प्रेमक ई बन्धन नञि टुटय।'

मेम साहेब मोनहि मोन पिताकें आश्वस्त कयने रहथि। हुनका मोनमे पुन: मलिकाइन अहुरिया काट' लागल रहनि।

एकहत्तरिक लड़ाइमे ठाकुर मारल गेल। ठाकुर माने मलिकाइनक वर। गाममे सूचना अयलैक। मात्र सूचना। लोक सभ मलिकाइनक चूड़ी फोड़बा ले' अपस्याँत भ' गेल। सिन्नुर पोछ' ले' उताहुल। मलिकाइन ओहि समय जुआन छलि। बालो बच्चा नहि भेल रहैक। अड़ि गेल छलि। कहाँदन कहने छलि, 'अनेरो मरि गेलैक ठाकुर। ठाकुर मरिये ने सकै हय। ओ गछि क' गेल हय जे हमरा गोलघर कीन देत।' आर बहुत रास गप सभ बाजलि छलि मलिकाइन।

मुदा गामक लोक सभ नहि मानने छलैक। रौदमे नारिकेरक तेल घमाओल गेलैक आ मलिकाइनक सीउथकें रगड़ि–रगड़ि क' राजस्थान मरूभूमि बना देल गेलैक। लोढ़ीसँ नहि फूटल रहैक चूड़ी। लोढ़ीसँ मारलाक बाद जखन नमरि जाइक तखन लोक अखियासलक जे प्लास्टिक चूड़ी पहिरने अछि ओ। तखन ओकरे घरक नहरनीसँ काटल गेलैक चूड़ी। कतोक ठाम हाथो चछा गेल रहैक। मुदा तैयो मलिकाइन मान' ले' तैयार नहि जे ठाकुर आब कहियो नहि ओतैक। ओ ठाकुरक प्रतीक्षा करिते रहलि।

लोक कह' लागल रहैक जे मलिकाइन सनकि गेलै–ए एखनो धरि तेहने बात कहैत छैक लोक सभ।

कहाँदन क्षतिपूर्तिक कोनोटा आवलम्ब नहि लेलकि मलिकाइन। बाजलि रहैक, 'हम ओकरा मुइल बुझिते ने छियै, त कथी ले' लियौ ओकर पाइ–कौड़ी। ऊ त' औतै आ हमरा पटना कीन देतै। जहिया पटना घुमेने रहै तहिये कहने रहै जे कमाय दौ ने ... एकरा रानी बना देबै ... मलिकाइन बना देबै ... पूरा पटना कीन देबै एकरा।' सचिवालयक गेट पर शहीद सभक फोटो देखि क' मलिकाइन पुछने रहैक जे ई कथीक दोकान छै? ताहि पर हँस' लागल रहै ठाकुरबा आ ओकरा कहने रहै जे पियोर देहाती छही तोहूँ। वैह कहने रहै जे ई सचिवालय छै ... सेकरेटेरियट। आ भरोस देने रहै ते जखन पटने ओकर भ' जेतै त' सचिवालय ओकरे हेतै ने। जकरे घर तकरे ने चिनवार।

रिक्शे पर दुलारसँ बाजलि छलि मलिकाइन, 'मलेटरी के नोकरी खतरना होइ हइ। सम्हरि क' नोकरी करतै।'

ठाकुर कने सटैत कहने रहै, 'सै चिन्ता नञि करौक। हम चटपटिया हजाम छियै। ककरो हाथ लगबै से ... जखने कोइ निशाना बनेतै कि हम ससरि क' दोसरके ओलाड़ि देबै।'

जखन सौंसे गाम ओकरा बहताहि कहि देने रहैक, तखन मेम साहेबक माता-पिता ओकरा प्रश्रय देने रहथि। एहू बातकें ल' क' गाममे उधबा उठल रहैक। जाति सभ मलिकाइनक भैंसुरकें कतोक प्रकारक बात सभ कहलकै। मुदा ओकर भैंसुर मोन सोंठ क' लेने रहय। बाजल, 'जखन बताहे हइ त' कोन ठेकान? दुसाधक पानि पीअए कि हलखोरक! हमरा की? भाइ चलि गेल। छातीमे मारली मुक्का। एको गो पाइ हाथ नञि लागल। एकरा रखने की परापत? खाली बुतात चलाउ एकर। मेन्ड कहलमे हेबे ने करइ एकर, काजो की करतै।'

'ज' कोनो ऊँच-नीच भ' गेलौ त' ...'

'से नञि भ' सकै हइ।' बाजल मलिकाइनक भैंसुर, 'एकरा स' ककरो कोनो परापत नञि भ' सकै हइ। हम जँचने छियै से।'

से मलिकाइन मेम साहेबक संग राजधानी आबि गेलि। गामोमे मेम साहेब आ हुनक भाय-बहिन सभ चौल करथि मलिकाइनक संग ... ठट्ठा करथि ... हुनकालोकनिकें मलिकाइन बताह नञि छै, बेसुधि सन छै। चेतना छै एकरामे। तोरा बाबूक सोझाँ आइ तक नञि भेलौ। घोघ तननहि रहैत छनि...।'

पहिने मलिकाइन नहि कहैत छलैक ओकरा। राजधानीक फ्लैटमे अयलाक बाद सिन्हा साहेब स्वागत कयने रहथिन, 'सुनू ठकुराइन! एकरा अपन घर बुझू। हम सभ अहाँक धीये-पूता सन छी। कोनो बातके दुख-तकलीफ होयअ तँ बाजी। दुख नहि मानी।'

मढ़ौत काढनहि बाजलि ओ, 'अबिते-अबिते एगो दुख हो गेल नेमान!'

'की?' मेम साहेब गंभीर भ' गेलीह।

'ठाकुरबा हमरा कहने रहै जे मलेटरी स' एबै त' पटना कीन देबौ। मलिकाइन बना देबौ। गोलघर कीन देबौ।' कने बजैत पुन: बाजलि, 'आर बात त' ठकुरबा औतै त'... मुदा हमरा अहाँ आउर ठकुराइन नञि कहू।'

'तँ की कही?' सिन्हा साहेब पुछलनि।

सकुचाइत बाजलि ओ, 'मलिकाइन।'

आ ओही दिनसँ ओ मलिकाइन भ' गेलि।

समय पर समयक पथार लगैत गेलैक। सिन्हा साहेबक ओहदा बढ़लनि। मेम साहेब सत्तारूढ़ पाटीक महिला प्रकोष्ठक प्रदेश अध्यक्ष भ' गेलीह। बाल-बच्चा सभ छेटगर भेलनि। मलिकाइनक बयस बढ़लैक। बयसक संग ठाकुरक अएबाक आस सेहो बढ़लैक।

एहि बीच मलिकाइन मन:स्थिति संतुलित रखबाक लेल गजेन्द्र बरोबरि प्रयोग कर' लागल। प्रयोग हुनकालोकनिकें आनन्दित करनि ... तनाओमुक्त करनि। मुदा बेसी काल तनाओग्रस्त भ' जाथि ओ सभ। घरक संतुलन लेल बिनु चाहितहुँ अंगेज' पड़नि। हस्तक्षेप कर' पड़नि।

जहिया कहियो मलिकाइनक मोन उदास देखय गजेन्द्र। फोन पर एकभगाह गप शुरुह क' दिअय, 'ठाकुर जी! मलिकाइन नीके छथि। कहिया अयबै अहाँ। पाइ-कौड़ी लइए क' अयबै? सैह बचि क' आयब। सावधानी स'। आइए साँझमे पहुँचब एत' आउ! हँ, हम कहि देबनि मलिकाइनकें।'

मलिकाइन एहन गप्प सुनय वा ओकरा सुनायल जाय। तकर बाद प्रफुल्लित भ' जाय। भनसाघरमे नीक-निकुत बनायब शुरु क' दिअय। लगै जेना घरमे घिरनी लागि जयतैक। बेर-बेर मेम साहेबकें पुछनि, 'दाइ! साँझ कखन हेतै?' कखनो क' गजेन्द्रकें कहनि, 'रे नुनू! फ्लैट के बाहर रस्ते पर रह। नेने अबियही ठकुरबाके। ओकरा पेरा नञि देखल हेतै।'

आन दिन गजेन्द्रकें नीक बोल नहि कहय मलिकाइन। गजेन्द्रो कोनो-कोनो बात पर टोनि दैक। दिक भ' क' मलिकाइन कहैक, 'हम त' घरके मलिकाइन छियौ आ तों के? नेमान के बहरिया टहला। सेहे ने।' आ बहुत रास बिखिन्न-बिखिन्न के मौगियाही गारि सुन' पड़ैक गजेन्द्रकें। गजेन्द्र हँसैत रहै छल। सिन्हा साहेब हँसैत रहैल छलाह। मेम साहेब डाँटि दै छलखिन, 'नञि मलिकाइन! मुह खराप नहि करी।'

आ साँझ खन जे आगन्तुक आबथि ताहिमे किनको सिन्हा साहेबक घरमे ठाकुरक नाटक कर' पड़नि।

ठाकुर सोफा पर बैसल रहैत छलाह। साहेब, मेम साहेब, बाल बच्चा आ गजेन्द्र हुनका घेरने। गप-सप करैत। मलिकाइन भनसाघरक कोन्टा लगसँ एकटक ठाकुरकें तकैत। बीच-बीचमे बजैत। हाल-चाल पुछैत। चूंकि बेर-बेर ठाकुर बदलैत छल तें एकटा गप्प तँ अबितहिं मलिकाइन बाजय, 'सरधुआ मलेटरी केहन निरदैया भ' गेलै। कते काज करबै छलै। मुहो चिन्ह' जोग नहि रह' देलकै।' तकर बाद भोजन-छाजन। खूब मोनसँ किसिम-किसिम पकमान ठाकुरक संग सभ पाबय। मलिकाइन परसय। सूत' सँ पूर्व ठाकुरकें बिदा होयब आवश्यक। ठाकुरकें बिदा होइतहि मलिकाइन घेरि लैक, 'एते बरख पर अयलै आ आब कत' जाइ हइ?'

'इहे नीच्चे स'। कने पान-सुपारी खेने अबै छी।'

'नहि, बैसो। एत्तहि मँगा दै छियै।' पुन: बाजय मलिकाइन, 'कत' गेलही रे गजीनरा! पान-सुपारी आनि दही।'

गजेन्द्रकें आब' मे देरी होइक तँ गारि पढ़' लागैक मलिकाइन, 'रे बपखौका! नेरहाक नाती! जो ने! पान सुपारी आनि दही ठाकुरके।'

आ गजेन्द्र ड्राइंग रुमसँ बाहर भ'जाय।

ठाकुरक पाट खेल' बला लें' ' पराभव। कोना छूटत एहि फाँससँ। मलिकाइन पुछैक, 'पाइ कौड़ी अनलकै कि नञि मलेटरी स'। कहिया कीनतै गोलघर?' पुन: कने स्थिर होइत उलहन देब' लगैक 'ई सब दिन मलेटरी ओगरने रहतै, त' किना जेतै पटना? किना जेतै गोलघर? दोसरो के कथू सुधि-बुधि हइ कि नञि।'

की उतारा देत बनौआ ठाकुर। कोनो-ने-कोनो बहन्ना बना क' फ्लैटसँ बहार होइ छल ई ठाकुर सभ। एहिमे साहेब-मेम साहेब सेहो बनौआ ठाकुरकें मदति करथि। कखनो क' भोजन क' टहलबाक बहन्ना क' पड़ा जाय ठाकुर। आ रातिमे अबेर धरि मलिकाइन ड्रइंग रूम केर दुअरि लग ठाकुरकें घुरबाक प्रतीक्षामे बैसलि रहि जाय। मेम साहेब परबोधथि। मलिकाइनकें उठा क' ओकरा कोठरी दिस ल' जाथि। कहथि, 'ठाकुरक कोनो दोष नञि छै। गोलघर आ पटना कीन' ले' बहुते पाइ चाही ने! तें नञि रहै छह। अपन धूआ देखा क' चलि जाइ छह।' मलिकाइन मेम साहेबक बातसँ आश्वस्त भ' जाय। संतोष क' लिअए आ बाजय, 'साँचे चपटिया हजाम छै। हाथ लाग' स' पहिले ससरि जाइत छै।' कने थम्हैत पुन: बाजय मलिकाइन, 'मुदा अइ बेर कने बेसी दुबरायल लगलै।'

एहि स्थितिक आवृत्ति प्राय: दू-तीन मास पर होइत छैक सिन्हा साहेब घरमे। एत बेर ठाकुरकें अयलाक बाद प्राय: दू-तीन मास धरि मलिकाइनक मन:स्थिति ठीक रहैत छैक। प्रतीक्षारत। तकर बाद नहि अयबाक कारणें ठाकुरके सराप' लगैछ मलिकाइन, तँ गजेन्द्रकें लगैक जे किछु खेलबेल जरूरी छैक आ ओ क्रियाशील भ' जाय।

सभ मोकड्डीलमे ठाकुरक पार्ट कयनिहार बदलैत रहैछ। एक बेरक ठाकुरकें जखन मलिकाइन पुछलकि जे पाइ कौड़ीक की हाल तँ

Òã¡UâÍéÙÙç¦æÐÓ ÕæÁçÜ¥ô, ·¤ãUÍéÙ Áð ×çÜ·¤æ§Ù ·¤ãñU ãU§ Áð ¥æçÕ Áæ§·¤Ð §ü ÜÇ¸æ§-ÌÇ¸æ§ Ùè·¤
Ùç¦æ ãUô§ ãU§Ð ª¤ ¿çÜ ¥æÕñÐ ãU×ÚUæ ÜðÓ »ôÜƒæÚU ¥æ ÂÅUÙæ ·¤èÙÓ ·ð¤ ·¤ôÙô ÕðªÚUÌæ Ùç¦æ ãU§ÐÓ
çâ‹ãUæ âæãðUÕ âæÈð¤ Ù·¤æçÚU »ðÜæãU, ÒU§ü âÖ Ùçã ãUôØÌ ã×ÚUæ ÕéÌð´Ð ¥æ ¥ãê¡U…ÐÓ »Áð‹¼ý âéÙñÌ ÀUÜÐ
¥ô·¤ÚUæ °·¤ÅUæ ¥æÚU ¥ßâÚU ãUæÍ Ü»ÜñÐ ×éÎæ ¥ô âô¿Ø Áð ·¤·¤ÚUæ È¤ôÙ ·¤ÚUÌ ¥õ? âæãðUÕ
âôÛææâ¡ ãUçÅUÌð Ùð ÀUçÍÐ âæãðUÕ·ð´ »ðÜæ·¤ ÕæÎô Èé¤çâØô ·¤·¤ÚUæ È¤ôÙ ·¤ÚUÌ? Ùçã ¥ØÙð ·¤è ©UÌæÚUæ ÎðÌ
×çÜ·¤æ§Ù ·ð¤? ÌÍÙçã ¥ô·¤ÚUæ çÙàææ´Ì·¤ ¥æ»×Ù·¤ ÕæÌ ×ôÙ ÂÇ¸ÜñÐ

ओ उतारा देलक गोलघर आ पटना कीन' ले' पाइ गजेन्द्रक नामे पठा चुकल अछि। ओ रजिष्ट्री कराब' आयल अछि। मलिकाइन प्रफुल्लित भ' गेलि। ओ गजेन्द्रके सरापलकि, 'रे नेढ़हाक नाती! हमरे पाइ ल' क' तों बाबू साहेब! जखन हमर लोक पाइ पठौलकौ त' हमरा किए ने देलें पाइ! हमरे पाइ ल' क' अपन टेंट गरमेलें? ला निकाल पाइ।'

सिन्हा साहेब बिच्चहिमे बजलाह, 'गजेन्द्र जे गाममे पक्का मकान बनलकै-ए से ...?'

गजेन्द्र दिस झपट्टा मारलकि मलिकाइन। कोठरीमे उधबा मचि गेलै। गजेन्द्र एहि कोनसँ ओहि कोन। एहि क्रममे ठाकुरकें सुयोग भेटलनि। पड़यलाह फ्लैटसँ। गजेन्द्र सेहो पड़ायल। आबि क' बेसमेंट बला अपन कोठरीमे पैसि गेल आ केबाड़ बन्न क' लेलकै।

मलिकाइन ठाकुरकें ताक' लागलि। मेम साहेब उपराग देलखिन जे पाइक लेल जे गजेन्द्रसँ झंझटि कयलहक तें ठाकुरक बहरा गेलह। तामसे।

मलिकाइन बाजलि, 'झुट्ठे दाइ! ठाकुरबा हमर पर तमसाइए ने सकै हय। कहली ने, कहै जे चटपटिया हजाम छी, ककरो हाथ लाग' स' पहिने ससरि जेबै। तेजगर छै। कहाँ दन लोअर परेमरी तक पढ़ने हइ। चंसगर रहै पढ़' मे। सब बात बूझि गेल हेतै तखन गेल हेतै?'

सिन्हा साहेब पुछलनि, 'कोन बात?'

'इहे जे गजीनरा सबटा पाइ बैमानी क' क' अपन कोठा बना लेलकै त' काल्हि कथी ल' क' रजिस्ट्री करौतै पटना आ गोलघर। आ हमरा गछने हइ जे तोरा ई दुनू चीज देबौ। ताही लागी फेरो चलि गेलै मलेटरी मे पाइ कमाब'। किछु थम्हैत पुन: बाजलि, 'आब त' ओत्ते पाइ जुगत' मे बहुत दिन लागि जेतै। जो रे बैमनमा गजीनरा! कोंढ़ी फुटतौ। तोरे कारण भरि मन दैखियो ने सकली लोक के।'

मेम साहेब तनाओग्रस्त भ' गेलीह। तथापि परबोधि क' सुतौलनि मलिकाइनकें।

कारगिल युद्ध शुरुह भ' गेल रहैक। मीडिया पैसि गेल छल युद्धमे। मलिकाइनक दिनचर्या बदलि गेलैक। पहिने घरक काज धंधासँ भ' एक बेर क' गजेन्द्रकें सरापय वा ओकरासँ सोझा-सोझी बतकही कर' लागय। आब काज-धंधासँ निश्चिंत भ' क' टी.वी. मे मात्र युद्धक समाचार आ प्रचार सभ देख' लागलि। भारतीय फौजक शौर्यक बखान देख' लागलि टी.वी. पर। देखैत-देखैत कखनो क' बड़बड़ा उठय, 'मार ठाकुरबा! मार! बाह रे बहादुर! दुश्मन के कखनो छोट नञि बुझ। मार! वाह रे, हमर चटपटिया हजाम!'

कारगिल युद्धक समाप्तिक बाद किछु दिन धरि शांत मलिकाइन। चुपचाप घरक काज धंधा करय आ धीया-पूतामे लागल रहय। कहियो काल सिन्हे साहेब सभ ठाकुरक चर्च करथि, तँ बाजय, 'पाइ नञि जुगतायल हेतै तें नञि अबै हय।'

टी.वी. देखबाक हिस्सक भ' गेल रहैक मलिकाइनकें। टी.वी. के जे बात नहि बुझय से घरक धीया-पूता सभसँ पूछय। धीया-पूता कखनो क' साँचो बता दैक आ कखनो क' चौलमे फुसियो कहि दैक। मुदा दृश्य बुझ' लागलि छलि मलिकाइन। गोधरा आ गुजरात कांडसँ ल' क' वर्ल्ड ट्रेड सेंटर आ अमरीकाक तालिबान पर आक्रमणक संग लादेनक खोज-खबरि हेतु बपराहटि कटैत फौजी सभक साक्षी रहलि अछि मलिकाइन।

इराक पर अमरीकाक हमलाक दृश्य टी.वी. पर देखलाक बाद उदास होम' लागलि मलिकाइन। दूइए-तीन दिनक बाद सिन्हा साहेबकें कहने रहनि, 'नेमान! कने मलेटरी में ठाकुर के फौन करथिन ने।'

हँसी लगलनि सिन्हा साहेबकें, 'से किएक?'

'हँसथुन नञि।' बाजलि ओ, कहथुन जे मलिकाइन कहै हइ जे आबि जाइक। ई लड़ाइ-तड़ाइ नीक नञि होइ हइ। ऊ चलि आबै। हमरा ले' गोलघर आ पटना कीन' के कोनो बेगरता नञि हइ।'

सिन्हा साहेब साफे नकारि गेलाह, 'ई सभ नहि होयत हमरा बुतें। आ अहूँ...।'

गजेन्द्र सुनैत छल। ओकरा एकटा आर अवसर हाथ लगलैक। मुदा ओ सोचय जे ककरा फोन करत औ? साहेब सोझासँ हटिते ने छथि। साहेबकें गेलाक बादो फुसियो ककरा फोन करत? नहि अयने की उतारा देत मलिकाइन के? तखनहि ओकरा निशांतक आगमनक बात मोन पड़लै।

प्रदेशक महिला प्रकोष्ठ दिससँ अमरीका द्वारा इराक पर आक्रमण केर विरोधमे रैलीक आयोजन रहैक। मेम साहेब अहीमे व्यस्त छलीह। निशांतकें नारा, पर्चा आ मेम साहेबक लेल भाषण लिखबाक छलनि। भाषणक विषय छल- 'युद्धक परिणाम आ महिला दंश'। बुजुर्ग छथि कवि निशांत। संघर्षशील कवि कहैत छथि स्वयंकें। बयस साठिक लकधक। तें साहेब आ मेम साहेब गोड़ लगै छथिन हुनका। साँझ धरि अयबाक संभावना छनि।

सिन्हा साहेबकें दोसर कोठरीमे गेलाक बाद गजेन्द्र कवि निशांतकें ठाकुर बनौलक आ फोन कयलक।

मलिकाइन बेर-बेर मेम साहेबकें पूछि जाइक दे की बनतैक? कोन-कोन पकमान? माछ-मासु?

मेम साहेब स्वयं रैलीक कारणें व्यस्त छलीह। हुनका सी.एम. हाउस दिस जयबाक छलनि। ओ देखलनि जे मलिकाइनक मोन आइ सम्हारमे नहि छैक। ओ बजलीह, 'जे सभ मोन में आब' से बनाबह।'

मलिकाइन बाजलि, 'बनेबै दाइ! बनेबै। सब बेर अपना मोने अबै छलै ठकुरबा। आइ हमरा बजौला पर अबै हइ।' कने थम्हैत पुन: बाजलि, 'दाइ! अपन काज सभ बेरू पहर स' पछिल क' लेबै आ साँझ मे केकरो नञि बजेबै घर मे। आइ ठकुरबा औते। ठकुरबा औतै आ अहाँ नञि रहबै दाइ! त' बुझू से अहाँ स' हम मुहाबज्जी बन्न क' लेब।'

मेम साहेबकें क्रोध भेलनि। आइ फेर ई ठाकुरक प्रकरण किएक शुरुह कयलक गजेन्द्र? एक दिस गुरु गोसाई एक-दिस कुर्थी दाओन। ओ अपने रैली ल' क' फिरीसान छथि। साहेबकें से पलखति नहि छनि। साँझमे समय पर नहि अयने मलिकाइनकें कचोट होयतैक। हिनकेलोकनिक बोल भरोस पर जीबैत अछि मलिकाइन।

कतोक बेर साहेबक मोन भेलनि जे मलिकाइनकें कहि दैथि जे ठाकुर मरि गेल। घरमे सभ अबैछ ओ ठाकुर नहि, मुदा ओ कहि नहि सकथि। लगनि जे मलिकाइन आर बेसम्हार भ' जायति। कतोक बेर गजेन्द्रकों डँटलनि। मुदा ओहो अपन करतेबतासँ बाज नहि अबैछ। हारि-थाकि क' हुनके सभकें सम्हार' पड़ैत छनि सभ।

मेम साहेब आश्वस्त कयलनि जे ओ रहतीह।

कवि निशांत संध्याकाल अयलाह। घर दलमलित भ' गेल। मलिकाइनक पूर्व कथा सभ बुझल रहनि हुनका।

स्वागत-सत्कार भेलनि निशांतक। ठुमकि-ठुमकि क' परसि-परसि भोजन करौलकनि मलिकाइन।

भोजनक बाद सभ गोटें सोफा पर बैसैत गेलाह। जानि नहि कोन गतिएँ मलिकाइन बर्तन-वासन धो-माँजि लेलकि। घरक काज क' मलिकाइन निशांतक सोझाँ ठाढ़ भ' गेलि। ओकरा ठकमूड़ी लागि गेलैक। एकटक तकैत रहलि निशांतकें।

बड़ी कालक बाद बाजि सकलि, 'भने चलि अएलै। लोकबेद स' बढ़ि क' धन सम्पति नञि होइ हइ... गोलघर-पटना नञि होइ हइ।' कने थम्हैत पुन: बाजलि, 'आब अइ ठां स' नञि ने जेतै?'

कवि निशांतक बुद्धि चर' चलि गेलनि। वातावरण शांत छल। निशांत किछुओ उतारा नहि द' सकलाह। सिन्हा साहेबकें लगलनि जे मोकड्रील भारी ने पड़य।

निशांत उठलाह आ कोठरीसँ बाहर होम' लगलाह। हाथ पकड़बाक प्रयास कयलकनि मलिकाइन आ कि बिच्चहिंमे डपटलनि मेम साहेब। मलिकाइन हाथ नहि पकड़ि सकलि। निशांत बजलाह, 'जाइ नञि छी। पान-सुपारी खेने अबै छी।'

मलिकाइन कोनो अवरोध नहि कयलकि। ओ गजेन्द्रकें कहलकि, 'गजीनरा! ल' जाहि अपने जौरे। पान-सुपारी खुआ क' नेन अबही।'

गजेन्द्रक संग निशांत कोठरीसँ बहरयलाह आ बेसमेंट बला कोठरीमे सुति रहलाह।

अधरतियामे फुजल कोठरी आ मलिकाइनकें नहि देखि तनाओग्रस्त भ' गेलीह मेम साहेब। ओ सोझे बेसमेंट बला कोठरी दिस गेलीह। देखलनि।

मलिकाइन बेसमेंट बला कोठरीक केबाड़ लग ठाढ़ि छलि आ बड़बड़ाइत छलि, 'एते बरीस पर अयलै। थाकल-ठेहिआयल हेतै। सोचलियै देह-गोर मे तेल औंसि दीतियै। ताहू जोग नञि बुझलकै हमरा। हम त' नेमान स' फौन करौने रहिये जे गोलघर आ पटना के बेगरता नञि हइ। तइ लागी ई लड़ाइ-तराइ नञि करौक। नञि चाही पाइ कौड़ी। ई आबि गेलै सेहे बड़ी गो बात हइ हमरा लागी।' पुन: किछु थम्हैत बाजलि, 'एते दिन पर अयलै। मोन कथी लागी छोट क' लेलकै। हम कथू मंगबै तखन ने। केबाड़ी कथी लागी थुनने हइ। खोलौ ने केबाड़ी। गोड़-हाथ मे तेल औंसि देबै। ठोहिआयल होतै। खोलौ ने...'

मलिकाइन नूआ माथ परसँ खसि पड़लैक। ओ नूआ सेरिअयबाक उपक्रम कयलकि।

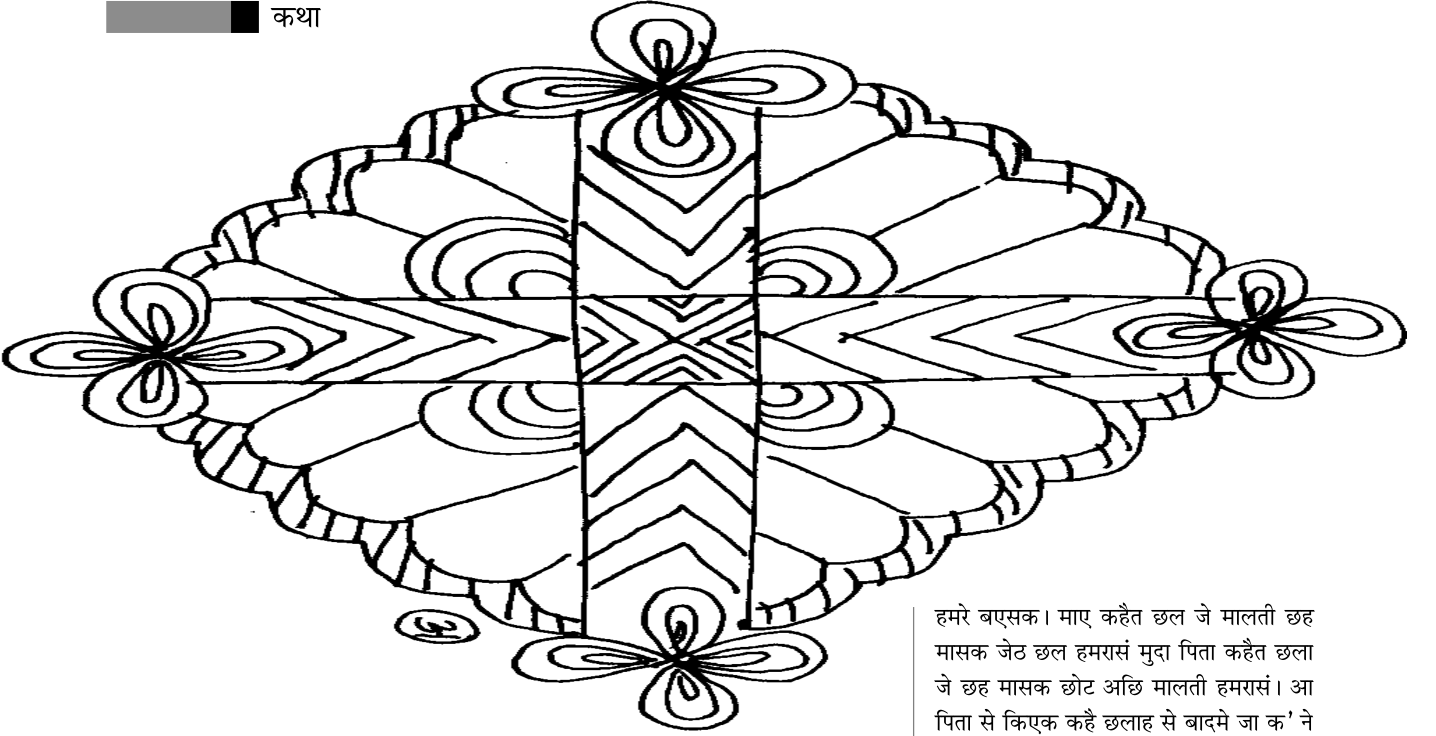
एही क्रममे ओकर नजरि मेम साहेब पड़ि गेलैक। ओकरा हाथसँ तेलक माली खसि पड़लैक। ओ भरि पाँज क' मेम साहेबकें पकड़ि लेलकि। मेम साहेब ओकरा सम्बल दैत सिरही दिस ल' जाय लगलीह। मेम साहेबक करेजमे अपन मूड़ी सटौने सुबकैत-सुबकैत बाजलि मलिकाइन, 'चटपटिया हजाम ससरि गेलै दाइ!'

ओहि राति मलिकाइनक भरि मोन कनने छलि।

प्रात: भेने सिन्हा साहेब आ मेम साहेब देखलनि जे मलिकाइनक मोन हल्लुक भ' गेल छैक। ओ अखबारमे छपल एकटा इराकी महिलाक फोटो धीया-पूताकें देखा रहल छलि आ कहि रहलि छलि जे ई ओकरे फोटो छैक।

अखबारमे छपल फोटो कैप्सन पढ़लक धीया-पूता- 'युद्ध के बाद अपने लापता पति को तलाशती एक इराकी महिला।'

संपर्क : मेनकायन / न्यू कॉलोनी, उलाव / पो.-उलाव / जिला-बेगूसराय (बिहार) पिन- 851134 /
फोन- (06243) 243641 /मो. : 9431211543
ई-मेल : pradipbihari@rediffmail.com/
pradip.kumar@sbi.co.in



तस्कर

गजेन्द्र ठाकुर

शालिग्राममे छिद्र होइत अछि, कारी पाथर मात्र नर्मदामे भेटैत अछि। जमसम गाममे सभ किछु बदलल अछि, ग्रामदेवताक डिहबार स्थानसं ल' क' सभ ठाम मुदा किछु ने किछु लाक्षणिक वस्तु देखिये रहल छी। मुदा हमर गाथाक कोनो लक्षण एतए नहि अछि।

गाछी आ बाध बोन सभटा पतरा गेल अछि। सए बर्ख। बिज्झू आमक ओ गाछी। बीहरि सभसं भरल। भांति-भांतिक चिड़ै-चुनमुनी आ छोट पैघ जीव-जन्तु। नेना रही। जेठसं अगहन खुरचनित्रा लत्ती लग गप करैत हम आ मालती। कहियो फागुन-चैतमे जाइ तं लवङलताक लत्ती लग गप करी। मलकोका, कुमुद, भेंट, कमलगट्टा कन्द, रक्ताभ बिसांढ़क ताकिमे कादो-पानिमे घुमैत हम आ ओ। खुल्ले पएर, कांट-कूसक बीच तड़पान-तड़पि क' कुदैत। आमक कलममे सतघरिया खेलाइत। हम आ मालती। करबीरसं बेढैत अपन काल्पनिक-घर। एकहरा, दोहा, जटाधीक बीआ भरि साल जोगबैत मालती। मालती सेहो होएत हमरे बएसक। माए कहैत छल जे मालती छह मासक जेठ छल हमरासं मुदा पिता कहैत छला जे छह मासक छोट अछि मालती हमरासं। आ पिता से किएक कहै छलाह से बादमे जा क' ने बुझलिऐ।

भरि आमक मास आमक गाछीक दिनुका ओगरबाहीक भार हमरे दुनू गोटेपर छल। मुदा सांझ होएबासं पहिने हमर मामा बछरू आ मालतीक बाबू खगनाथजी कलम आबि जाइत छलाह, रातिक ओगरबाहीक लेल। मुदा हमर सभक गाथाक कोनो लक्षण एतए सेहो नहि अछि। हमर सभक माने केशव आ मालतीक।

मुदा ओहि पक्काक डिहबार स्थान लग की रंगक शालिग्राम हम ताकि रहल छी। छिद्रयुक्त शालिग्राम। एकटा नुका क' रखने छलहुं एत्तै कतहु।

गैंआ सभ धरि खूब खर्चा कएने अछि एहि डिहबारक स्थानक मंडप बनएबामे। पहिने तं किछुओ नञि रहै। राजा जे बनेलक पोखरिक घाट आ तकर कातमे पक्काक मन्दिर सएह। मुदा बेचो पूजा कैयो नञि सकलाह। लाजक द्वारे हमर एहि गाममे आबियो नञि सकलाह।

हम केशव, गाम मंगरौनी, नरौने सुल्हनी, पराशर गोत्र, कवि मधुरापतिक पुत्र।

मालती- माण्डर सिहौल मूलक काश्यप गोत्री खगनाथ झा, गाम जमसमक पुत्री मालती।

खगनाथजी आ हमर मामा बछरूमे भजार लागल। जमसममे हमर मामा गाम। मामागाम धरि सुखितगर, हम सभ तं दरिद्रे। से हम एक मास गरमी तातिल आ पन्द्रह दिन दुर्गापूजासं छठि धरि मामेगाममे रहैत रही। गरमी तातिलमे सपेता पकबासं ल' क' कलकतिया आम पकबा

धरि गाछी ओगरी। आ दुर्गापूजामे खष्ठीसं ल' क' भसान धरि दुर्गापूजा देखी। फेर दीयाबातीमे कनसुपती जराबी आ छठिमे गाम घुरि जाइ। आ बीच-बीचमे तं जाइत रहबे करी।

मालती संगे खूब झगड़ा सेहो होइ छल। चौथामे रही प्राय:। गरमी तातिलमे मामा गामक आमक गाछी गेल रही। कोनो गपपर मालतीसं रूसा-फुल्ली भ' गेल। धरि बौसलक मालतीये। आ बौसबो कोना केलक।

-हम अहांसं घट्टी मानै छी ओहि गपक लेल।

-कोन गप।

-जइ गपपर अहांसं झगड़ा भेल।

आ ओ गप नञि हमरा मोन पड़ल आ ने मालतीकें। मुदा फेर मालतीसं कहियो कोनो गपपर हम झगड़ा नञि केलहुं। वएह मुंह फुलाबए तं हमही पुछिऐ जे कोन गपपर मुंह फुलेलहुं से तं मोन नहिये हएत तखन अनेरे ने झगड़ा करै छी।

गरमी तातिलक बाद दुर्गापूजा आ दुर्गापूजाक छुट्टीक बाद गरमी तातिलक बाट जोहै लगलहुं। से कहियासं से की मोन अछि ?

पिता गाममे बटाइ करथि। मिडिल स्कूलक बाद कोनो स्कूल नहिये रहै आस-पड़ोसमे। संस्कृत पाठशाला सभ बन्ने भ' गेल रहै।

से तातिल बला कोनो बात आब रहबे नञि करए। भरि साल बुझू काजे आकि तातिले। नाना-नानी जिबिते रहथि। माएक लियौन कराबए लेल कियो ने कियो आबिये जाइ छल। हमहुं दू चारि मासमे मामा गाम कोनो लाथे भइये अबैत छलहुं।

गामपर कएक टा समस्या। नञि जानि कोन भांज रहै जे पांजिक रक्षाक गप पिताक मुंहे सुनैत रहैत छलहुं। आ से हमर बियाह मालती संगे भेने टा सं सम्भव, सेहो हुनका मुंहे उचरैत छलन्हि।

मालती हमर संगी मुदा एहि गप-शपसं ओकर हमर दूरी बढ़ि जेकां गेल। जे सहजता हमरा आ ओकरा मध्य छल से खतम होअए लागल। जेना ओकरा देखिते हमर मोनमे पत्नीक छवि नजरि आबै लागल छल, तहिना तं ओकरो मोनमे ने अबैत होएतैक।

हमर गाम आएल रहथि बछरू मामा।

मधुरापति- बछरू आब अहींक हाथमे हमर सभटा इज्जत अछि। खगनाथक पुती केशवक लेल सर्वथा उपयुक्त। सुन्दरि सुशील अछि तं केशव सेहो जबर्दस्त अछि। एक्के बतारीक अछि मुदा किछु दिनुका छोटे अछि मालती। हे। अहांकें तं ई बुझले अछि जे 700 टाका लड़कीबलाकें दए हमर विवाह करा हमर पिता पांजि बनाओल। मुदा आब जमीन जत्था नहि अछि। काल्हि घोड़ीकें चिलम पियाए ओहिपर चढ़ि आएल छलाह पञ्जीक। साफे कहि देलन्हि जे मात्र खगनाथेक पुत्रीसं अधिकमाला बनैत अछि। आ से नहि भेने पुबारिप श्रोत्रियक श्रेणीसं चुत भ' जाएब हम।

बछरू- हम पुछै छियन्हि खगनाथसं। संगी तं छथि मुदा हुनकर मोनमे की छन्हि से वएह ने कहताह।

आ ने जानि किएक प्रेमसं भरि गेल छल हमर मोन। बिदा भ' गेल रही हुनका संगे।

मालती- केशव। तोहर कत्तौ दोसर ठाम बियाह भ' जएतौक तखन हमरासं भेंट कोना होएतौक।

केशव- आ तोहर ककरो दोसरासं बियाह भ' जएतौक तं एहन अनर्गल प्रश्न सभ ककरासं करमे?

मालती- मुदा एकटा गप बुझलहीं। काल्हि तोहर मामा हमर पितासं हम्मर-तोहर बियाहक चरचा क' रहल छलाह।

केशव- तखन।

मालती- नञि, सभटा तं ठीके मुदा तखने दरभंगा राजाक दूत बनि एक गोटे आबि गेलाह आ कहए लगलाह जे राजाक समाद अछि।

केशव- राजाक कोन समाद।

मालती- कियेने गेलिऐ। मुदा हमर पिताकें ओ दूत कहलन्हि जे बेटीक बियाहक चर्च किछु दिन रुकि क' करबाक लेल।

केशव- तोहर सुन्दरताइ तं छौहे तेहने। राजोक नजरिमे तोरा लेल कोनो लड़का अभरल छै की?

मालती- कियेने गेलिऐ।

राजाक मन्त्रीक सवारी खगनाथक दरबज्जापर! दुइये दिनमे कीसं की भ' गेल। ओ दूत जा क' किछु कहि तं नञि अएलै जे खगनाथ अपन बेटीक बियाह लेल धरफरायल छथि। से सतर्की देखियौ। लोक सभ गर्दमगोल करैत। सभ स्वागतमे जुटल। आ हमहुं सभ चीजक जाएजा लैत रही। सांझ होइत-होइत हमर पिता सेहो आबि गेल छलाह। ओम्हर राजाक मन्त्रीक सवारी गेल आ एम्हर हमर पिता माथपर हाथ रखने गुम्म रहि गेलाह। खगनाथ सेहो मौन।

राजा अपन बियाह मालतीसं करबाक प्रस्ताव खगनाथ लग पठेने छलाह। महाराज बीरेश्वर सिंह। कहू तं। अपने चालीससं उपरे होएत आ एहि तेरह-चौदह बरखक बचियासं बियाहक प्रस्ताव। खगनाथक की ओकाति जे ओकरा मना करितथिन्ह।

हमर पिता चिन्तित जे आब पांजि नहि बांचत।

ओहि दिन सांझमे कोनटा लग मालतीसं हमर भेंट भेल। करजनी सन-सन आंखि फुलल, जेना हबोढ़क भ' कानल होअए। की सभ गप केलहुं मोनो नञि अछि। हं आखिरीमे हम कहने धरि रहिऐ जे सभ ठीक भ' जाएत।

जमसममे बीरेश्वर सिंह लेल लड़की निहुछल गेल! जमसम गाममे पोखरि खुनाओल गेल। ओतए मन्दिर बनल जे राजा दोसराक मन्दिरमे कोना पूजा करताह।

मुदा हमहुं रही मधुरापति कविक पुत्र केशव।

बियाहक दिन लगीचे रहै आ दोसर कोनो दिन सेहो नञि रहै। आ ओहि दिन मालतीसं सभ गप भइये गेल छल।

कट्ही गाड़ीमे आगूक चाप आ पाछूक उलाड़, आगांक चाप नीक कण पाछां उलाड़ भेलापर गाड़ी उनटि जाएत। मुदा हम ओहिना गाड़ीकें उलाड़ केने बंसबिट्टी लग मालतीक इन्तजारमे रही।

ओ आयलि आ गाड़ीपर बैसि गेलि। जे कियो रस्तामे देखए से डरे नञि टोकए जे गाड़ी ने उनटि जाइ एकर। एकटा पतरंगी चिड़ै देखि उल्लसित होअए लागलि मालती तं आंगुरसं हम ओकर ठोढ़ बन्न क' देलिऐ।

मालतीकें ल' क' गाम आबि गेलहुं, धोती रंगाइत छल। फेर जे मालतीक पता करबाक लेल आएल रहए तकरा पकड़ि राखल। आ कन्यादान के करतक अनघोल भेलापर ओकरा सोझां अनलहुं जे कन्यादान यएह करबाओत।

सलमशाही चमरउ जुत्ता उतारि धोती पहीरि हम विवाह लेल विध सभ पूर्ण केलहुं। मालतीक सीथमे सिनुर हमरे हाथसं देब लिखल जे रहै।

तकर बाद राजा बीरेशवर सिंह की करताह?

पञ्जीकारकें बजा क' हमर नाममे तस्कर उपाधि लगबाओल। मुदा मधुरापति अपन पुत्रक प्रति गर्वोन्नत्त। बाघक बेटा बाघ। पाञ्जि आ पानि अधोगामी मुदा खगनाथ झा- श्रीकान्त झा पांजि, तस्कर केशवक श्रोत्रिय ओहिठाम विवाह कएलापर श्रोत्रिय श्रेणी विराजमान रहतन्हि।

आ सए बर्खक बाद आइ एहि गाममे कोनो नाटक होएतैक। सुल्ताना डाकू।

आ हम तस्कर केशव, मंगरौनी नरौने सुल्हनी-पराशर गोत्र, कवि मधुरापतिक पुत्र अपन गाथाक कोनो एकटा लक्षण एतए जमसम गाममे ताकि रहल छी। मुदा राजा बीरेश्वर सिंहक वएह पोखरि आ आब ढ़नमनाएल मन्दिल देखै छी, बेचारे घुरि क' लाजे एहि गाममे एबो नहि केलाह।

यएह पोखरि आ ढ़नमनाएल मन्दिर हमर प्रेमक अछि अवशेष।



आकांक्षा

-डॉ. कमला चौधरी

हमर जीवनक बीतल तीस वर्ष की अहाँ आपस कऽ सकैत छी? आइ हमरा आपस कए दिअ, हमर बीतल छिड़िआएल ओ दिन सभ जाहिमे ने तँ मायक कौर भेटल, ने बापक स्नेक छाँह आ ने ओ सभ किछु जकर आकांक्षा प्रत्येक स्त्रीकेँ रहैत छैक।छवि आइ भने पैघ हस्तीकेँ पाबि लेने छथि मुदा अपन बाल्यावस्थाक दीन-हीन स्थिति नहि बिसरि पाबथि। मइटुग्गरि छवि...

तीन वर्षक रहथि तखने पिता मामा-मामी ओतय छोड़ि गेल रहथिन, एहि आश्वासनक संग जे खर्चा-पानि लेल टका-पाई पठबैत रहताह। पठोनहुँ छलाह। दू-चारि मास पर देखियो जाइत रहथिन, मुदा ई क्रम दू-तीन वर्ष तक मात्र चलि सकल छल।

ज्ञान-बोधक संग-संग छवि अपन परिस्थितिकेँ लैत रहथिन,- ''ताहि जाति कोन-जन्मक ऋण खेने रहिऐ। सरधुआ, अपने घर बसा लेलक आ हमरा माथ पर मोटा....।' बजैत-बजैत कखनो कैँ रुकि जाथि। सहानुभूतिवश अथवा मामाक भयवश।

मामा-एहन बात नहि सुनय चाहथि। हुनका हृदय मे छवि लेल असीम स्नेह संचित छल। एहन उपालम्भ लेल पत्नीसँ कतेको दिन बक-झक कऽ लेथि आ एकान्त मे लग वैसा माथ पर हाथ फेरैत विह्वल भऽ उठथि, ''मामीक बात कैँ अधलाह जुनि मानिहेँ। ओ बताहि छौ। छवि, तोँ मोनसँ पढ़। तोँ हमर बेटी छैं। छोट बहिनक एक मात्र निशानी...।'' कहैत-कहैत धोतीक कोरसँ आँखि पोछय लागथि।

मामाक यैह सांत्वना आ स्नेह छविक अमूल्य निधि छलनि। मामीक सभ कटुवचन जेना हृदय-पट परसँ धोखरि जाइक। ओ बड़ मनोयोगसँ मामीक नहेबाकाल नूआ कोचिया राखि देथि आ पूजाक ओरियान करथि। ऑफिससँ मामा अबथिन

तँ हुनकर चप्पल, लूँगी या तौलिया नियत स्थान पर भेटि जानि। मामाक मिनट-मिनटक आवश्यकताकेँ पहाड़ा जकाँ रटि लेने छलीह मुदा तैयो मामीक फटकार जखन-तखन सुनहि पड़न्हि।

सभसँ कष्टकर हुनका लेल ओ क्षण भेल करथि जखन मामी-आँगन आयल कोनो बुलनिहारि स्त्री लग विवाहक चिन्ता करैत कहिथ बैसथि, ''ककर बोझ ककर माथ।''

अपना लेल 'बोझ' शब्द, जेना भीतरसँ केओ चीरि दैथि। ओ लहूलुहान भऽ उठथि। विवाह लेल ओ मामीक बोझ अछि। विवाह एहने बात छैक तँ ओ नहि करतीह विवाह। मुदा मामीकेँ मुँहसँ की कहओ?

एहन समय सीढ़ी घर मे चुपचाप बैसब छवि केँ नीक लागए मुदा रिंकू हुनका तकैत तुरत उपर पहुँचि जाइत छल। सहज होयबाक नाटक करैत नीचाँ आबि जाथि आ मामीक आदेशानुसार काज मे जुटि जाइत छलीह।

एहि सभ बात-विचारक क्रम मे जतय सभ सँ बेसी शांति भेटल करनि से छल हुनक पाठ्य-पुस्तक। स्कूल जयबा-अयबाक बीच कोनो व्यवधान नहि अबैक। मामा आफिस जयबाकाल छविकेँ स्कूल छोड़ैत जाइत छलाह, छवि शुरूए सँ अपन वर्ग मे दोसर-तेसर स्थान पबैत रहलीह। प्रधानाध्यापकपिकासँ लऽ वर्ग शिक्षिका तक हुनक प्रशंसक छलीह।

छवि प्रशंसासँ मामाकेँ बड़ आनंद होनि मुदा ओहि, आनन्दकेँ अपनहि तक सीमित रखैत छलाह। छविक प्रशंसा पर पत्नीक इर्ष्या स्वाभाविक छल- कारण हुनक बेटा रिंकू दू वर्ष सँ मैट्रिक फैल कऽ रहल छलनि। रिंकूक अबंडपनी परा मामा बहुत दुखी होथि, मुदा मायक बेटा धन पर हाथ उठेबाक साहस नहि कऽ पाबथि। दोसर इहो जे रिंकू अभद्रता पर उतरि सकैत छल आ एहि बातक संभावना बेसी छलैक तँ ओ चुप रहल करथि।

समय पाँखि लगौने उड़ैत रहल आ छवि सेहो मान-अपमानक स्वाद चखैत घोटैत बहुत आगाँ बढ़ि गेल छलीह। इंजनियरिंग कॉलेजक अंतिम वर्षक छात्रा छवि अपन भविष्यक प्रति बहुत आशावासन रहथि तँ दोसर दिन मामाक स्वर्गवासी भऽ जायब बेर-बेर कचोटैत रहलनि। छात्रवृत्ति भेटैत रहबाक कारणेँ पढ़ाइमे कोनी व्यवधान नहि आनल मुदा स्नेहक एकमात्र लत्तीक एना सुखा जायब, जीवनकेँ शुष्क बना देने रहनि।

एही बीच मामीक सोनपूत रिंकू एकटा घटना कऽ बैसल। अपन मायक सभ गहना चोरा बम्बई भागि गेल, फिल्म क्षेत्र मे भाग्य आजमाबय। मुदा छौ मासक बाद मुड़ी खसौने फटैहाल स्थित तऽ आपस भऽ गेल रहय। छविकेँ कोनो आश्चर्य नहि भेलनि, कारण शुरूसँ ओकर जे जीवन शैली रहेक ओहि मे यैह होयब सम्भाव्य छलैक।

सपय अपना संग मनुष्यो मे परिवर्तन अनैत अछि आ से मामी बहुत सहज आ छविक प्रति स्नेहिल भए गेल रहथि मुदा एहिसँ छवि पर कोनो असरि नहि पड़न्हि।

छविक पोस्टिंग भागलपुर भऽ गेल छलनि। जाहि दिनक स्वप्न औ देखैत छलीहसे साकार भेलैक। मामा रहतथितँ...। मुदर ओ नहि छलाह आ से अपन कर्त्तव्यक बोध छलनि छविकेँ। हुनका बोझ मानयवाली मामी प्रति महिना मनिआर्डर पाबि आशीषक फुहार करय लगली।

क्वार्टरक ठीक पाछाँ दऽ गंगा बहैत छल ओकर कछेरमे पतिआनी लागत चारि टा अमलतासक गाछ छविक संध्याकालीन सहचरी बनि गेल छल। गाछक नीचाँ बैसि नदीकेँ चुपचाप निहारब हुनका बड़ नीक लागए अदभुत शांति भेटन्हि औतए आ तँ ई हुनक दैनिक जीवनक काज भए गेल रहय।

कहियो कऽ जखन राति बेसी करिया जाइत तँ झुमकी दौड़ल अबैक- 'दीदी, आबहु चलूने। देखियौ कते' राति भऽ गेल । कोनो भूत-प्रेतक छाँह ने लागि जाय।'

छविकेँ हँसी लागि जान्हि। ओकर हाथ पकड़ि ठाढ़ भऽ जाथि आ गर्दनि पकड़ि हँसी करथि, 'भूत पकड़तौ' तोरा, हमरा देखि तँ पड़ा जायत। अच्छा, आई की सभ पकौलैँ अछि?

अहाँक पसिनक मटर पनीर आ आलू-परौठा। खायब तँ हाथ चाटय पड़त। इनाम मे काल्हि सिनेमा शो के छुट्टी देबय पड़त, दीदी।'

'तोरा सिनेमाक चहटि लागि गेलौ अछि। ठहर, काल्हि हम शुकदेवकेँ कहैत छियौ।'

एहि बात पर झुमकी रूसबाक अभियन करय। छविकेँ मानहि पड़ैत रहनि। झुमकी...ऑफिस दरवान शुकदेवक बेटी। साल भरि पहिने विवाह भेल छलै। घरवाला ओही शहर मे ड्राइवरी सिखैत छैक। एखन गौना नहि भेल छलै, तँ छविक आग्रह पर शुकदेव झुमकीकेँ क्वार्टर पर काजक हेतु राखि देने रहए।

झुमकी छविक सखी बनि गेल छल, अंतरंग, जतय बाहरक लोक छविक गंभीर स्वभावक आगाँ कठिनतासँ एक दू वाक्य बाजि पाबथि, ततय झुमकी निधोख भऽ किछु पूछि बैसय, छवियोकेँ नीन लगन्हि। परिवारक नाम पर वैह टा तँ छल।

ओहि दिन ओ बात पूछिए बैसल, जाहिसँ छवि कटैत रहैत छथि।

-दीदी, अहाँ विआह किए ने करै छी?'

छवि चुप भऽ गेलीह। मुदा झुमकी रहय वाली नही।

-'दीदी, अहाँ विआह कहिया करब?'

- ''हम विआह किए करब?। जाहि लेल लोक विआह करै अछि से सभ तँ हमरा भेटले अछि। टाका... पाई...गाड़ी....नोकर.... मकान... सम्मान की नहि अछि हमरा?

विआह मे गाड़ी, नौकर आ मकान कोन प्रयोजन, से झुमकी नहि बुझि सकल आ तँ चुप भए गेलि। छवि बिहुँसैत ओकर गालकेँ थपथपबैत आफिस चल गेल छलीह।

मुदा ओहि राति छवि सहज नहि रहि सकलीह। झुमकीक बात मोनमे होड़ि रहल छलन्हि। ठीके तँ उत्तर देने रहथि। बाल्यावस्थामे जाहि वस्तु सभ लेल तरसल छलीह से सभ तँ प्राप्त भऽ गेल छलन्हि। कथीक कमी अछि जीवन मे?

विआहक बात बहुत अबल स्वरेँ एक दू सहकर्मी सेहो उठौने रहथि मुदा ओ अनसुन कऽ गेल छलीह। आइ बहुत दिन बाद झुमकी जेना घाव खोटि देने होन्हि। तँ की आइ ओकर पश्चाताप भऽ रहल छन्हि? नहि, कथमपि नहि, अपन मार्ग ओ स्वयं बनौने छथि। कोनो बातक संताप मोन मे कहाँ कतुहू छन्हि।

मोन सँ बात हटबैत आफिसक फाइल देखबा मे लीन भऽ गेल रहथि।

दोसरे दिन रिंकू मामीक चिट्ठी लऽ आयल छल। चिट्ठी मे दू बच्चा बला बिधुर, बेरोजगार, पितियौत भाय संग छविक विआहक प्रस्ताव आ चारू धाम तीर्थ करबाक मामीक प्रबल इच्छाक अभिव्यक्ति छल। तीर्थ करबाक मामीक प्रबल इच्छाक स्वीकृति दैत रिंकूकेँ यथेष्ठ पाइ दऽ विदा कऽ देने छलीह। हँ, विवाहक लेल अस्वीकृति सेहो पठा देने रहथि।

छविक ठोर पर विद्रूपति हँसी पसरि गेल छलन्हि। कतेक दरेग छनि मामीकेँ हुनका लेल....।

अनायास पिता केँ सेहो छवि लेल दरेग भऽ आयल छलनि। एकटा युवकक संग दीन-हीन बनल, रोगी शरीरक पूँजी लऽ बेटी ओतय पहुँचि गेल रहथि। किछु नोरक बूँद सेहो खर्च कयलन्हि। बेटीक बनल स्थितिक पर अथवा अपन पश्चाताप

çÂÌæ·¤ çâÚ×æ×ð ×êçÌü Á·¤æ¡ ÆæçÉU¸ ÀUÜèãÐ ¥æ·ý¤ôàæ·¤ Üæßæ ÁðÙæ ÖèÌÚð-ÖèÌÚ ƒæ×ñÌ ÚUãÜÐ ¥æð ç·¤ÀéU Ùð ÕæçÁ â·¤ÜèãÐ ÂØÚ ¼ÕÙð ¥ÂÙ ·¤ôÆÜè ×ð ¿Ü ¥æØÜ ÚãçÍ ¥æ »ðL¤¥æ×ð ×é¡ã ¼æçÕ çâçâ·¤° ÜªÜèãÐ

पर से जानि नहि। पिताक आगमनसँ छविकेँ ने तँ प्रसन्नते भेलनि आ ने आश्चर्य।

अपन क्वार्टरक एक कमरा साफ-सुथरा करबाय पिताकेँ दऽ देने रहथि। हुनक इलाज आ सेवाक व्यवस्था मे कोनो कसरि नहि रखलन्हि। शुरूए सँ परिस्थितिक अनुसार ढलि जयबाक आदति जे छलनि।

ओहि दिन आफिस मे सुकदेव हुनकासँ निवेदन करैत किछु पारिवारिक गप्प कएने छल।

– मेम साहेब, पहुना झुमकीके फगुआ से दू दिन पहिने गौना खातिर जिद्द कएलथिन। झुमकी के 15 दिन खातिर छुट्टी आ एक हजार रूपैया दिती तँ यहो काम सम्पन्न हो जाइत। चौंकि गेल रहथि छवि।

– 'मुदा सुकदेव, झुमकी एखन वयस्क नहि भेल अछि। तीन-चारि वर्षक बाद ओकर गौना करब ठीक रहत। एखन हम ओकर किछु पढ़ाई लिखाई करेबाक सोचि रहल छी।'

छवि बातकेँ टारि देने छलीह।

डेरा आयला पर झुमकी चाह-नाश्ता करौने छलन्हि। छविक ध्यान ओकर आँखिक काजरक रेघा दिस गेल। कान मे पितरिया झुमकी आ लाल अड़हुल सन लह-लह करैत केश मे लाल फीता।

– 'की बात छै? आइ फेर सिनेमा जयबाक मोन छौ, आ कि सासुर जयबाक?' ओ चील्ह करैत पूछने रहथि। झुमकीक गाल आरक्त भऽ गेल छलैक। आँचर मुँहमे दाबि भनसाघर भागि गेल रहय।

रातिमे भोजन करैत काल छवि बहुन स्नेहिल भऽ झुमकीकेँ बुझौने रहथि।

– 'देख, सुकदेव तोहर गौनाक बात करै छौ, मुदा हम मना कऽ देलिए। तौरा सिलेट आ किताब मंगा दैत छियहु, हमरासँ एक घंटा नित्तहु पढ़ल कर। कतहु कोनो काजक व्यवस्था कऽ देबो तै दिन-सुदिन भऽ जेतौ।'

झुमकी स्वीकृति मे मुड़ी डोला देने रहै।

ओहि राति ककरो फुसफुसाहटि सुनना गेलनि। पुरूषक गम्भीर स्वर...। कान ठाढ़ भऽ गेल रहन्हि पयरदाबि केबाड़ खोलने रहथि आ असोरा पर आबि अकानय लगलीह। स्वर पाछाँ दिससँ बुझना गेलनि।

ओसाराक पाँजरसँ सटैत पाछाँ दिस जा मालती फूलक झोझक ओट मे ठाढ़ि भऽ गेलीह। छविकेँ अविचक लऽ लेलकन्हि। राति इजोरिया मे गैरेजक आगाँ टू टा छाँह कैं स्पष्ट देखि रहल छलीह... एकटातँ झुमकी अछि आ दोसर... पता नहि के?

कंठ मे बालु अधियाइत अनुभव कयलन्हि। जेना बकार हरित भऽ गेल हो। ओकर दुनूक गप्प स्पष्ट सुनि रहल छलीह।

– 'झुमकी, मेमसाहेब गौना ले इनकार कऽ गेल छौ।

तो 'छुट्टी मांगि क' देख।' पुरुष-स्वर छलैक।

– हमर बात बुझै। मेमसाहेब तैयार नहि हेतै। ओ हमरा पढ़ै-लिखै के बाद कहै छै। कतहु नौकरीयो लगा देतै। कहै, जे एखनी हमरा उमिर सासुर जायवला नहि भेलैए।

– 'मेमसाहैब निसोख छै तँ की सभ निसोख भऽ जाउक। ओ पुरुषक दरेग की बुझतै। हमरा नहि चाही तोहर नौकरी। एखन दसो बेकतीके गुजर करेबाक बाहुबल है हमरा।'

– 'आब ई जाउक, मेमसाहेब उठि जयतै। मेमसाहैब कैं संदेह भऽ जायतै, हमरा डर लगैए।'

– संदेह हेतै तँ हेतै। अपन लोक-वेदसँ भैंट करब कोनो पाप छै। तोहर मेमसाहैब तँ जवानीएमे बूढ़ा गेलौ। देख, तोरा काल्हि छुट्टी मँगबाक छौ, नहि तँ घिसिया कऽ लऽ जयबौ।' झुमकीक आँचर पकड़ैत कहने छलैक आ झुमकी लजा कऽ गर्दनि झुका लेने रहैक।

आब ओतय ठाढ़ रहब हुनका लेल संभव नहि रहन्हि। ई तँ स्पष्ट छल जे ओ पुरुष झुमकीक घरवला छलैक। पुन: पयर दबैत अपन कोठरीक केबाड़ बंद कऽ लेने रहथि। बिजलीक 'स्विच' दवा 'ड्रेसिंग टेबुल' आगाँ ठाढ़ भऽ अपना कैं निहारने छलीह। केशक बीच छिट-पुट चानी सन झलकि उठल आ आँखिक नीचाँ कारी रेह.....। दुनू तरहत्थी मुँह पर फिरौलन्हि रक्ताभ कहिया पीताभमे बदलि गेल से बुझियो कहाँ सकलीह।

झुमकीक घरवाला ठीके कहि रहल छलैक ओ निसोख, लोक-वेदक हाल की जानय गलीह। तँ तँ रातिक अन्हारमे ओकरा अपन प्रियतमासँ भेंट करय पड़लैक। मुदा निसोख की ओ अपनहि बनल रहथि।

मुदा ओहि राति पिताकेँ झमारि कऽ उठेबाक मोन भेलनि। मोन भेलनि किछु प्रश्न पुछबाक।

'बाबू, जाहि पत्थरकेँ पाथर बुझि फेंकि देने रही से तँ पारसमणि बनि अहाँक तरहत्थी पर आपस चल आयल अछि। मुदा हम हमर जीवनक बीतल तीस वर्ष की अहाँ आपस कऽ सकैत छी? आइ हमरा आपस कऽ दिअ, हमर बीतल, छिड़िआयल ओ दिन सभ, जाहिमे ने तँ मायक कोर भेटल, ने बापक स्नेह छाँह आने ओ सभ किछु, जकर आकांक्षा प्रत्येक स्त्रीकेँ रहैत छैक। आपस कऽ सकब हमर सभ किछु? बाजू, बाजू हमरा जबाव चाही।'

पिताक सिरमामे मूर्ति जकाँ ठाढ़ि छलीह। आक्रोशक लावा जेना भीतरे-भीतर घमैत रहल। ओ किछु ने बाजि सकलीह। पयर दबने अपन कोठली मे चल आयल रहथि आ गेरुआमे मुँह दाबि सिसिकए लगलीह।

दोसर दिन भोरे सुकदेवकेँ सम्बाद दऽ देलन्हि। रातिए निश्चय कयने रहथि जे झुमकीक गौना हेतु अपन सहमति दऽ देतीह।

झुमकी टेबुल पर चाहक कप रखैत पुछने रहय, 'दीदी, माथ मे दर्द अछि की?'

– 'नहि, आई मोन बहुत हल्लुक अछि, झुमकी। सोचै छी, तोरा आब सासुर विदा कइये दियौ। तौँ तँ अपन मुँहे नहि कहबैँ...।' कहैत ओकर चोटीक फुदना डोला देने रहथि।

– 'जाउ दीदी, अहाँसँ नहि बाजब।' दुनू तरहत्थी बीच मुँह नुका लेने रहय झुमकी। दुदू कान पलाश सन दहकि उठलैक।

ओकर ई रूप बड़ नीक लगलनि छविकेँ। अपलक देखैत रहलीह ओकरा। आंगुरक फाट दऽ, हुनका अपना दिस तकैत देखि झुमकी आओर लजा गेल आ आँचर सम्हारैत भागि गेल रहय।

आई पहिल बेर अपन गुरू गम्भीर मौन पर कोनो वश नहि रहलन्हि। मोनक कोनो कोनमे एकटा आकांक्षा सुगबुगा उठल रहन्हि। जँ कदाचित एहि झुमकी जकाँ केओ लोक आँचर पकड़ि अपन संग चलय कहैत.... मुदा....।

(dXdhrgtgmha)

कथा

निमंत्रण

विनीत उत्पल

नीताक एकटा मेल सचिनक दिमागकें सोचैक लेल मजबूर क देलकै। आजुक बाजारवादक युगमे संबंध एहने भ गेल छैक जे काज भेलाक बाद लोक एक-दोसराकें बिसरि जाइत अछि। संबंध एहन वस्तु भ गेल अछि जेकरा प्रयोग केलाक बाद छोड़हिमे लोक नीक बुझैत अछि। दू गोटेक अंतरंगताक मूल्य किछु नहि अछि। केकरोसं अपनत्व मात्र स्वार्थ लेल बनाओल जाइत अछि। सचिनकें मोन पड़ै लागल नृत्यांगना नीताक दोस्ती आ अंतरंगता।

ओ जूनक महिना छल जहिया पहिलुक बेर ओ नीताकें देखने छल। ओहि काल सचिन दिल्लीसं ठामे दूर फरीदाबादमे काज करैत छल। ओ देशक प्रतिष्ठित एकटा अखबारमे रिपोर्टर छल। काजक संगे हुनका पढ़ै-लिखैमे बेसी मन लागैत छल। जखन ओ फरीदाबादमे छल तखन एकटा संस्था वाइस ऑफ फरीदाबाद नामक कर्याक्रम कएने रहै जइमे नीता निर्णायक बनि आएल छल। संजोग छल जे ओहि प्रोग्रामकें कवर करबाले सचिन अपन संस्थान दिससं गेल छल। प्रोग्राममे नीतासं ओकरा नीक जेकां भेंट तं नहि भेलै मुदा सचिन ओकर फोन नंबर ल क घुरि गेल। संगे कहि देलक जे काल्हि ओ फोन करत आ एकटा छोट सन इंटरव्यू लेत। दोसर दिन जखन आफिसक मीटिंग-सिंटिंगक निपटा क सचिन नीताकें फोन केलक तं नीताक खुशीक ठेकाना नहि रहलै। गपे-गपमे सचिन जानि गेल जे ओ **सेहि बिहेक** अछि। दिल्लीमे काकाक संग रहैत छलीह नीता। ओ दिल्लीक कथक केंद्रसं कथकक प्रशिक्षण लेलक अछि। संगे-संग पूरा इंटरव्यू बड नीक भेलै जे दू दिन बाद अखबारमे छपलै।

भोरे-भोर जखन सचिन सुतले छलाह तखने नीताक फोन मोबाइल पर अएलै। आंखिकें मिरने सचिन अपन मोबाइल पर नबका नंबर देखि क



अलसा गेल आ साइलेंटमे क देलक। किछु काल बाद फेरसं मोबाइल टनटनाए लागल। ताधरि हुनकर निन्न टूटि गेल छलै।

–हेलो, के...?

–हम नीता बाजैत छी।

–की, की हाल ?

–नीक अछि, आइ हमर इंटरव्यू छपल, अहांक अखबारमे।

–हं, से तं अछि।

–आंय यौ, अहां तं बड्ड नीक लिखैत छी।

–नहि, ओतेक नहि, जतेक अहां सोचैत छी।

–तखन कहियौ, दिल्ली कहिया आबि रहल छी?

नीता बाजि गेलीह।

–देखियौ, कहिया धरि आबैत छी, जहिया आएब, कहि देब। चलु हम फोन राखैत छी। एखन धरि बिछोनकें नहि छोड़ने छी।

–हं, हं, अहां जाऊ, फ्रेश भ आऊ।

–ओ.के. बाय।

–ओ.के. बाय।

ई तं मात्र आरम्भक गप छल जकरा बाद दुनू गोटेमे राति–बिराती गप हुअए लागल। एहि बीचमे नीता किछु प्रोग्राम करबाक लेल अमेरिका गेलीह। हुनका जाइसं पहिलुक सांझ सचिन फरीदाबादसं दिल्ली आएल छल आ नीतासं मंडी हाउसमे मिलल छल। मंडी हाउसमे ओहि समए वाणी प्रकाशनक एकटा किताबक दोकान छल, जाहि ठामसं कतेको किताब ओ किनने छल। नेनेसं सचिनकें पोथी किनैक शौक रहै जे एखनो धरि छलै। अमेरिका गेलापर दू दिन नीता सचिनकें फोन केलक। जखन नीता अमेरिकामे छल तखने सचिनकें अपन आफिसक नबका बॉससं सामान्य गपपर झगड़ा भ गेलै। सचिन तखन किछु बाजल तं नहि मुदा ओहि गपक पांचम दिन ओ नोकरी छोड़ि देलक। ओ आगराक एकटा अखबार ज्वाइन क लेलक। भरि ठंढी ओ सभ दिन फरीदाबादसं पांच घंटाक रस्ता ट्रेनसं क आगरा जाइत छल। बादमे एकटा डेरा फरीदाबादमे आ एकटा डेरा आगरामे राखलक। एहि बीच नीता अमेरिकासं घुरि गेल छल। दुनू मोबाइल फोनसं भोर आ सांझ एक–दोसराक हालचाल लैत छल। एक बेर तं एहन भेल जे एक महीनाक मोबाइल फोनक बिल एत्ते अएलै जतेक सचिनक दरमाह रहै। कारण फरीदाबादमे जे मोबाइल फोन हुनका संग छल ओ आगरामे रोमिंगपर छलै। ओहिपर इनकमिंग अएलापर सेहो पाइ कटैत छलै।

दुनू युवा छल आ ओहि समएमे वैलेंटाइन डे एकटा एहन डे बनि गेल छल जाहि दिन सभ प्रेमी एक–दोसराकें विश करैत छल। संजोग छल जे तेरह तारीखक रातिमे सचिन दिल्ली आबि गेल छल, कोनो काजक लेल। ई गप नीताकें बुझल भ गेल छलै। ओ सचिनकें नाकोदम क देलकै जे आइ अहां मंडी हाउसक रेस्टोरेंटमे आऊ। भोर भेलापर सचिन भेंट करबाक लेल मंडी हाउस पहुंचलाह तं नीता पहिनेसं ओत्तै बाट ताकैत रहै। दुनू गोटे नास्ता क चाह पीबि हाय–हेलो कहि क बिदा भेल। सांझ खन जखन ओ आगरामे अपन ऑफिसमे काजमे लागल छल तखने नीताक फोन अएलै आ ओ ऊकरा प्रपोज क देलकै।

ओहि दिन नीता सचिनक जिनगीमे पहिल लड़की छल जेकरा ओ प्रेमक प्रस्ताव देने छल। ओकर दिमाग कनी काल लेल सुन्न भ गेलै जे ई की सुनि रहल छी। दोसर दिन पन्द्रह तारीख छल आ नीता ओकरा दिल्ली आबैक लेल जिद करए लागल। एखन धरि सचिनकें दिल्ली काटि रहल छलै आ ओ दिल्लीक नाम पर नाक–भौंह सिकुड़ैत छल। मुदा एहि गपक बाद ओकरा ताजमहलक नगरी आगरासं विरक्ति होमए लगलै। ओ जिदिया गेल छल। दोसर दिन अपन बॉससं छुट्टी मांगलक मुदा नहि भेटलै। ओकरा एतेक तामस उठलै जे ओ नोकरी छोड़ि क' दिल्ली बिदा भ' गेल। नहि आगांक सोचलक आ नहिये पाछांक जे दिल्लीमे आगू की करब। खाली एकेटा गप मोनमे छलै जे आब ओकर जिनगीमे नीता आबि गेल छै, किछु ने किछु तं कैये लेत।

दिल्ली अएलापर ओकर शुरू भ' गेलै द्वारि–द्वारि भटकब आ घूमब आ ताकब नोकरीक नब ठिकाना। एहि बीच सचिनकें गोसांइ भ' गेलै। जहि दिन ओकर जन्म दिन छल ओही दिन ओ

गोसांइक कारण बोखाह सं जड़ि रहल छल। एहि दिन पहिलुक बेर दिल्लीक शकरपुरक डेरापर नीता ओकरा देखबा लेल आएल छलि। सचिनकें सभ किछु एकटा सपना सन लागैत छलै। ओहि दिन गपे-गप मे सचिन नीतासं पुछिये देलखिन।

''नीता, अहां हमरासं दोस्ती किऐ करैले चाहै छी?''

''अहांमे हम एकटा किछु पाबैत छी, जे हमरा नीक लगैत अछि।''

''देखियौ नीता, जिनगी बड पैघ अछि, हमन एखन छी बेरोजगार। हमरा संगे अहां खुश नहि रहि सकब।''

''ओ सभ छोड़ि दियौ। से कहब तखन तं हम तं नृत्य करैत छी। जखन कोनो कार्यक्रम भेटैत अछि तखने हम कमबैत छी। से ताहि हिसाबे हम तं अहूंसं पैघ बेरोजगार छी।''

ई कहि क' नीता ठठा क' हंसि देलक। नीताक तर्क आ गोसांइ भेलापर मना करबाक बादो देखैले आबैक गप सचिनक आत्मामे बसि गेलै। ओ सोचै लगलाह जे गोसांइक कारण दुनियामे कतेक लोक मरि गेल। हुनकर नीक दोस्तो छांह काटैए। ई छूतिक बीमारी छिऐ तखनो नीता हुनका देखबा लेल आएलि। ई कतेक सोचै बला गप अछि।

समए बीतैत गेल, दुनूक दोस्ती प्रगाढ़ भेल गेल। एहि बीच सचिनकें एक ठाम नौकरी लगलै मुदा दू मास नहि बीतल होएतैक जखन ओकरा फेर नीक अखबारमे नौकरी भ' गेलै। पी.एफ कटै लगलै, नीक दरमाहा भेटै लगलै। एहि बीच एक दिन जखन सचिन दिल्लीक पश्चिम-विहारमे नीताक घर गेलाह तं ओ नीताकें चुम्बनक प्रस्ताव रखलखिन तं ओ मानि गेलीह मुदा दुनूक मुंह लाल-लाल भ' गेलन्हि।

एहि बीच दुनू एक-दोसराक पूरक भ' गेल छल। जतए सचिन नीकसं अपन ऑफिसमे काज करैत छल ओतए नीता बाल-उत्सव, बिहू-उत्सव आ आर कतेक कार्यक्रमक नीकसं आयोजन कएलक। संगे-संग दुनू खूब घुमैत छल। कहियो सचिनक डेरापर नीता आबि जाइत छलि तं कहियो नीताक घरपर सचिन पहुंचि जाइत छल। दुनू गोटेकें नित्र एक दोसराकें शुभ-रात्रि करबाक बादे आबैत छलै। नीताक सभटा मेल सचिन आपरेट करैत छल।

अमृतसरक एकटा नामी स्कूल लेल नीताकें प्रोजेक्ट भेटलै। ओ ओतए जाए लगलीह आ बिदा करबाक लेल सचिन नई दिल्ली स्टेशन पहुंचल छल। ओ चिंतित छल जे जाहि लड़कीक लेल ओ एतेक समए बरबाद क' रहल छल से ओकर जिनगीसं जा तं नहि रहल छलै।

गपमे सचिन कहि देलखिन-

''हे नीता, एहन पागल लोककें अहां देखने छिऐ जेकरा बुझल छै जे ई ओकरा नञि भेटतै तकरा बादो ओ प्रेम करैत अछि।''

पत्रकार हेबाक कारण सचिन कोनो गप एहन आसानीसं कहि दैत छल जे ककरो मोनकें तीत क' दैत अछि। ई ओकर आदति बनि गेल रहै जेकरा ओ चाहियो क' नहि बदलि सकैत छल।

ई गप सुनि क' नीता ओकर हाथ पकड़ि लेलक आ आपन आंगुरकें ओकर आंगुरमे फंसा क' कहलक-

''सचिन, एना अहां किऐ बाजैत छी। जे भगवान चाहलक तं हम अहांक भ' जाइब।''

''तखन की हमर मरण होएत। एक दिस घरक लोक रहत, दोसर दिस हमर प्रेम।''

ई सुनि लागल जे नीताक देहमे जान नहि छैक। ओकर मुंह चुप रहि गेल आ ओ एकटक्कीसं सचिनक मुंह देखए लागल। ताधरि शताब्दी ट्रेनक सीटी बाजि गेल आ दुनू गोटे एक-दोसरक गरा मिलि बिदा लेलक। जाधरि ट्रेन नई दिल्लीक एक नंबर प्लेटफार्मसं निकलि नहि गेल ताधरि सचिन चलैत ट्रेनकें देखैत रहि गेल।

सत मानू तं दुनू गोटाक बीच प्रेम तकरा बादे बढल। अमृतसर तं नीता चलि गेलि मुदा कोनो दिन नहि बीतल होएत जाहि दिन भोर ओ रातिमे सुतएसं पहिने फोन नहि करथि। आठ दिन बीतल, एना लागैत छल जेना आठ बरख बीति गेल छल। बारह बजे राति तं छोड़ि दियौ चारि बजे भोर सेहो नीता फोन करैत छल। जेखनकि ओ जानैत छल जे तीन बजे सचिन आफिससं आबैत अछि।

अमृतसरक डी.ए.वी. कॉलेजक छात्त-छात्राकें ओ नृत्य सिखाबैत छल। ओकर कोरियोग्राफी क्षमताक आकलन एना क' सकैत छिऐ जे ओहि साल डी.ए. वी. कॉलेज ऑल इंडिया इंटर कॉलेज कंपीटिशनमे पहिल रहल। जखन ओकर सिखायल टीम एनाउंस भेल छल, नीताक आंखिमे पानि आबि गेल छल। सचिनसं फोनपर गप करबाक लेल ओ व्याकुल भ' गेल।

ठामसं बाहर निकलि ओ फोनपर कहलक,

हेलो। सचिन अहांकें बुझल अछि ?

की ?

हमर टीम देशमे फर्स्ट आएल छल। जहिना रिजल्ट एनाउंस भेल तहिना प्रिंसिपल सभ लोकक आगू मंचपर गरा लगा लेलक।

ओहो। की गप अछि, अहांकें मेहनतिक फल भेटि गेल।

हं, से तं अछि तखने सचिन हंसी-ठठ्ठा कएलक।

मुदा अहां जेकरासं प्रेम करैत छी से ई रिजल्ट नहि होइत तं की होइत ?

हं, अहांक संग नहि भेटितए तं ई नहि भ' सकैत छल- सकुचाइत नीता फोनपर बाजलि।

एहिमे हमर की योगदान अछि ? अहांक मेहनति अछि।

देर राति भ' गेल छल। नीताक प्रेमक अंकुरण ओकर मोनमे भ' रहल छलै।

अन्तमे बाजल-

आइ अहांक मोन पड़ि रहल अछि।

किए ?

किएक तं हम अहांसं प्रेम करैत छी ।

चलू अहां खेनाइ खा क' जा क' सुति जाऊ, भोरेसं कार्यक्रममे लागल छी ।

एकर बाद दूनू गोटे फोन राखि देलखिन।

दूनू गोटे कैरियरकें ल' क' सीरियस रहथि। सचिन एहि बीच नीताक वेबसाइटो बना देलखिन। सभटा फोटो खीचाबैक लेल नीता सचिनक संग दिल्लीक लोधी गार्डेन गेल छल। जेना-जेना सचिन कहलक तेहने-तेहने फोटोग्राफर फोटो खिचलक। सभटा फोटो हुनकर बेवसाइटपर ध' देलखिन्ह। एहि बीच फोर्ड फाउंडेशनक फार्म भरैक आवेदन निकलल। अहांकें बता दी जे जिनका फोर्ड फाउंडेशनक अन्तर्गत स्कॉलरशिप भेटल अछि ओ दुनियाक कोनो संस्थानसं एम.ए. क पढ़ाइ क' सकैत अछि। सभटा पाइ संस्थान दैत अछि।

सचिन अप्पन तं नहि मुदा नीताक फार्म भरि देलखिन। संजोग एहन जे पहिलुक स्टेपमे नीताक चयन भ' गेल। नीताक सफलता सचिनक सफलता छल। दुनू गोटे खुश भ' गेलाह आ घरक लोक सेहो खुश भ' गेल। भोरसं ल' क' रातिमे सुतै धरि पचासो बेर फोनसं सभटा गप दूनू एक-दोसराकें बताबथि। दुनू झगड़ो खूब करथि मुदा प्रेममे कोनो कमी नहि आएल। सचिन तं हुनका पर एकटा कवितो लिखने रहथि। दुनू दिल्लीक मंडी हाउससं ल' क' लक्ष्मीनगर, मयूर विहार फेज तीन, रमेशनगर, पश्चिम विहार आर कतेक ठाम जाइ छलाह।

एहि बीच नीताक स्तनमे दर्द रहए लागल। हुनका डर भ' गेलन्हि जे ब्रेस्ट कैंसर भ' गेल छनि। दिल्लीमे ओ अपन काकाक संग रहैत छलीह से हुनका ई गप नहि कहि सकलीह। ओ सचिनकें ई गप कहलन्हि। नीता चिंतामे रहए लागल जे कैंसर भ' गेल छन्हि। आब जिनगी तं ओंगरीपर गनैक गप अछि। ओ डॉक्टरोसं देखबैक पक्षमे

·¤çã âÁ·¤ð´ Îý È¤ôÙ ·¤æçÅ ¼ðÜ·¤Ð âç¿Ù ¹êÙ ƒæô´çÅ ·¤'Ú çã »ðÜÐ ×é¼æ ¥æð·¤ÚUæ ¥æòçȤâ Á°Õæ·¤ ÚUãñ âð

¥æð ¿çÜ »ðÜÐ ¥æòçȤâ Âãé¢ç¿ ¥æð·¤ÚUæ ×ôÙ Ùçã Üæ»ÜñÐ ·¤Ùè ¼ðÚUè×ð ÙèÌæ·¤ È¤ôÙ ¥æ°ÜÐ

¹êÕ Ì×âæ°Ü Áð È¤ôÙ ©ÆæÕñ ÕÜæâ¢ °Ùæ ç·¤°ð ÕæÁçÜ°ðÐ °çã »ÂÂÚU âç¿Ù ¥æÚU

Ì×âæ »ðÜÐ ¼éÙê »ôÅæ×ð ƒæôÚ Õãâ ÖðÜñÐ ÙèÌæ ¥ÂÙ ƒæÚU ƒæÚ· ·¤ âŒÂÌ ¹æ§Ì Úçã »ðÜ

Áð¥æð¥æð·¤ÚUð âÿæÂ ·¤ÚU¥Ì¥çÀÐ

नहि छल। मुदा सचिन अप्पन जिदपर नीताकें एस्फार्ट अस्पताल लग होली फैमिली अस्पतालमे देखाबैक लेल ल' गेल। सचिनक कहब छलनि जे होली फैमिलीमे देखा लेब। नहि किछु भेटत तं ठीक, नहि तं दोसर अस्पतालमे देखाएब।

दुनू गोटे अस्पताल गेलाह मुदा किछु नहि भेटलन्हि। डॉक्टर कहलखिन जे पीरियड क आगू-पाछू भेलासं एना भ' जाइत अछि। किछु दिन बाद ठीक भ' जाएत। नीता डॉक्टरक एहि गपसं संतुष्ट नहि भेल। ओ किछु दिन धरि परेशान रहलि मुदा एकटा पुरान दोस्तक संग सर गंगाराम अस्पताल मे जांच करौलनि। दू दिन धरि भाग-दौड़ कएलनि आ सचिनकें ओतए आबैसं मना क' देलखिन। ओतहु जांच भेल मुदा रिपोर्ट पहिलुके जना रहल।

अहां ई गप मानू वा नहि मानू मुदा अपना सभक इलाज सस्तेमे भ' जाइत अछि तं मोन संतुष्ट नहि होइत अछि। जखन कोनो डॉक्टर इलाजक खूब पाइ लैत अछि आ खूब आडंबर देखाबैत अछि तं अपना सभकें लागैत अछि जे ई नीकसं इलाज केलक। आर जखन कोनो डॉक्टर इलाज काल खूब इंतजार करबैत अछि तं हम ई बुझैत छी जे ई डॉक्टर बेसी व्यस्त अछि ताहिसं ई नीक डॉक्टर अछि। ई गप सत्तो होइत अछि मुदा देशमे 90 प्रतिशत डॉक्टर नौटंकी करैत अछि। नीता ओहि समाजसं छल जे एहि गपकें नहि बुझैत छल। सर गंगाराम अस्पतालमे जखन पाइ खर्च भेल तखन हुनका संतुष्टि भेलन्हि जे हमर इलाज भेल। एहि बीच दुनू गोटेक घरक लोग ब्याह करैक लेल गप शुरू कएने छल। सचिनक घरक लोक ब्याहक लेल कएक गोटेक संग गप चलौलक मुदा पसीन नहि पड़लैल। दोसर कात नीताक ब्याहक लेल सेहो गप चलैत छल। दूनू एक-दोसराकें सभटा गप कहैत छल, दुनू एक-दोसरासं प्रेम तं करैत छल, मुदा बियाहक लेल चुप छल।

एहि बीच भगवान जानए जे की भेल। नीताक बात-व्यवहार बदलि गेल छल। कोनो ने कोनो गपपर ओ सचिनसं झगड़ा क' लैत छल। सचिन तखन तं नहि किछु बाजैत छल। घर एलाक बाद ओकर आंखिमे नोर आबि जाइत छल जे जकरासं ओ प्रेम करैत अछि, ओ एना किए करैत अछि। नीता आब एहन भ' गेल छल जे रिक्शापर, ऑटोपर, मेट्रोपर जतए मौका भेटैत छल ओ सचिनसं झगड़ैत छल। जखन सचिनसं काज पड़ैत छलै तखन ओ नीक भ' जाइत छल मुदा काज भेलाक बाद मीन-मेख निकालैत छल। लोकक आगू सचिन लग एना ओ रहए लागल जे ओकरा नहि चिन्हैत अछि।

जूनक मास छल जखन नीताकें फेर अमेरिका जएबाक छलै। एक महीना रहैक छलै आ कतेक कार्यक्रम छलै। दू दिन पहिने ओ सचिनकें अप्पन घर बजौलखिन। हुनकर परोक्षमे जे सभटा काज होएत, सभटा कागज, एतए तक तक जे अपन साइन क' खाली चेक द' देलक। घरमे कियो नहि छल। दूनू गोटा खूब एक-दोसराक प्रेममे डूमि गेल छल। संगे खेनाइ खएलक। तकर बाद अप्पन-अप्पन काजक लेल कनॉट प्लेस पहुंचि क' बिदा भ' गेल। दुनूक बीच संबंध तहिना छल। कखैन झगड़ा भ' जाइत कियो नहि जनैत छल। हं एकटा गप जरूर छल जे बिना नागा दू सालसं रातिमे सुतैसं पहिने नीता गुड नाइट क संदेश मोबाइलसं जरूर दैत छल। कहियो आई लव यू आ आई किस यू क मैसेजो भेज दैत छल।

जाहि दिन नीताकें अमेरिका जएबाक छल ओहि भोर ओ सचिनकें अपन घरपर बजौलखिन। जखन सचिन नीताक घर पहुंचलाह तं ओ फोनसं टैक्सीबलासं गप क' रहल छल। ओ कहि रहल छल जे एयरपोर्टसं ओकरा एक गोटाकें ल' क' मुखर्जीनगर जाए पड़तै। मुदा नीता सचिनकें देखितहि तुरंत फोन राखि देलक। सचिन एहि गपकें अन्ठिया देलक। दुनू गोटे संगे चाह पीबि क' घरसं बहरेलाह। नीता कहलक जे हुनकर काका एयरपोर्ट छोड़ए लेल जएताह। ताहिसं ओ अपन काज करए। ओकरा कोनो दिक्कत नहि होएतैक।

नीताकें नाट्य वैले सेंटर जेबाक छलै आ सचिनकें ऑफिस। शिकागोक होटलक टिकट नीताक मेलसं निकालि क' द' क' ओ शकरपुरक दोस्तक कमरामे आराम करै लेल आबि गेल। दोस्त संग गप करैत सचिनकें निन्न आबि गेलै। ओ ओतए सुति गेल। निन्न खुजल तं सांझक चारि बजैत छल। ओकर ऑफिस सांझ छह बजेसं छल। फटाफट तैयार भ' क' आफिस लेल बिदा भेल तं नीताकें क' फोन लगौलखिन। आवाज कोनो पुरूखक आएल-

'हेलो -'

'हेलो के -?'

''नीतासं गप करबाक अछि...।''

''ओ तं एतए नहि अछि।''

''तं कतए अछि?''

''अहां कहू, की गप अछि आ के बाजैत छी?''

''हम सचिन बाजैत छी, अहां के?''

''हम समरेंद्र, नीता तं घरपर अछि, हम घर पहुंचि क' अहांसं गप करबा देब।''

ई सुनि क' सचिनक तामस सातम आसमान छुबै लागल। ओकरा नहि रहल गेलै-

''अहां झूठ किऐ बाजि रहल छी? हुनका हम किछु काल पहिने कनॉट प्लेसमे छोड़ि क' आएल छी। ओ घर कतएसं पहुंचि गेल?''

''हम घर पहुंचि क' अहांसं गप कराबैत छी।''

कहि समरेंद्र फोन काटि देलक। सचिन खून घोंटि क' रहि गेल। मुदा ओकरा ऑफिस जएबाक रहै से ओ चलि गेल। ऑफिस पहुंचि ओकरा मोन नहि लागलै। कनी देरीमे नीताक फोन आएल। खूब तमसाएल जे फोन उठाबै बलासं एना किऐ बाजलिऐ। एहि गपपर सचिन आर तमसा गेल। दुनू गोटामे घोर बहस भेलै। नीता

°çã Õè¿ ÙèÌæ ¥×ðçÚ·¤æâ¢ ƒæéçÚ »ðÜ ÀÜÐ ¼êÙê °·¤-¼ôâÚ·¤ âÖÅæ â×æÙ ƒæéÚæ ¼ðÜ·¤Ð

¼êÙê×ð »Â Õ¢¼ ÖÓ »ðÜñÐ âç¿Ù ¥ÂÙæ·ð¢ ¥â»Ú ¥ÙéÖß ·¤ÚU° Üæ»Ü ¥æ ·¤ãéÙæ ·¤Ó

¥ÂÙæÂÚ çÙØ¢˜æ‡æ Úæ¹Ü·¤Ð ¼ôâÚ ç·¤Øô ÚçãÌ° Ì¢ Âæ»Ü ÖÓ ÁñÌ°Ð

°çã Õè¿ °·¤ ç¼Ù âç¿Ù·¤ ×ôÕæ§ÜÂÚ ÙèÌæ·¤ È¤ôÙ ¥æ°Ü-

अपन घुंघरूक सप्पत खाइत रहि गेल जे ओ ओकरेसं प्रेम करैत अछि। दूनू गोटामे ताधरि बहस होइल रहल जाधरि नीता हवाइ जहाजपर चढ़ि गेल। सचिनकें बेसी तामस एहि गपक छल जे समरेंद्र किए नीताकें छोड़ैक लेल हवाइ अड्डा गेल छल। सचिनकें सभसं बेसी तामस एहि गपक छल जे आगू बला लोक किए झूठ बाजैत छल। नीताक एकटा झूठ ई छल जे ओकर चाचा ओकरा एयरपोर्ट छोड़ै लेल जाएत आ गेल छल समरेंद्र। आ झूठ बाजैबला लोकक संग ओ एयरपोर्ट गेल। ओकरा मोनमे ओ गप आबि गेलै जे भोरमे नीता फोनपर करैत छल। मुखर्जीनगरमे समरेंद्र रहैत छल।

आब साफ-साफ सभ किछु सचिनकें बुझबामे आबै लागल।

अमेरिका गेलाक बाद आठ दिन तक नीताक कोनो फोन नहि अएल। ओहि बीच सचिनकें हैदराबाद जाए पड़लै, बहिनकें पहुंचाबैक लेल। हैदराबादसं दिल्ली आबैक रस्तामे ओ छल जखन नीताक फोन आएल। ओ कहलक-

''सुनु सचिन, हम समरेंद्रसं ब्याह क' रहल छी, घरक लोककें ओ पसीन अछि।''

''अहां जनैत छी जे की कहि रहल छी?''

''हं, अहांक संग हमर जिनगी नहि कटि सकत, आइ हम निर्णय ल' लेलहुं।''

''आब, हम की कहू। अहां जे निर्णय लेने छी ओ नीके होएत।''

अहां नीकसं रहू, खुश रहू आर हम की कहि सकैत छी।- सचिन बजलाह।

''मुदा, अहां नीक काज नहि कएलहुं। समरेंद्र नीक आदमी नहि अछि।''

अहां हुनका ल' क' किछु नहि कहू।''

''हं, हम तं कहब किएक तं ओ झूठ बाजैत अछि। आ हम नहि चाहब जे हमरासं जे लड़की प्रेम करैत छल से कोनो झुट्ठाक संग जीवन जिऐ।''

ई सुनि नीता अपनाकें बिसरि गेल। ओ तमैस क' जतेक श्राप आबैत छलै से ओ सचिनकें देलक। सचिन सुनि क' कांपै लागल जे नीता ओकरा एतेक श्राप कोना द' रहल अछि।

सचिनक मुंहक खखार सुखा गेलै, कोनो बक बाहर नहि आबैत छलै। ओ आस्तेसं एतबे कहलक-

''गिद्धक श्रापसं गाए नहि मरैत अछि आ अहां अप्पन श्राप अपनहि लग राखू, हम नहि लेब, जखन जरूरत होएय लेने जाएब अहां।

कहिके फोन राखि देलक।

एहि बीच नीता अमेरिकासं घुरि गेल छल। दूनू एक-दोसरक सभटा समान घुरा देलक। दूनूमे गप बंद भ' गेलै। सचिन अपनाकें असगर अनुभव करए लागल आ कहुना क' अपनापर नियंत्रण राखलक। दोसर कियो रहितए तं पागल भ' जैतए।

एहि बीच एक दिन सचिनक मोबाइलपर नीताक फोन आएल-

''हेलो सचिन।''

''हं।''

''केहेन छी अहां।''

''जी, नीक छी। अहांक बात भ' गेल। समरेंद्र मरि गेलाह।''

''ओह, अहां की कहि रहल छी?''

''हं, अहां आब खुश भ' जाउ।''

''अहां झूठि बाजि रहल छी, एना नहि भ' सकैत अछि।''

''हं, ई सत अछि।''

''कोना भेल ई गप?''

''अहांक श्राप हमरा लागि गेल।''

''हम तं अहांकें कोनो श्राप नहि देलहुं, अहीं देने छलहुं।''

''हं, तं सभटा हमरा परल।''

''ई गप सुनि क' सचिन जतए ठाढ़ छल ओतहि ठाढ़ रहि गेल। ओकरा नहि फुरल जे ओ की बाजै।

''सचिन आजुक बाद अहां कहियो हमरा फोन नहि करब। हम अहांक संग कोनो संबंध नहि रखैत छी।'' ई कहि नीता फोन काटि देलखिन।

सचिन सोचए लागल जे ई की भ' गेल। हुनकासं जे प्रेम करैत छल ओ आइ एतेक दूर भ' गेल छल जे चाहियो क' ओ किछु नहि क' सकैत छल।

मुदा, समए सभकें अपना तरहे जीबाक योग्य बना दैत अछि। सभ लोक कालक मोहरा अछि आ शतरंजक प्यादासं अलग केकरो अस्तित्व नहि अछि। समय बीतैत गेल आ सचिन आइ एकटा अखबारमे नीक पोस्टपर पहुंचि गेल अछि। असगरे जखन रहैत छल तखन नीताक याद ओकरा तंग क' दैत छल। ताहि लेल ओ हरदम अपनाकें व्यस्त राखैत छल। नीतासं दूर भेलाक बाद एखन धरि ओ तीनटा किताब लिख लेने छल। एहि बीच नहि तं नीता ओकरा कहियो फोन कएलक आ नहि सचिन नीताकें केलक।

....

आइ कएक साल बाद नीताक संस्थान मेलसं नीता सचिनकें अपन कार्यक्रमक निमंत्रण पठेने छल। मंडी हाउसक एल.टी.जी. सभागारमे मंगल दिन सांझमे नृत्यक कार्यक्रम अछि। आइ सोम दिन अछि।

तखने सचिनक मोबाइल फोनक घंटी बाजल। दोसर तरफ ओकर बॉस छल।

''जी सर -''

''सचिन, अहांकें आइ सांझमे न्यूयार्कक फ्लाइट पकड़हि पड़त। एखन दू बाजि रहल अछि, सांझ छह बजैत टिकट आबि जाएत। जल्दीसं घर जा क' तैय भ' जाउ। ओतए अहांकें तीन दिन धरि संयुक्त राष्ट्रसंघक अधिवेशनकें संबोधित करए पड़त। भारत सरकार एकमात्र अहांकें अपन प्रतिनिधि बना क' पठा रहल अछि।''

फोन राखि सचिन अमेरिका जाइ लेल तैयार होमए लेल मेल बंद क' आफिससं बिदा भ' गेल।

संपर्क : *वरिष्ठ उप संपादक*
राष्ट्रीय सहारा नोएडा (उ.प्र.)



संगी

जगदीश प्रसाद मण्डल

वयस्क अवयस्कक सीमा पर पहुंचल सुशील सत्तरह बर्ख सात मास पाड़ कए चुकल। पांच मासक उपरान्त वयस्क भऽ जाएत। शुक्र दिन रहने चारि क्लासक आशासं समएपर कओलेज विदा भेल। संयोगो नीक, कओलेजक कम्पाउण्ड मे पहुंचते घंटी बजल। वर्ग मे बैसल बहुतो संगीक बीच सुशीलो। पहिल घंटी फोंक गेल। दोसरो-तेसरो-चारिमो तहिना। एक्को घंटी पढ़ाइ नहि देखि कियो खुशीसं समए बितबैत तं कियो बन्द कोठरी मे जेठक दुपहरिया बिनु पंखे बितबैत रहए।

ओहिमे सं एक सुशीलो रहए।

सुशीलक कनैत मन क्लासक कोठरीसं निकलि डेरा दिशि विदा भेल। कि हमरा सबहक जिनगी, पोखरिक पानि जेकां चारु भरसं घेराएल अछि वा पहाड़सं निकलैत नदी जेकां समुद्र दिशि बढ़ैत अछि।

डेरा ऐलाक उपरान्तो सुशीलक मनमे बेचैनी बढ़िते गेल। उन्मत् सुशील किताब-कांपी रैक पर फेकैत बिनु देहक कपड़ा आ पाएरक चप्पल खोलनहि चौकी पर ओंधरा गेल। जेना मन काबूए मे ने होइ तहिना बेसुधि। पहिल घंटीक पढ़ाइ किआए ने भेल? नजरि दौड़ौलक तं देखलक जे ओहि विषयक तं शिक्षके नहि छथि तं पढ़वितथि के? मनमे हंसी उपकल। मुदा फेरि मन घुमल। बिनु शिक्षकक शिक्षण संस्था कोना चलि सकैत अछि। कि एकरा प्राइवेट संस्थाक बाट खोलब

नहि कहबैक? कि सार्वजनिक शिक्षण संस्था बाघक खाल ओढ़ल संस्था ने तं छी। मन घुसुकि दोसर घंटीक विषयपर पहुंचल। एगारह सए विद्यार्थीक बीच एकटा प्रोफेसर छथि। तहूंमे जहियासं इन्चार्ज भेलाह तहियासं क्लासक कोन बात जे विभागक स्टाफो रुम छोड़ि प्रिंसिपलेक कुरसीपर बैइसए लगलाह। जहिना ईंटाक देवाल लेटरीन आ कीचेनक दूरी बनबैत तहिना छात्रक पढ़ाइ आ नब वेतनक हिसाव दूरी बनौने। अध खिलल फुल जेकां, जेकरा ने कोंढ़ी कहबै आ ने फूल तहिना सुशीलक मन बीचमे पड़ि गेल। मनमे उठलै मधु दइबला माछीकें विधाता ओहन डंक किऐक देलखिन। मुदा मन तेसर घंटीक विषयपर गेलइ। तीनि शिक्षक। तहन किअए ने पढ़ाइ भेल। ई तं ओहन विषय छी जे बिनु पढ़ौने विद्यार्थीकें बहुत अधिक कठिनाइ हेतइ। डेरापर नजरि पड़ितहि देखलक जे के ऐहन व्यापारी होएत जे समए पाबि अपन सौदाकें महग कऽ नहि बेचत। ऐहन काज तं वएह बेपारी कऽ सकैत अछि जेकर बेरागी मन होय। मुदा मन ठमकलै। ने आगू बढ़ै आ ने पाछू हटैले तैयार होय। जहिना जीरो डिग्री अंक्षांशसं सूर्ज मकर रेखा दिशि बढ़ैत तं कर्क रेखा दिशि विपरीत समए हुअए लगैत तहिना तं ने भऽ रहल छैक। एक दिशि घर-घर शिक्षा आ दोसर दिस सोनो-चानीसं महग। जहिना गरीबक घरसं सोनाकें दुश्मनी छैक तहिना कि शिक्षोक भेलि जा रहल छैक। मन आगू बढ़ि चारिम घंटीपर पहुंचलै। तीनि शिक्षक तं अहू विषयक छथि। तहन किऐक ने पढ़ाइ भेल? एक गोटे सीनेटक चुनावक तिकड़ममे लागल छथि मुदा तइओ तं दू गोटे छथिये। एक गोटे तेरहम दिन रिटायर करताह। मनमे खुशी उपकलै। जहिना मरै समए किछु दिन लोक दुनियांसं कारोबार समेटि घरक ओछाइन धड़ैत अछि तहिना तं हुनको धड़ैक चाहिएनि। सोगेसं रोग होइत अछि। तेरहे दिनक उत्तर दरमाहा आधा भऽ जेतनि। समए तं एहिना, जहिना बिनु पढ़ौने, कौलेज नहि अएने बीतितनि छन्हि। तें सोग होएव अनिवार्य आ काज नहि करब आवश्यक छन्हिये। मुदा तेसर तं एहि सभसं अलग छथि। ओ किअए ने ऐलाह। नजरि दौड़बितहि देखलक जे ओ तं सप्ताहमे एक दिन आवि छबो दिनक हाजरी बनबै छथि। शनि तं काल्हि छियै आइ कोना अबितथि? एते मनमे अबिते सुशीलक आंखि झलफलाए लगलै। मन खलिआएल बुझि पड़लै। उठि कऽ चप्पलो आ पेंटो-शर्ट खोललक। लूंगी बदलितहि पानि पीवैक मन भेलइ। कोठरीसं निकलि कलपर हाथ-पाएर-मुंह धोअए गेल। पानि पीवितहि मन हल्लुक बुझि पड़लै। मुदा जहिना खढ़हाएल खेतमे हरबाहकें हर जोतब भरिगर बुझि पड़ैत तहिना सुशीलक मन समस्याक बोनाइल रुप देखलक। भगवान रामे जेकां कैकेइक मन फेरि सघन जंगल देखैक भेलइ। कओलेजक बीचमे देखि सीमा दिस बढ़ौलक। एक सीमा सर्वोच्च शिक्षण दिस पड़लै तं दोसर गामक टटघर स्कूलपर। जहिना पहाड़सं निकलि अनवरत गतिसं चलि नदी समुद्रमे जाए मिलैत अछि तहिना ने टटघरेक ज्ञान उड़ि कऽ सर्वोच्च ज्ञानक समुद्रमे मिलत। एते विचार अवितहि गाछसं गाछ टकराइत आगिक लुत्तीकें छिटकैत देखलक। ई लुत्तीक आगि तं कोसक-कोस सुखल लकड़ीक संग-संग लहलहाइत फुलल-फड़ल गाछकें सेहो जरा दैत अछि। जहिना सघन बनमे रस्ताक ठेकान नहि रहैत तहिना सुशील कोनो रस्ते ने देखए। मन अपन उमेरपर गेलइ। सत्तरह बर्खसं उपर। अठारहमक बीच। अठारह बर्ख पुरलापर चेतन भऽ जाएव। मुदा हमर चेतना कहिया जागत जे बाहरी दुनियांकें अंगीकार करब। आकि देखि कऽ छोड़ि देब। स्कूल-कओलेजक पढ़ाइक तं वएह गति अछि। जहिना एक-एक ईंटा जोड़ि बिशाल अट्टालिका बनैत तहिना ने कने-कने सीखि बाल चेतनाकें पैघ बना सकै छी। ई के करत? ई तं अपनहि केने होएत। मन शान्त भेलइ। नजरि देलक गामक ओहि बच्चापर जे माएक मुंहसं लुखी सीखैत अछि मुदा स्कूलमे प्रवेश करितहि गिलहरीसं भेंट भऽ जाइ छैक। कि हमर मातृभाषा गामो धरि नहि अछि। कि हिमालय पहाड़सं गंगा कूदि-कूदि रास्ता टपि समुद्रमे पहुंचैत अछि आकि नीच-उपरक रास्ता टपैत समुद्रमे पहुंचैत अछि। ज्ञान-कर्मक बीच भक्ति होएत। कि बच्चा कर्मरुपी माएसं सीखि ज्ञान रुपी गुरुसं मिलि पवैत अछि। जं से नहि तं माए-बाप गुरु कोना? गामक स्कूलसं नजरि हटि मिड्ल स्कूल आ हाइ स्कूलपर पहुंचलै। कतौ हाइ स्कूलसं क्लास काटि मिड्ल स्कूलमे जोड़ाइत अछि तं कतौ कओलेजक क्लास हाइ स्कूलमे। जहिना क्लास तं कटि कऽ चलि अबैत तहिना शिक्षको अबैत। पढ़निहार तं विद्यालय पैदा कऽ दैत मुदा पढ़ौनिहार कोना........। आगू बढ़ैत सुशीलक मन कओलेजमे नहि अंटकि विश्वविद्यालय पहुंच गेल। मनमे उठल जिनगीक पांचम (भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्साक उपरान्त) आवश्यक शिक्षा छी। ओना शिक्षक संस्था अनन्त अछि। मुदा एक सीमाक भीतर सेहो अछि। कियो अपना डेरापर किताब उलटा प्रश्नक जबाब अपन परीक्षाक कॉपीमे लिखैत अछि तं कियो पढ़ाइक अभावमे प्रश्न पत्रो ठीकिसं नहि बुझि पबैत अछि। कि एहि दौड़मे के आगू बढ़त? कियो मार्कसीटे कीनि लैत अछि। कि शिक्षा सन समस्याकें बेदरा-बुदरीक खेतमे बनाओल गरदा-गुदरीक घर-आंगन छी? चिन्तासं मातल सुशील निराश भऽ ओछाइनपर ओंघरा गेल। चिन्ताक बनमे चिन्तनक गाछ कतौ देखवे ने करए जहिसं आशाक फल देखैत। सुतल शरीर आरो सुति रहल।

अकलबेराक समए। कओलेजसं आबि बसन्ती कोठरीमे किताव-कापी रखि सोझे माए लग पहुंचल। जलखैक छिपली बसन्तीक आगूमे बढ़बैत बाजलि- ''बुच्ची, उदास किअए छह?''

अपनाकें छिपबैत बसन्ती बाजलि- ''नहि, नहि। उदास कहां छी?''

बसन्ती अपन वसन्ती बहारकें छिपबैक कोशिश करैत मुदा जहिना शरीरक रोग तरे-तर बिसविसाइत रहैत अछि तहिना मनक रोग बसन्तीकें। मनमे नचैत कओलेजक पढ़ाइ आ अपन जिनगी। सुशील आ बसन्ती संगे पढ़ैत। पढ़ाइ नहि हेवाक सोगसं सोगाएल बसन्ती माएसं आगू गप्प नहि बढ़ा विस्कुट खा चाह पीवि चुपचाप अपन कोठरीमे आबि उतान भऽ ओंघरा गेल। सिरमापर माथ देने दुनू बांहि समेटि कऽ मोड़ि छातीपर रखि अपन जिनगी दिस ताकए लगल। आजुक शिक्षा लऽ कऽ की करब? माए-बापक संग जे अन्याय भऽ रहल अछि कि ओ एक इमानदार बेटीक दायित्व नहि बनैत जे आगूमे आबि ठाढ़ हुअए। आजुक शिक्षाक रुप ऐहन बनि गेल अछि जे सरकारी स्कूल-कओलेजमे पढ़ाइ नहि भऽ रहल अछि। तहिपर एते महग शिक्षा भऽ गेल अछि जे अपन बेटा-बेटीक शिक्षा लेल अपन जिनगी तोड़ि, खूनक घूंट पीवि कऽ जीवन-बसर करैत छथि। जेकर परिणाम कि भेटैत छन्हि तं जेहो अपन बनाओल वा पूर्वजक देल जे सम्पत्ति रहैत छन्हि बेटी विआह करबैमे देमए पड़ैत छन्हि। देख रहल छी जे बीस लाख रुपैया खर्च कए डाक्टरीक शिक्षा पबैत छथि। हुनकर विवाहक लेल सेहो बीस लाख चाही। हम ओहि डॉक्टर सभसं पूछै छिअनि जे देशक प्रथम श्रेणीक नागरिक होइतहुं अपन अन्याय नहि रोकि सकैत छी तं कि अहांसं आशा कएल जा सकैत अछि जे माघक शीतलहरीमे जाड़-भूखसं ठिठुरल बच्चाकें जीबैक उपाए कऽ सकबैक। मन आगू बढ़ि अपनापर एलै। बी.ए. पास कऽ शिक्षिका बनब। पति या तं किसान, व्यापारी वा नोकरिहरे किऐक ने होथि महिलाक संग जे असुरक्षा बढ़ि रहल

Õâ‹Ìè·¤ Õæ‹Ì âéçÙ âéàæèÜ·¤ çß¿æÚ Æ×·¤ÜÐ ×é¢ãâ¢ çÙ·¤ÜÜ- ÒÒ¥¹Ù ÏçÚ Áð ¼ð¹Ü¤ãé¢
¥æðçã×ð Ù»‡Ø ÎéÑ¹è ÖðÅÜ¤æã ¥æ ¥çÏ·¤æ¢àæ·ð¤¢ ·¤æðÙæð »× ÙçãÐÓÓ

अछि एहिमे कते गोटे अपनाकें सुरक्षित बुझि रहल छथि। कि काओलेज हाइ स्कूलक विद्यार्थी अपन गुरु अध्यापिकाक संग ओहने नजरिसं देखैत अछि जहि नजरिसं अध्यापककें। कि अदौसं अबैत हमर धरोहर (संयुक्त परिवार सामाजिक ढ़ांचा) गाछसं खसल पाकल कटहर जेकां आंठी उड़ि कतौ, कोवा उड़ि कतौ, कमड़ी खोइचा थौआ भेलि एकठाम आ नेरहा ओंघराइत कतौ, तहिना आंखिक सोझमे नष्ट भऽ जाएत। एहि दुखद घटनाक जबावदेह के? गामक बच्चाकें स्कूलसं लऽ कऽ स्कूल कओलेज धरि एते तरहक गाड़ीक अवाज सऽ लऽ कऽ लाउडस्पीकरक अवाज धरि गनगनाइत अछि जहिठाम गप-सप्प करब कठिन भऽ गेल अछि तहिठाम पढ़ाइक की दशा होएत।

एत्ते बात मनमे उठैत-उठैत परा-अपराक क्षितिजपर बसन्ती अंटकि गेल। जहिना शिशिर-ग्रिष्मक बीच बसन्तक सुआगत गाछपर बैसि कोइली अपन जुआनीसं इठलाइत राग-तानसं करैत अछि तहिना बसन्तीक सुआगतक लेल होरी खेलाइत राधा-कृष्ण सेहो वृन्दावनमे प्रतीक्षा कए रहल छन्हि। अबीर उड़बैत राधा अपन पौरुष देखबैत अखाड़ाक माटि लऽ हाथ मिलबए चाहैत छथि तं कृष्ण पाछु घुसकैत पिचकारीक निशान साधि कखनो गुलाबी रंग फैकए चाहैत तं कखनो हरियरका। आंखिपर नजरि पड़ितहि तं कारी रंग मनमे अबनि। मुदा निशाने साधै-साधैक बीच राधा सतरंगा अबीर मुंहपर फेकि देलकनि। मुंहपर अबीर पड़ितहि दुनू हाथे कृष्ण मुंह-कान पोछए लगलथि। आकि हाथसं पिचकारी खसितहि राधा आगू बढ़ि दुनू बांहि पसारि हृदयसं लगवैत विह्वल भऽ निराकार-साकारक बीच दुनू हंसए लगलथि। नमहर सांस छोड़ैत बसन्तीक मनमे उठल एहि धरतीपर किछु करैक लेल संगीक जरुरत अछि। जाधरि पुरुष-नारी मिलि अपन समस्याक लेल अपन पौरुषकें नहि जगाओत ताधरि सपना साकार कोना भऽ पवैत अछि।

ओछाइनसं उठितहि सुशील सूर्यक किरिणकें देखए लगल। देवालक एक छोट भूर देने रोशनी कोठरीमे प्रवेश करैत। सूर्यक ओ रुप नहि जहिठाम आंखि नहि टिकैत। मुदा कोठरीक रोशनी ओहन नहि। पातर-कोमल। गनलो जा सकैत। बिजलोका जेकां सुशीलक मनमे उठल पुरुष-नारीक बीच सृष्टि निर्माण करैक शक्ति अछि तहन जं ओ नान्हि-नान्हिटा समस्यामे ओझरा जाए, कतेक लजिमी छियैक। कोठरीसं निकलि सुशील बसन्ती ऐठाम विदा भेल। अपन कोठरीमे बैसल बसन्ती एक कोनपर किताबक अछि आकि पढ़निहार, पढ़ौनिहारक वा मशीन चलौनिहारक मन भङठि गेल अछि। एते बात मनमे उठिते सशीलक आंखिक आगू अन्हार पसरि गेल। मुदा इजोतसं अन्हारमे गेलापर जत्ते अन्हार बुझि पड़ैत ओहिसं कम अन्हार अन्हारमे रहनिहारकें लगैत। ततबे नहि अन्हारोमे झलफली इजोत बुझि पड़ैत अछि। सुशीलोक अन्हार मनसं छंटल अपन छात्रावाससं आगू बढ़ैक विचार उठल।

प्रात भने क्लासक संगी बसन्ती ऐठाम पहुंचल। टेबुलक एक कोणपर किताब गेटि कऽ राखल। एकटा किताब आ कापी आगूमे पसड़ल आ पेन सेहो खेलि कऽ राखल मुदा कुरसीपर ओंगठि आंखि बन्न केने बसन्ती अपन बसन्ती बहारपर नजरि अंटकौने रहए। जहिना बसन्त साले-साल अबैत आ जाएत अछि तहिना कि मनष्योक जिनगीमे बसन्त अबैत आ जाएत अछि? कथमपि नहि। मनुष्यक जिनगी तं ओहन होएत अछि जहिमे बसन्त ऐलापर पुन: जाइत नहि। दिनानुदिन बढ़ैत-बढ़ैत समुद्र जेकां महा बसन्त बनि जाइत अछि। एते बात मनमे अवितहि देह चौंकि गेलनि। हृदय सिहरए लगलनि। मुदा अपनाकें संयत करैत धियान बसन्त ॠतुपर देलनि। ॠतुपर नजरि पड़ितहि देखलनि जे एकठाम फसल लगल चौरस खेत, सुन्दर-सुन्दर गाछसं सजल बगीचा जहिपर खोंता लगा रंग-बिरंगक चिड़ै अपन मधुर स्वरसं बसन्तक सुआगत करैत अछि। तं दोसर कोसीक बाढ़िसं नष्ट भेल ओ इलाका जहिमे बालुसं भरल ढ़िमका-ढ़िमकी बनल खेत, गाछ विरीछक अभाव देखि कनैत चिड़ै रहैक ठौरक दुआरे छोड़ि पड़ा गेल कि ओहिठाम चैत-वैशाखर्कें बसन्त ॠतु नहि कहल जाइत अछि? अथाह समुद्रमे बसन्ती कखनो उगए तं कखनो डूबैत रहए। अनायास नोरसं आंखि ढबढ़बा गेलनि। नोर केहन? दुखक आकि क्रोधक। आंचरसं बसन्ती नोर पोछितहि रहति कि सुशील कोठरीक दरबज्जापर सं बाजल-''बसन्ती।''

बसन्ती कानमे पड़ितहि धड़फड़ा कऽ कुरसीसं उठि दुनू हाथ आगू बढ़बैत बसन्तीक मुंहसं निकलल- ''सुशील।''

कहि कहि अपन कुरसीपर बैसाए अपने बगलक कुरसीपर बैसि पूछलि- ''पढ़ाइ-लिखाइक की हाल-चाल?''

सुशील- ''कॉलेज छोड़ैक विचार भऽ रहल अछि।'' सुशीलक बात सुनि अकचका कऽ बसन्ती पूछलक- ''किअए?''

- ''कओलेज सहित शिक्षाक जे दुरगति देखि रहल छी ओहिसं मन दुखी भऽ रहल अछि। उपरी ढांचा किछु देखि रहल छी आ भीतरी किछु आर छैक।''

सुशीलक बात सुनि बसन्ती बाजलि-''सिर्फ अहींटा दुखि छी आकि आरो गोटे छथि।''

बसन्तीक बात सुनि सुशीलक विचार ठमकल। मुंहसं निकलल- ''अखन धरि जे देखलहुं ओहिमे नगण्य दुखी भेटलाह आ अधिकांशकें कोनो गम नहि।''

''किछु तं भेटलाह?''

''मुदा ओ कहिया तक संग रहताह ऐकर कोन ठीक। जं रस्तेसं घुरि जाथि वा हलवाइक कुकुड़ जेकां रसगुल्ला-जिलेवीक रस चाटए लगथि।''

''अहां जे कहलौं ओकरो हम नहि कटै छी मुदा एकर अतिरिक्तो किछु छैक?''

''से की?''

''जं पुरुष नारी मिलि सृष्टिक निर्माण कऽ सकैत अछि तं कि कोनो व्यवस्थाकें नहि बदलि सकैत अछि।''

''बदलि सकैत अछि मुदा ओकरा लेल.....।''

''हं। ओकरामे पौरुष चाही। पौरुष सिर्फ पुरुखेक धरोहर नहि मनुष्य मात्रक छी। गलतसं गलल आ सड़लसं सड़ल व्यवस्थाकें हमहीं-अहां ने संग मिलि बदलि सकै छी।''

वसन्तीक बात सुनि, नमहर सांस छोड़ैत सुशील बाजल- ''ओहन संगी कत्तऽ भेटत?''

''संकल्प स्थल पर।'' बसन्ती बाजलि।

''ओ स्थल कतए अछि?''

''दुनियांक एक-एक इंच जमीन पर।''

''संकल्पक विधान की?''

''आत्माक मिलन।'' कहि दुनू गोटे दहिना हाथ मिला संग-संग जीवन जीवाक बचन एक-दोसरकें देलक।

संपर्क : बेरमा, मधुबनी (बिहार)
फोन : 9931654742



हरहर - महादेव

अनमोल झा

हम खूब भोरहरे उठि नित्य-क्रिया स' निवृत्त भ' नहा-सोनाक' तैयार भ' गेल रही, बिदेसर बाबा, गौरी शंकर आ भैरव स्थान भैरव बाबाक पूजा कर' जाय लेल। साइकिल अंगना मे मुन्नु साफ-सुथरा कके सेहो तैयार क' देने छल। आब हम अपने देरी क' रह छलहुँ। जायब - कोना जायब, ओम्हर स' कत'-कत' जायब कोन-कोन काज ओहि रस्ता सभ मे पड़ैत अछि से सब केनहि आयब ओम्हर स', सैह सब सोचि रहल छलहुँ हम।

तामे केम्हरो स' माय आबि गेल छल। कथी ने कथी गप्पे किछु कहि देलक माय। हम अपने बड़ तमसाह लोक। हमहुँ ओहि गप्प क' पकाई लेलियै आ होम' लागल उकटा - पैंची। हम अपने अपन गप्प की कहब। कोनो गप्प बर्दाश्त मै होइत अछि हमरा। माय कहैत अछि - अभगदसा छउ। एखन त' तेहन भारो नै पड़लौहे, तखन ई हाल, आगा की करबै रौ फल्लम।....

âð çÕÎðâÚU ÕæÕæ ·ð¤Ó Âæ¡¿ Ì×ƒæñÜ ÁÜ ÎðÌð ÚUçãUØñÙÐ ÂçãUÜð °·¤ Ì×ƒæñÜ ÁÜ Âæð¹çÚU·¤ ÎðçÜ¥çÙ
¥æ ¿æçÚU Ì×ƒæñÜ ÁÜ ¿½ý·ê¤Â·¤ (§üÙæÚU·¤Ó) ÎðÙð ÚUçãU¥çÙÐ Õǹ U×æðÙ âÓ ÂêÁæ ·ð¤Ùð ÚUçãU¥çÙÐ
ÂêÁæ ·¤ÚUØ ¥æÕ ÕãéUÌ-ÕãéUÌ çÎÙ ÂÚU ¥æØÜ ãUæð§Ì ¥çÀU Ìñ °Ìð·¤ Ì×ƒæñÜ ÁÜ °·ð¤ ÕðÚU ÎÓ ÎñÌ çÀUØñÙÐ
Õǹ U©U»ý ×ãUæÎðß ÀUçÍÙ §ü, âÖãU·¤ ÕæÌ âéÙñ ÀUçÍÙÐ âéÙñ çÀUØñ ãU×ÚU ÕæÕæ Âæ§Ù Âǹ Uõ-Õé‹Ùè ãUæñ©U,
¥‹ãUÚU ãUõ©U-çÕãUæçÚU ãUõ©U ÕæÚUãUæð ×æâ-ÀUÌèâæð çÎÙ °Ì° °Õð ÅUæ ·¤ÚñUÌ ÀUÜçÚU¹Ù,
¥æ ÕæÕæ·¤ ÂêÁæ ·¤Ó ãéUÙ·¤æ Ü» ¿æM¤·¤æÌ °·¤ÅUæ ãUæÍ ÂðÅU ÂÚU ÚUæç¹-ÎæðâÚU ×æÍ ÂÚU ÚUæç¹ @UÂÚU
Ùè¿æ ÕÎÜñÌ·¤ ·ý¤××ð ·¤ÚñUÌ ÕÖ-×ãUæÎðß Õ×-Õ×, Õ× ×ãUæÎðß Õ× Õ× ·¤·ð¤ Ùæ¿ ·¤ÚñUÌ ÀUÜç¹ÙÐ

आदि आदि। आ सैह सब उत्तरा चौरी मे मूड अफ भ' गेल छल आ कपड़ा सब बदलि लेलहुँ हम आ नै गेलहुँ कतहुँ।

माइओ बादमे बड़ कहलक, – जो ने भ' आने। की कहलियौहे जे एना करै छए। लोक सुनतौ त' खिस्सा करतउ। कर' दही जे करतै खिस्सा हमरा डर नै अछि हम कहने रहियै आ हमर मोन आर खिन्न भ' गेल छल। भरि दिन गामे पर निर्थक समय बितेलहुँ कतउ नै गेलउ।

पहिने गाम मे प्रभुजी रहैत छलाह त' खूब गप्प – सप्प आ बात – विचार होइत छल हुनका सङ।ओ ओना इलाका मे छोट भाइ लगितथि, दोसर एक्के अंगनाक, मुदा दुनूक एक पेट एक बात छल। छलथि हमारा स' छोट थोड़े धरि दुनूमे से नै बुझाइत छल हे, ठेहुन–छाबा दूनू गोटा मे छल। हम हुनका घरक सदस्य सन आ ओ हमरा घरक लोक सन। बेसी काल पढ़ाइये – लिखाईक गप्प–सप्प होइत छल। पाछाँ हंसियो – मजाक भइये जाइत छलै। बिदेसर गौरी शंकर आ भैरब स्थान मे पूजा करय हमारा सब बेसी काल संगे जाइत छलउ। एक बेर दुनू गोटा दू टा साइकिल उठाबी आ क' आबी तीनू ठाम स' पूजा। बड़ नीक लागै रस्ता मे, कयेक तरहक गप्पो–सप्प होइत रहै। रस्ता कोना आ कखन कटि जाइ से बुझाई नै छलै किछु। ओ संस्कृतक श्लोक सभ पढ़िक बाबाक पूजा करथि। हमरा से सब ओतेक नै अबैत छल तै जे अबैत छल मनगुप्तीये कहैत छलिअनि बाबाक हम आ तैं प्राय: हमर गप्प नै सुनलखिन बाबा ओतेक।

प्रभुजीक बैंक मे नोकरी भ' गेल रहनि। आब हुनकर ओहदा हमरा स' बहुत बेसी भ' गेल छनि। पहिले नौकरी हमही पकड़ने छलउहे धरि प्राइभेट। तैं दूनूमे कोस स' उपर धरिक फर्क भ' गेल अछि। प्रभुजी आब पत्रो नै दैत छथि आने फोने करैत छथि कहियो। किएक करताह पहिलुका बात लोक के नै मोन रहैत छैक ने। आ रहतै किएक! हम त' कोनो तेहन उपकारो नै केने रहिअनि हुनकर जे मोन रहितनि हुनका। धरि संगिये वाला बात सब नै मोन पड़ैत हेतनि की? सैह गप्प–सप्प कखनोक' मोन मे होड़ मार' लगैत अछि। आइ हमरा मोन मे भेल छल जे आइ ज' ओहो गाम आयल रहितथि त' कतेक नीक लगितै– तीनू ठाम पूजा करै लेल जाय–अबै मे।

ओना आब हमरो कहाँ बेसी काल गाम आयल होइत अछि। छोट–छीन नोकरी बलाक बड़ विपत्ति। छुट्टीक दिक्कत, पाईक दिक्कत आ बेसी दिन गाम मे रहला स' नोकरी छुटि जेबाक डर। एहि बेर जे गाम एलहुँ से दू टा टिकट केंसिल भेल तखन एक हप्ताह लेल आयल भेल हे। जनवरी मे टिकट कटेने रही से अपन मोन थोड़े दब्ब भ' गेल तैं गेल। मई मे टिकट कटल छल से ऑफिसक क्लोजिंग वला काजक द्वारे छुट्टी नै देलक। तेसर बेरका टिकट कटा गाम आयल रही हम। आ दू–तीन दिनका बाद बिदा भेल रही सब ठाम पूजा करय से मायक संग बातावती लके मूड अफक कारणे नै गेलउ कतउ। मुदा तकर प्रात भेने साइकिल उठा बिदा भेल रही हम पूजा करय तीनू ठाम। मोन मे प्रभुजीक' नै अनने रही तथापि ओ मोन पड़ि गेल रहथि। एक बेर नै, एक मास नै कताक बरख हमरा दुनूक ई रूटीन छल जे तीनू ठाम पूजा कर' जाइ हम सभ। से चिट्ठियो नै दैत छथि ओ आने एकटा फोने करैत छथि। समय लोक क' सबटा बोध करा दैत छैक से अपना अनुभव भेल छल हमरा।

पहिले हम बिदेसर गेलउ। बिदेसर हमरा गाम स' सटले प्राय: डेढ़–दू किलोमीटर दक्षिण आ पक्षिमक कोन्ह मे। ओतय स' गौरी शंकरक दूरी लगभग चारि–पाँच किलोमीटर उत्तर हेतैक। आ गौरी शंकर स' भैरब बाबाक मंदिर सेहो बेसी नै तीन किलोमीटर उत्तर मे छनि। से सबो ठाम साइकिल स' पाइडिल दैत रस्ता नपैत आस–पासक खेत–पथार मे लहराइत फसील सब देखैत तीनू ठाम पूजा क' लेने रही। जहिया स' बाहर रह' लागल रही तहिया स' मोनो नै अछि जे कोन मास मे कोन फसील होइत छैक। सरिसोक पीयर कंच फुलायल फूल आ आमक कलम टुकला सभ एखनो मोन क' झमार' लगैत अछि।

से बिदेसर बाबा के' पाँच तमघैल जल देने रहियैन। पहिने एक तमघैल जल पोखरिक देलिअनि आ चारि तमघैल जल चन्द्रकूपक (ईनारक') देने रहिअनि। बड़ मोन स' पूजा केने रहिअनि। पूजा करय आब बहुत–बहुत दिन पर आयल होइत अछि तै एतेक तमघैल जल एके बेर द' दैत छियैन। बड़ उग्र महादेव छथिन ई, सभहक बात सुनै छथिन। सुनै छियै हमर बाबा पाइन पड़ौ–बुन्नी हौउ, अन्हर हौउ–बिहारि हौउ बारहो मास–छतीसो दिन एतए एबे टा करैत छलखिन, आ बाबाक पूजा क' हुनका लग चारूकात एकटा हाथ पेट पर राखि–दोसर माथ पर राखि उपर नीचा बदलैतक क्रममे करैत बभ–महादेव बम–बम, बम महादेव बम बम कके नाच करैत छलखिन। कहथिन बबा जे दुनियाँ मे सभ किछु व्यर्थ जा सकैत अछि धरि महादेवक पूजा व्यर्थ नै जा सकैत अछि। सभक बात सुनै छथिन ई, सभक मनोरथ पूरा करैत छथिन ई। आ तैं कत' कत' स' लोकक अमार लागल रहै छैक। हमहुँ बहुत बात कहैत छियैनि हिनका, बहुत बात त' बाबा तुरन्ते सुनि जाइत छथिन आ बहुत क' अन्ठा दैत छथिन। तइयो हमहु छोड़ै बला नै छिअनि, सब बेरक, ओएहे बात दोहरावैत रहैत छियैन हुनका लेखे धन्न सन। भाँग–ताँग लागल रहैत हेतैन। मोन धथूर–

आँक पर रहैत हेतनि। भीड़ो बड़ रहैत छनि। ओहो दिन बेस भीड़ छलनि। जनानी सब भोरहरवे पूजा कके चलि जाइत छैंक। एम्हर नरुआर, सर्वसीमा ओम्हर लोहना उजान (बड़का गाम), रुपौली, आर कत'-कत' क' जनानी सब भोरे चारि बजे आरतीये बेर स' पूजा कर' लगैत छनि। हम दिन देखार आ अबेर क' गेल रही तैं बेसी पुरुषेक भीड़ मंदिर मे छलनि। सब हर-हर महादेव, बम-बम महादेव करैत स्तुति गवैत। श्लोकक' शब्द आ घंटीक नाद स' अनघोल मचल मंदिर आ मंदिरक प्रांगण।

ओतुका पूजा क' दू मिनट बैसि गेलउ चबुतरा पर। कहैत छैक, पूजा कके सोझे चल नै आबी-कनियो पोन्ह रोपि ली। पता नै की होइत छैक - हाजरी लिखाइत छैक कि किछु भेटै छै। बुढ़बा सभक ई मत छैक, ओहो सब एहिना कनियो काल बैसि, चलि जाइत अछि। हमहूँ कनी बैसि साइकिल ल' चलि देलउ गौरी-शंकर लेल। रस्ता मे कइएक गोटा चिन्हारो भेटैत गेल, कुशल-समाचार होइत गेल। एक-आध ठाम साइकिल स' उत्तरियोक' गप्प कर' पड़ल। ओतए पहुँचला पर गौरी शंकरक पूजा कयल। हुनको पाँच लोटा जल माने पाँच तमघैल जल उपर मे ढारि देलउ। हिनका मोन मे दु:ख नै होइन जे बिदेसर बबाक पाँच तमघैल आ हमरा कम तै हिनको पाँचे तमघैल जल देलउ। एतय मंदिर गाम स' हटिक' बीच बाध बोन आ कलम-गाछीक बीच मे छनि, सुन्दर स्थान। लगक गाम हैठीबाली आ रुपौली सब पड़ै छैक आ आर बाध आ कलम - गाछी मात्र। एतय पूजाक समय मे ओतेक भीड़ नै छलै फाँकै सन छलैक। हम पूजा क' कनि काल बैसि, गाछ-वृक्ष, जगह-जमीन, धर्मशाला सब निंघारैत रहलउ। बच्चा रही त' नरक नेवारण चतुर्दशी सबमे भरि दिन उपास करी आ दाइ-दीदी सभक हाँजमे एतय आबि भरि-भरि दिन रहैत छलउ। सैह कत' गेलै ओ समय? कनि काल लेल हाफ-पेन्ट आ गंजी पहिरने बच्चा बला जिनगी मे आबि गेल छलउ हम। ध्यान टुटल आरो बड़-ठाम जेबाक अछि से सोचि पुन: चेतन भेलउ आ विदा भेलउ भैरव स्थान दिस।

पीच ध'के नै बाधे बाला कच्ची रस्ता धेने। कच्ची रस्ता बाधक आ ओहिमे एकपेरियाक चिक्कन लीख स' बनल रस्ता एखनो बड़ आकर्षित करैत अछि हमरा। पहिनो करैत छल आ एखनो करैत अछि आ सैह बाटे साइकिल क' अस्सीक स्पीड धरेने चल गेलउ।

दूरे स' भैरब बाबाक मंदिरके घंटीक ध्वनि आ प्रांगणक चहल-पहल मोनक' प्रसन्न क' देने छल। भैरव बाबाक मंदिर गाम सभक बीच मे छनि-जकर अगल-बगल गाम सब सठल अछि-जेना लक्ष्मीपुर, कोठिया, मेहंथ, शमीया, महिनाथपुर, एम्हर रैमा, हैठी-बाली आदि। सभक मध्य आ बीचो-बीचक कारण एतय भोर स' रातिधरि पुरुष, जनानी आ कुमारी कन्याक अवरजात खूब बेसी रहैत अछि। हाथमे फूलडाली, दीप, अगरबती-सलाइ, अक्षत-फूल, बेलपात, दुभि-तुलसी सब पूजाक उचित सामग्री लेने ओ सब खूब पूजा करै जाइत अछि। गाम-गामक छौड़ी सभमे कम्पीटीशन सन छैक। सब अगल-बगलक गाम स' ओ सभ अबैत जाइत छैक, बियाहलि, कुमारि, नव-बूढ़ि महिला लोकनि सेहो। ताहि मे हमरा जतेक तक अनुभव भेल अछि कुमारि कन्याक धरगर आँखि सभक संख्या बेसी लगैत छैक ओतय। प्राय: बाबा ओकरा सभक मनोरथ पुरबैक लिस्ट पहिने रखैत छथिन। आ जतय एहन मेला सब दिन बिना मेलेक लगैत छैक ततय छौड़ा सभक सेहे भीड़ कम नै रहैत छैक। खूब पुजबै छथि सभ स' अढ़रन ढरन।

ओना बिदेसर बाब गौरी शंकर, आ भैरब बाबा तीनुक लिंग तीन तरहक छनि। बिदेसर बाबाक लिंग बेस गोल आ बीत भरि स' उपर ठाड़-कारी लोहार पोसल छनि। गौरी शंकरक एकहि लिंग मे गौरी आ महादेव दुनू छथिन आ प्राय: दू हाथ स' उपरे ठाड़ आ गोल झक-झक कारी। गौरीक नाकमे नथिया आ माथ मे सिन्दुर सदिखन रहैत छनि। ओहीक अग्र-भागमे महादेव छथिन तिनका उपर वैह आँक धथुर, अक्षत, फूल बेलपात आदि रहैत छनि। मुदा भैरब बाबाक लिंग दुनू लिंग स' भिन्न एन-मेन बैद्यनाथ बाबा सन छथिन। ओहि मुताबिक थोड़े छोट छथिन, मुदा नीचाक पाट, ऊँच-नीच, उभर-खाभर कारी खट-खट छह-छह करैत। एक कात लागल भैरब बाबाक भरि मुट्ठीये सन लिंग बड़ सोहनगर लगैत छथिन। जे पहिले-पहिल मंदिर ढुकत तकरा निश्चित हेतै जे बाबा धाम आबि गेलक हे आ साक्षात बैद्यनाथक लिंगक पूजाक' रहल छी। खूब ऊँच क' मोरी बनायल। मोरी पर एकटा काठक कठौत मे राख राखल, जे बाबाक उपर मे लोक चुटकी स' बिबहुत चढ़वैत छनि आ कपार मे लगा लैत अछि। स्थानो तेहने पवित्र आ साफ सुथरा सेहो। श्लोक आ नचारी स' बाला लोकनि धमगीजसर मचेने रहैत छनि सदतिखन। से आइयो तेहने रमनगर लागि रहल छलैक। साइकिल कैम्पसक भीतरे कनैल गाछ लग ठाढ़ क' पेन्ट नीचा स' थोड़े मोड़ि लेलउ - पानि मे भीजै नै तैं। लोटा गाम पर स' नै ल' गेल रही। बिदेसर आ गौरी शंकर मे भीड़ कम रहलाक कारणे तमघैल सुभीता स' आ लगले भेट गेल छल। एतय बाला लोकनि ओकरा पहिने स' दफानने छलथि। तमघैल त' कएक टा छलै मुदा खाली एकोटा नै। सब पोखरि स' जल आनि-आनि नहेने चल जाइत छलनि बाबाक' आ स्तुति आ नचारी सब गेने चल जाइत। संस्कृतक स्तुति सब सुनि एक बेर फेर प्रभुजी मोन पड़ि आयल छला। ओहो एहिना एकहि सुरे स्तुति सब झहड़ा दैत छलखिन...

ध्यायेन्नित्यं महेभं रजतगिरिनिभं चारूचन्द्रावतंस रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्ग परशुमृगवराभीतिऽस्तं प्रसन्नम्।

पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैव्र्यघ्रिकृतिं वसानं विश्वद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम॥

आ

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय मम: शिवाय॥
आदि ... आदि.....

हम साइकिल छोड़ि मंदिरक मोख लग ठाढ़ रही तमघैलक प्रतीक्षामे। वाला सभक' सन्तोषे नै होनि जल चढ़ेबा स'। सधला पर फेर आनि-चढ़ा दैत छलखिन। फेर आनै छलखिन। जाइतो आ अबितो हमरा दिस देखैति। हमरो देखा जाइत छल। ब्लेड सन धरगर आँखि, बारहकेशी रानी सन ठेहुन तक लटकल केश राशि , गसल-गसल बाँहि, तिलकोरा फर सन ठोर, हँसैत काल दाँतक पतियानी मोती सन चमकैत छलनि। चुस्त सलबार आ फ्राक पर पूजाक व्यस्तताक कारणे ओढ़नी जगह छोड़ि देने रहनि से आरो चन्दाक चकोरी सन लागथि ओ।

एकटा तमघैल हुनको लगमे छलनि जाहि स' ओ बेर-बेर पोखरि स' जल भरि चढ़बै लेल मंदिर ल' जाइत छलि। आन जे तमघैल खालियो होइ से आन-आन लोक लपकि क' ल' लैत छलैक। हमर कारी पेन्ट पर उजरा बुस्ट आ नीचाँ स' पेन्ट मोड़ल आ तमघैल नै भ' रहल छल से हुनका कछमछी सन लागनि। बड़ी काल मोख लग ठाढ़ भेलउ, नै भेटल तमघैल, ओ चकोरी पूजों करथि आ घुरि-घुरि हमर विवशतो

देखथि। आब हम मंदिर चल गेल छलउ–भीतर मंदिर। जकर ककरो तमघैल खाली हेतै ल' लेब हम ओतहि। हमरा संगे आरो एक–दू गोटा ओतय आर पहिने स' ठाढ़छलै वयसगर लोको सभ। नहायल देह, गमछा क'पहीर क' एक खूंट क' नुरियाक' ढेका लेने, हमरा स' आगामे ठाढ़ मंदिर मे। ओ बाला, पता नै की नाम छलै चन्दा वा चकोरी, बाबाक' जल ढारि तमघैल आगा हमरा दिश बढ़ेलनि, आगा मे ओ गमछाक ढेका बाला लोक छल, ओ लपकि क'लेमय चाहलक, तकरा पाछाँ हम छलउ, मुदा ओ तमघैल लेने हाथ क' टेढ़ क' हमरा हाथमे धरा देने छलि। ओ ढेका बाला लोकक सङआरो जतेक लोक मंदिर मे छलैक एक बेरक' हमर मुँह ताकय एक बेर क' ओकर। हमहुँ तमघैल लैत काल तकने रहियै ओ गुलाब सन लाल – कचोर आ लजायल सन मुदा मूड़ी गोंतियोक कण्डेरि आँखिमे हमरे ताकि रहल छलि। हम बाहर जल आनै पोखरि आबि गेलउ ओ ठामहि बैसि पूजा करय लगलीह। से जाबत काल हम पोखरि स' पाँच लोटा जल आनि बाबाक चढ़ेलउ तामे तक ओ पूजा करैत रहलीह आ स्तुति, श्लोक सब गबैत रहलीह, पूजा करैक काल दुनूक हाथ बाबा पर रहलाक कारणे भिरियो जाइत छल आ अनायास देखा–देखी सहो भ' जाइत छल। हम त' मोने–मोन कहियैन जे कहबाक छल से बाबाक । जोर स' त' प्रभुजीक अबैत छलैन श्लोक तकर बात रहि–रहिक शोर मारै छल मोन मे। माने अपना उपर ग्लानिक अनुभव होइत छल हमरा जे हमरा किएक ने अबैत अछि श्लोक सब, त' आइ हमहुँ पढ़ितौ जोर–जोर स' जाहि स' हमर इम्प्रेशन बढ़िते। ओहि चन्दा, चकोरी के श्लोक सब सुनि बाबा प्रसन्न भेल हेथिन की नै से हम नै कहब धरि हम प्रसन्न जरूर भ' गेल रही तखन।

हमरा पूजा कयल भ' गेल छल। पूजा करय मे जतेक समय लागक चाही ताही स' कएक गुणा बेसी समय ओत' लगा देने रही हम। पूजा क' हम मंदिर स' उठि प्रांगण मे आबि पेन्ट जे मोड़ल छल तकरा ठीक कयल। चप्पल पहिरल साइकिल क' ताला खोलल, तामे ओहो मंदिर स' आबि गेलि छलीह बाहर। एखन ब्याकुलता पहिने स' बेसी छलनि। टकी–टकी लागि गेल छलै। हमहूँ थोड़े निगहुरी आ बैसक प्रतिक्रिया सन थोड़े टेढ़ भ' साइकिल क' पहिया घुमब' लागल रही जेना की जाँच क' रहल होइयै जे पहिया ढक वा टाल नै त' छैक। मुदा बात से सब नै छलै किछु। हम सैह करैत–करेत धर्मशालाक कछैरमै पोन रोपी साइकिल पकड़नेहे बैसि रहल रही। आ ओहो एकठाम छाहरि देखि एम्हरि घुरिक'बैसि रहलि, जेना संगी–बहिनपा सभक प्रतीक्षा क' रहल होथि ओ। मुदा कतउ नजरि अछि आ कतउ निशाना सन।

फेर बड़ी कालक बाद हुनको सहेली सब जुमि गेलीह।

कनफुसकी भेलै, देखा–देखी, ताका–ताकी, जोर–जोर स' हा–हा ही–ही आ ठहाका आ सब उमरि क' एकटक स' हमरा देख लागलि हमरा। हम साइकिल क' ठीक सन करैक मुद्रा धारण एखनो केनेहे छलहुँ। प्रायः एक घण्टाक बाद ओहो सब बिदा भेली आ थोड़े दूरी राखि हमहुँ। ओ सब कोठिया दिसक रस्ता धेने चलि जाइत छलि। हम बीच चौक पर साइकिल कात केने ठाढ़ देखैत रहलियै। ओ सब आगाँ स' बेसी पाछाँ उनहि–उनहि ताकथि। फेर आमक कलमक भीर मे देखार बन्न भ' गेलै। पता तैकत' क' हेती ओ सब–कोठिया, पट्टीटोल, लक्ष्मीपुर, मेंहथ आदि...।

हमहुँ सबटा सोचैत एकटा सिनेमा सन दृश्य लेने गाम फिरि गेल रही। आ तकरा बाद फेर नोकरी चाकरी पर कलकत्ता। आ बीत गेलै तकरो बहुत समय।

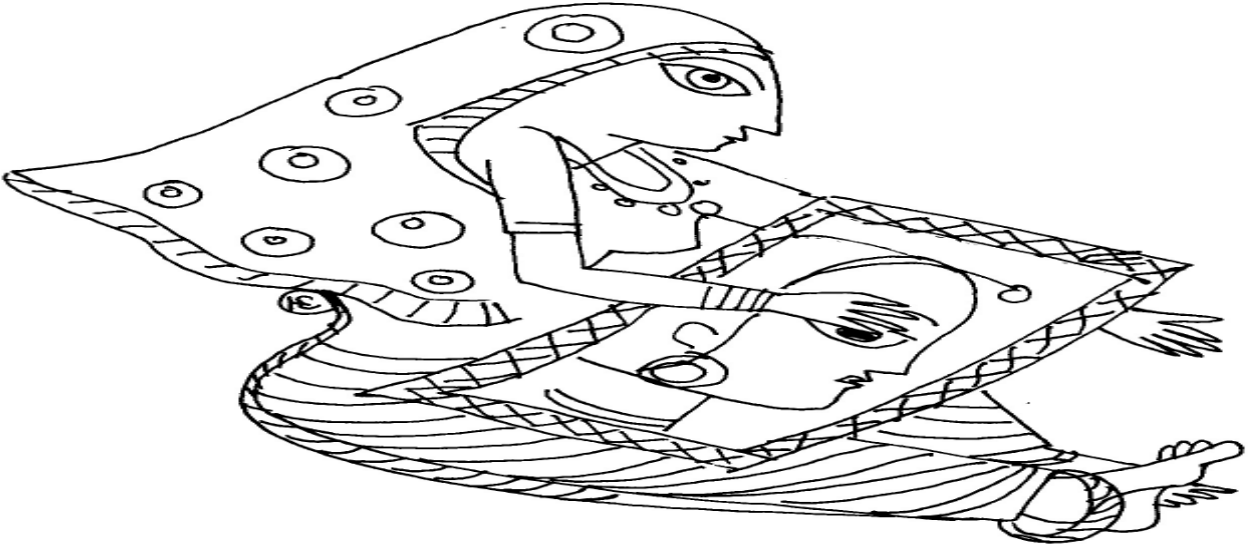
अनायास किछु दिनुका बाद एकटा पत्र आयल हमरा नामे, तामे एतेक मोबाइल आ फोनक चलती नै छलै एतेक, आ जे किछु छलैहो से लाइन भेटब मोसकिल। हम हाँइ–हाँइक' लिफाफ खोललउ। पहिने ओहि मे स' एकटा फोटो निकलल। फोटो देखि हम बिस्मित सन भ' गेलउ। फोटो क' निहारि–निहारि क' देखय लगलउ हम। उएह ब्लेड सन धरगर आँखि, तमघैल देलहा गसल–गसल बाँहि, छातीक गठन करेन्ट मारै बला, भैरब स्थानक चन्ना। चकोरी।

हम हाँइ–हाँइक' पत्र पढ़य लगलउ। पत्र प्रभुजीक छल। लिफाफक उपरमे पठेनहारक नाम–पत्ता नै छलै आ फोटोक बात देखि हमर परेशानी आर बढ़ि गेल छल। प्रभुजी बहुत राम बात आवेश आ आक्रोश मे लिखने छलथि–हमर बिबाहमे अहाँ नै एलउ तकर बहुत दुःख अछि। पत्रो पठेने रही, कोनो जवाबो नै देलउ अहाँ। आशा अछि भेटल होयत। हम गाम एलउ बहिनिक कोजागरामे। बाबूजीक' दहोदिश स' सब पकड़ि आ गछारि लेलकनि। अरफरीये मे काज समपन्न भेलै, संगी–साथीमे बाहरक कियो नै छलाह। गामे घरक सब छलाथि। ओना भावहुक फोटो पठा रहल छी। आशा अछि पसिन्न हेतीह। नाम निहारिका छियैन। फल्ला बाबूक सुपुत्री आ लक्ष्मीपुरक भैरब बाबाक खूब पूजा करैत छथि। आब जे अपने सब जायब कहियो बिदेसर गौरी–शंकर आ भैरव स्थान त' कही भेटो नै जाथि भैरबनाथ मे....।

आ हमरा लागल रहय, कियो असगरे नै दू गोटा 'स' धुरझार संस्कृतक श्लोक सब भैरव बाबा लग पढ़ने चल जाइत अछि। ओहुना हमरा श्लोक–तिश्लोक नै आबय। हम कात मे ठाढ़ छी प्रांगण मे तमघैल लेल। स्तुतिक आवाज आर तेज भ' गेल छलै–

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्म बेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाश्वासं भजेऽहं।

पताः ग्राम पोस्ट–नरुआर, भाया– लोहना रोड,
जिला–मधुबनी, पिन–847407 (मिथिला)



ईदक चान

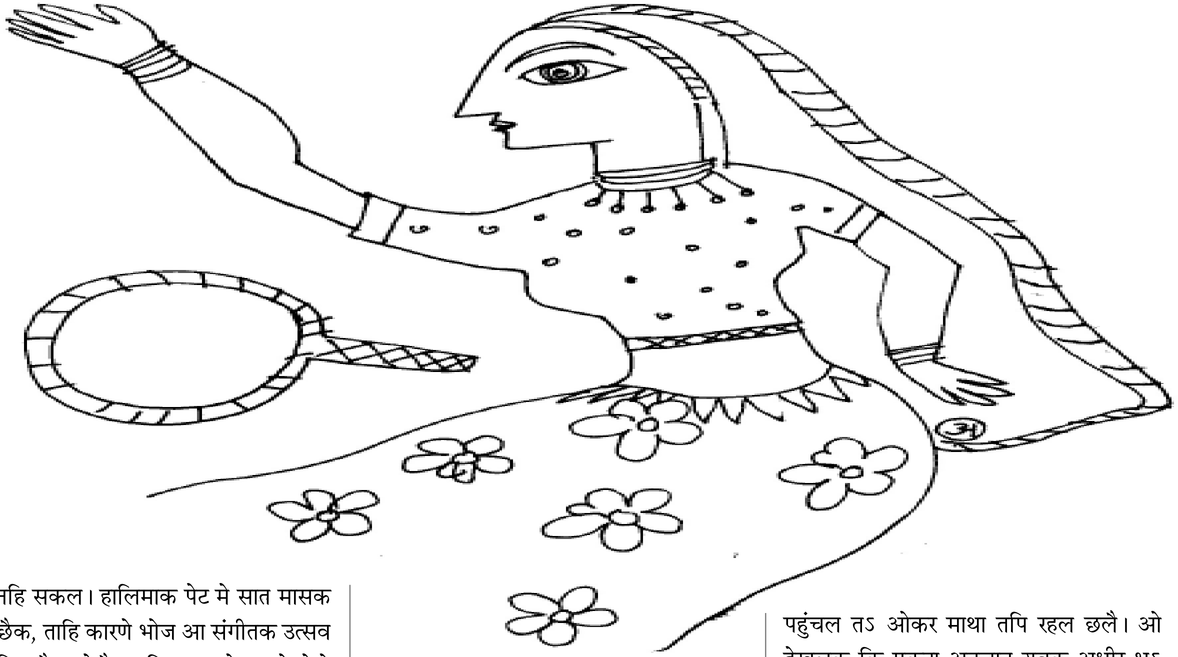
वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य
अनुवाद : अरुण कुमार झा

सूर्य माथ पर आबि गेल छथि। मुदा शमशेरक नींद नहि टूटलै। ओकर सभ संगी अहि बीच शहर मे यात्री लोकनि कें उघबाक लेल जा चुकल छैक। ओकरो बजैबाक लेल कियौ आयल छलै, तथापि ओ नहि गेलै। अखना धरि ओ उठि नहि सकल अछि। ओकर सर्वांग शरीर धधकि रहल छैक, हारक हड्डी सेहो दुखा रहल छैक। माया ज्वर सऽ पति रहल छैक। अहसाय जेकां ओ पड़ल अछि।

ओकर छोट कोठरी मे चमचमाईत सूर्यक रोशनी लकड़ीक फाट सऽ आबि रहल छैक। किछु मच्छर सेहो कोठरी में विचरण करैत अछि। अही बीच शमशेर के ईदक स्मरण भेलै। कालहि तऽ ईद छैक। माछखोवा ईदगाह मैदान मे नमाज पढ़वाक लेल जाय पड़त। लखटकिया में एकटा दर्जी के कमीज आ पायजामा सीबाक लेल दऽ आयल छी। आई ओ सी कऽ दऽ देत। आई तऽ यात्री उघबाक बिना काज नहि चलत। किछु पाई भऽ जायत आर किछु महाजन सऽ उधार लेबऽ पड़त। तखने ईद मना सकैत छी।

प्रचंड ज्वर मे सेहो शमशेरक मोन मे ईद मनेबाक उत्साह कम नहि भऽ रहल छैक। ओ उठि कऽ बैसि गेल आर आहिस्ता-आहिस्ता अपन रिक्शाक लगीच पहुंचल। ओ अपन रिक्शा हरेन दासक जमीन पर राखैत अछि। हरेन दास अपन जमीन पर मकान बनेबाक तैयारी मे छथि ताहि कारणे शमशेरक रिक्शा उपेक्षित पड़ल छैक। शमशेर ज्वरक कारणे शक्ति हीन भऽ गेल अछि मुद ईदक उत्साहक मे ओ रिक्शाक साफ-सफाई में लागि गेल। ओकर कमजोरी हाव-भाव सऽ साफ झलकि रहल छैक।

रिक्शा पोछलाक बाद ओ अपन प्यास बुझेबाक लेल सरकारी नल लग गेल मुदा ओतय पहिने सऽ नम्हर कतार लागल छलै। कियौ उच्चका नलक टोटी खोलि कऽ लऽ गेल छल ताहि कारणे पानि सड़क पर अनवरत बहि रहल छलै। शमशेर नम्हर कतार के देखि खिन्न भऽ गेल आ अपन बारीक प्रतीक्षा करै लागल। ओकर मोनक उदासी सऽ वातावरण सेहो उदास बुझाइत छलै। अहि क्रम मे ओकरा हालिमाक घर पर आयोजित दावतक वृतांत मोन पड़ैत छैक। सरकारी नलक समीप गलीक मोड़ पर हालिमाक घर में काल्हि राति दावत छलै। भरि राति कियौ



सूति नहि सकल। हालिमाक पेट मे सात मासक शिशु छैक, ताहि कारणे भोज आ संगीतक उत्सव आयोजित कैल गेलै। अहि दावत मे शमशे सेहो गेल छल। हालिमाक पति आर सब सर-संबंधी कतेक उत्साहित छलखिन। रंग-बिरग परिधान सऽ घरक शोभा आर बढ़ि गेल छलै। हालिमाक घर मे कोनो वस्तुक कमी नहि छैक। पतिदेव सरकारी हाकिम छथिन्ह। मामा मंत्री छथिन्ह। एक टा भ्राता इंजीनियर तऽ दोसर डाक्टर छथिन्ह। हालिमाक गर्भ मे पलि रहल शिशुक आगमनक लेल पूरा परिवार उत्साहित छैक। ई भोज-भात तऽ शुरुआत छैक। बच्चाक जन्म भेला पर तऽ अई सऽ पैघ भोज-भात हेतै।

उजान बजारक एकटा महिला सवारी के लऽ शमशेर काल्हि राइत हालिमाक ओहिठाक आयल छल। ओतय सऽ वापसी बेर ओकरा अपन कनिया मोन पड़ि गेलै,जो अहि ठाम सऽ सैकड़ों मील दूर रहैत छैक। ओकरो कनियाक गर्भ मे सात मासक बच्चा पलि रहल छैक। ओ उदास भऽ जाइत अछि-कारण ओकर कनिया ओकरा संगे नहि छैक। गामक लोक ओकरा शमशेरक कनिया कहि बजबैत छैक। एहन नहि की ओकर कोनो नाम नहि छैक, मुदा ओहि गामक समाजक इहै रीति छैक। ओकर नाम शमशेरे टा लऽ सकैत अछि- सेहो सबहक सामने में नहि, एकांते टा मे। ओना शमरेशक कनियाक नाम छैक अमीना। मनः स्मृति में ओ अपन कनियाक नाम गुनगुनेलक अहि स्मृति मे स्वर्गक सुख आ विछोहक पीड़ाक भाव सम्मिलित छैक। सांझ भेला पर ईदक चान ओकरो घरक ऊपर अकाश मे देखेतै। असम सऽ बेसी ओहि ठामक आकाश साफ छैक। ओ सोचैत अछि जे जखन अमीना ईदक चान देखतै तऽ हम ओकरा लग नहि रहबैक, मुदा हमर पठैल पाई ओकर हाथ मे रहै।

आजुक दुनिया इहै थीक- आदमीक बदला मे पाई। शमशेर सोचलक। ओतबा मे पानि भरवाक लेल कतार मे ओकर नंबर आबि गेलै। ओकर गांव जंकां अतय ऊंच-नीचक भेदभाव नहि छैक। हिन्दू-मुसलमान सक एके नलक पानि पिबैत अछि। कोनो छूआ-छूत नहि छैक। ई सोचि ओकरा नीक लगैत छैक। ओकर जीवन मे- ओकरे टा नहि, सबहक जीवन मे धर्मक भेदभाव कमजोर पड़ि गेलैक अछि। ओ जाहि कोठरी में रहैत अछि, ओहि में एकटा मुसलमान, दूटा हिन्दू आर एकटा सिख रहैत अछि। ओकरा सभके बेसी सुखपूर्वक समय भले नहि कटि रहल हो मुदा कोनो विशेष तकलीफो नहि छैक। मेहनत मजूरी कऽ सब राति मे अहि घोसला मे अबैत अछि आर अपन-अपन राम कहानी एक-दोसर के सुनबैत अछि। अहि राम कहानी मे के कखन नींद में डूबि जाइत अछि, पता नहि चलैत छैक। भोर मे एक-दोसरा के जगेबाक परंपरा छैक। भोर मे उठलाक बाद रिक्शा चलेबाक शुरूआत भऽ जाइत छैक। दतमनि फेंक, हाथ-मुंह धो कऽ जखन शमशेर अपन रिक्शा लग पहुंचल तऽ ओकर माथा तपि रहल छलै। ओ देखलक कि एकटा अनजान युवक अधीर भऽ ओकर रिक्शा लग ठार भऽ ओकर प्रतीक्षा कऽ रहल छैक। शमशेर ओकरा देखलक- युवक के पैर मे चट्टी आर शरीर पर फुलपैंट आर बादामी रंगक कमीज छलै। देखवा मे आकर्षक नहि-गाल धसल, आर आंखि इनार मे, ठोर रौदी के खेत जेकां दरकल छलै। रंग सेहो श्यामल। माथ पर मेहदी सऽ रंगल केस। मुदा आकर्षक रूप-रंग नहि रहितो ओ आत्म विश्वास सऽ भरल छल।

शमशेर कतेको सवारी के देख चुकल अछि। सवारी के देख ओ अनुमान लगैलक जे ई युवक शहरक कोनो धनाढ्य परिवारक निकम्मा युवक अछि। शमशेरक शरीर ज्वर सऽ तपि रहल छैक तथापि ओ अहि युवक के पूछलक- 'बाबू जेबै की!'

जेबै! भरि दिनक कतबा लेबहक- युवक कहलैक।

शमशेर अकचका गेल। भरि दिनक रिक्शा चलेबाक शक्ति ओकरा मे छैक की नहि- ओकर अनुमान नहि लगा सकल, मुदा भरि दिन नीक मजूरी भेटत ई बुझै मे देरी नहि लगलै।

रिक्शाबला के चुप देख युवक कहलकै, चल किछु ऊपरी सेहो देबो।

सवारी तऽ भऽ गेलै, भाड़ा आर ऊपरी मिलाकर नीक कमाई भऽ जाइत- शमशेर सोचलक। ईद सऽ एक दिन पहिने एहन सौदा खराब नहि अछि- शरीर ज्वर सऽ तपि रहल

अछि तऽ तपै, ज्वर तऽ होइते रहैत छैक। एहन अवसर बार-बार नहि अबैत छैक।

अहि खुशी मे शमशेर तेज गति सऽ रिक्शा चलाबय लागल। रिक्शा पर बैसल युवक एकटा सिगरेट सुलगेलक आर ओकर कश लेबै लागल। ततबा मे रिक्शा पान बाजार पहुंच गेल छल। किछु दूर आगू गेला पर युवक एकटा दू मंजिला मकानक सामने रिक्शा रोकबाक लेल कहलकै। शमशेर देखलक जे ओ हवाई जहाजक आफिस छैक। युवक रिक्शा सऽ उतरल आर ओहि आफिस मे चलि गेल। शमशेरक माथा ज्वर सऽ आर बेसी तपि रहल छलै। तैयो ओ अपन आंतरिक शक्ति सऽ ज्वरक कोनो परवाह नहि कऽ रहल छल। किछु वर्ष पूर्व एहन ज्वर होइत छलै तऽ ओ अपन परवाह नहि करैत छल मुदा आब उम्र बेसी भेला सऽ शरीर मे कमजोरी महसूस बेसी होइत छैक।

ओतबे मे ओकरा सामने मस्जिद देखाई दऽ रह छलै। शमशेर गौर सऽ देखलक तऽ मस्जिक नहि छलै। ओकरा भ्रम भऽ गेल छलै। मजिद तऽ रस्ताक दोसर कात मे छैक। मुदा तैयो ओकर आंखिक सामने मस्जिदक आकृति बार-बार आबि रहल छलै। जेना कियो नमाज पढ़ि रहल हो- खुदा हमरा पर दया करु 'हम बहुत दीन-हीन इंसान छी।'

शमशेरक दशा बहुत खराब भऽ रहल छलै। रौद सेहो तीक्ष्ण भऽ चुकल छलै। रिक्शाक सीट पर बैसल शमशेर टगै लागल।

नहि जानि कतैक देरीक बाद ओ युवक आफिस सऽ निकलि कऽ रिक्शा लग आयल। ओकरा संगे एकटा रूपवती युवती सेहो छलै। दूनू असमिया मे गप्प कऽ रहल छल। संभवत: युवती अहि शहरक नहि अछि। ओकर गालक रंग सुर्ख गुलाबी छैक, ठोर में लिपिस्टिक आर केश रेशमी छैक। चेहरा देखल लागि रहल अछि- मुदा कतै देखने छी से मोन नहि पड़ैत अछि- शमशेर सोचैत अछि। रिक्शाक सीट सऽ उतरि कऽ ओ ओहि युवतीक करीब जा पहुंचल। युवती सेहो ओकरा ध्यान सऽ देखलक। मुदा-बार-बार देखबाक कारणे ओकरा टोकलक। रिक्शा चालक बुझि गेलै जे हमर बार-बार देखनाई युवती के नीक नहि लगलै। तथापि ओ युवती ओकरा जानल-पहचानल लगि रहल छैक।

रिक्शा चालक शमशेर अपन सीट पर बैस कऽ पुछलकै- 'बाबू आब कतै जयबै?'

युवक बाजल, कने ठहरि जो! हमर समान नहि आयल अछि।

शमशेर रुकि गेल। रिक्शाक सीट पर युवती किछु बाजि रहल छल, कखनो कऽ हंसीक स्वर सेहो सुनाई पड़ैत छल, मुदा युवक काफी शांत छल। कने काल बाद एकटा कुली बेडिंग आर सूटकेस लऽ ओतय आयल। सामान रिक्शा पर लदा गेल आर रिक्शा चलि पड़ल।

गुवाहाटी-शिलांग सड़क पर रिक्शा बढ़ि रहल छल। अहि सफरक अंत नहि। युवक आर युवती दूनू शांत । शमशेरक ज्वर आब बर्दास्त सऽ बाहर भऽ रहल छलै तैयो ओ जी-जान सऽ रिक्शा चला रहल छल। सफरक अंत कखन हेतै। ओकरा पता नहि। रिक्शा आब उल्लुबारी पेट्रोल पंपक आगू निकलि गेल तथापि युवक-युवती खामोश छल।

किछु आर आगू बढ़बाक बाद युवती पूछलकै-आब आर कतेक दूर छैक?

युवक बाजाल- अखन दूर छैक। वशिष्ठ जेबाक अछि।

युवती जिज्ञासावश पुछलक- ओतय आराम करबाक लेल कोठरी छैक? भोजनक व्यवस्था छैक?

युवक बाजल- सभ व्यवस्था छैक, मुदा अहांके पसंद आयत की नहि से कहि नहि सकैत छी। बेलतला रानीक विशाल टिलाक सामने हमरा सभक रहबाक व्यवस्था अछि। कोनो परेशानी नहि। युवतीक मोन थोरे निश्चिंत भेलै।

रिक्शा चालक शमशेर युवक-युवतीक सभ बात सुनि रहल छल। ओ पूछलक- 'बाबू काल्हि हमर ईद पावनि अछि। जल्दी घर पहुंचय पड़त।'

युवक गंभीर भऽ बाजल- 'नीक बात छैक।'

अब शमशेर आर तेज गति सऽ रिक्शा चला रहल छल। कनेक काल बाद युवती बाजल, 'कतेक सुंदर दृश्य छैक।

युवक बाजल- अहि कारणे तऽ हम सभ अतय आयल छी। आई अहीं के अभिनय करै पड़त- कारण अहां तऽ आब रहब नहि। बादक बात युवक अहि तरहे बाजल जेना ओ युवती ओकरा घर मे पेट पालवाक लेल आबि रहल छैक।

- युवती बाजला से अहि देश मे भगवान स्त्रीक जन्म सिर्फ परेशानी उठेबाक लेल दैत छथिन्ह।

युवक हंसैत बाजल- फिल्म आर नाटक मे काज करैवाली युवती के समाज हीन भावना सऽ देखैत छैक।

युवती बाजल- केवल समाजे टा नहि अपन जन्मदाता सेहो ओकर नीक नहि बुझैत छैक।

युवक दृढ़ता सऽ बाजल- अहि लेल सिर्फ ओहै सभ दोखी नहि, हम फिल्म आ नाटकवला सेहो विशेष दोखी छी।

युवती मौन रहल। जेना कोनो करूण स्मृति ओकर स्वर के अवरुद्ध कऽ देने हो। युवक ओहि युवतीक चेहराक देखैत जिज्ञासावश पुछलक- 'की भेल?'

'बहुत गप अछि।' कहैत-कहैत युवती उदास भऽ गेल।

किछु क्षणक उदासी व चुप्पी रहल। अलकतराक बनल रस्ता पर शमशेरक रिक्शा चलि रहल छल। शमशेर सोचलक- युवती सभ बात खुलि कऽ कियै नहि कहलकै? ओकर कान ठार छैक, शरीरक ज्वर सेहो आव कनी-मनी कऽ कम भऽ रहल छैक, मुदा माथाक दर्द ओहिना टीस मारि रहल छैक।

किछु काल बाद युवती बाजल- बुझैत छियै दास, हमर फिल्मी जीवन आब समाप्त होईएवाला अछि।

कियै? असम मे स्टूडियो बनै वाला छैक। अहाँ सनक कलाकार नहि रहतै तऽ नीक फिल्म बनि सकतै?

युवती बुझि गेलै जे युवक के भीतर सऽ ई उद्गार निकलल छैक। अहि मे कोनो बनावटीपन नहि। चाटुकारक बीच रहैत-रहैत ओ प्रशंसाक भाव बुझब बिसरिगेल अछि। अहि कारणे जखन ओकर प्रशंसा कियौ करैत छैक तऽ ओ सतर्क भऽ जाइत अछि। किछु कालक बाद ओ युवती बाजल- दास जी जल्दीए हमर विवाह भऽ जायत।

अकचका कऽ युवक पूछलक- 'विवाह?'

हा। संभवत: हमर अंतिम फिल्म इहै होयत। निराशा भरल स्वर मे युवती बाजल। युवक मध्यम स्वर मे पुछलकै- 'विवाहक उपरांत अभिनय नहि कऽ सकैत छी?' युवती बाजल, 'नहि।'

'कियै?'

अहाँ तऽ छोट बच्चा जेकां प्रश्न पुछैत छी। अहां तऽ दुनियादारीक बारे मे किछु नहि जनैत छी। अतबे बुझि लिय जे जिनका संग हमर विवाह होयत से विवाहक उपरांत हमर अभिनय के खिलाफ छथि। युवक बुझि गेलै जे पुरुषक ईर्ष्या कतैक खतरनाक होइत छैक। विवाहक उपरांत कोनो दोसर पुरुषक संग अपन कनिया के

âéÜô¿Ìæ ¥¿æÙ·¤ ç·¤ÀéU Ùçã Õæ縠â·¤Ü- ¥æð ¼ð¹Ü·¤ Áð ° ·¤Åæ ¼ÜæÙ ÂÚ Èé¤·¤Ù çâ»ÚðÅ Âè ÚãÜ ÀÜÐ çÚ•àææ L¤ç·¤ »ðÜñÐ âéÜô¿Ùæ çÚ•àææ âù ©ÌçÚ ·¤ù Èé¤·¤Ù·¤ Ü»è¿ ¿çÜ »ðÜÐ ¥çã Õè¿ ¥L¤‡æ ¼æâ àæ×àæðÚ ·ð¤ Æè·¤ âù ¼ð¹Ü·¤ ¥æ âæ×æÙ âÕ ·¤ôÆÚè ×ð Ú¹Õæ·¤ ÜðÜ ·¤ãÜ·¤Ð â¢»çã ¿æã Âè ·¤ù ¥æðãè Æææ× âéÌÕæ·¤ çÙÎðüàæ ¼ù ·¤ãÜ·ñ¤ Á؃æ ·¤æÜ Á»æ ¼ðÕñÐ

अभिनय केनाई ओकरा बर्दाश्त नहि भऽ सकैत अछि। व्यंग्यात्मक हंसी संग युवक युवती के देखलक। युवतीक मुख मंडल लाल भऽ चुकल छलै। अपन भविष्य कोनो पुरुषक हाथ मे सोइप देवै– ई सोचि ओ युवती शर्मशार भऽ गेल। मुदा कोनो उपाय नहि अछि। हृदय फुकन के संग ओ नीक जेकां बातचीत केने अछि। बहुत बेसी उदारवादी विचारक व्यक्ति छथि फुकन। एक दिन ओ अहि युवती के जोरहाट थिएटर हाल अनने छलाह 'चित्रलेखाक' अभिनय के लेल। ओहि समय मे ओ थिएटरक अभिनय सऽ डेराइत छल। मुदा फूकन ओकर उत्साह के बढ़ेने छलखिन, अभिनय सीखेने छलखिन। फुकनक उत्साह सऽ जखन ओ मंच पर चित्रलेखाक भूमिका मे उतरल तऽ दर्शक वाह–वाह करैत रहि गेल। तखने सऽ ओ सुलोचना नाम सऽ विख्यात अभिनेत्री बनि गेल। ई घटना आठ साल पुरान अछि।

फुकनक मार्गदर्शन मे ओ युवती अपन पहचाने नहि बनौलक बल्कि पुरुषक अत्याचार सऽ बचवाक तरीका सेहो सीखलक। शहर मे फुकनक नाम जोड़ि कऽ उक्त युवती के बदनाम सेहो कैल गेलै। मुदा आब ओकर मोन सऽ बदनामीक भय सेहो समाप्त भऽ चुकल छैक। अहि बेर फुकनक फिल्म में ओ अंतिम बेर अभिनय करत। वशिष्ठ मे होईवला आऊटडोर शूटिंग संभवतः ओकर जिंदगीक आखिरी शूटिंग हेतै। ई सब सोचि सुलोचनाक हृदय विषाद सऽ भरि गेलै। आखिरी शूटिंगक संग–संग फुकनक संग जुड़ल रिश्ता सेहो समाप्त भऽ जायत। ई सब सोचि कऽ ओ भीतर सऽ कांपि गेल। अहि दरम्यान ओ अचानक युवक सऽ टकरा गेल। युवक चौंकल– 'की भेल?'

सुलोचनाक आंखि डबडबा गेलै आर मुंख सऽ सिर्फ अतवे बाजल जे– नहि किछु नहि भेल। युवक के सुलोचनाक भीतर उठल तूफानक एहसास भऽ जाइत छैक।

आजुक शूटिंग के लऽ कऽ अरुण दास के फुकनक मोन मे सेहो कोनो विशेष उत्साह नहि देखबा मे अयलन्हि। गुवाहाटी मे सात दिन बीत चुकल अछि अहि दौरान 'चित्रलेखा'क तैयारी चल रहल अछि। फुकनक स्वभाविक मुस्की अहि सात दिन मे नहि देखैल अछि।

आब रिक्शा कच्ची सड़क पर आबि गेल अछि। शमशेर के रिक्शा चलेवा मे आब आर बेसी दिक्कत भऽ रहल छैक। रिक्शा चलबैत–चलबैत ओकरा एकटा सिनेमा सेहो मोन पड़ि गेलै। अहि सिनेमा मे जीवन रूपी गाड़ी के चलबैत सिराज परेशान छल। ओकर संघर्ष रूपी जीवनक एकेटा उद्देश्य छल– मफीदाक गर्भ मे पलि रहल शिशु। सिराजक सपना छलै एकटा पुत्रक। ओकर बाद रिक्शा चालक शमशेर किछु सोचि नहि सकल। शरीर घाम सऽ नहा गेलै। माथा सेहो दर्द सऽ फाटि रहल छलै। तैयो ओ रिक्शा चलेनाई बंद नहि कैलक।

कनै दूर गेला पर शमशेर के मफीदा मोन पड़ि गेलै। इहै युवती तऽ मफीदा बनल छल, जे हमर रिक्शा पर बैसल अछि। सुलोचना देवी।

शमशेर अपन रिक्शा रोकलक।

सुलोचना पुछलकै– 'रिक्शा कियै रोकलें?'

'मैडम– अहीं ओ मफीदा छियै ने?' शमशेर पुछलक।

'हां'।

शमशेरक धड़कन बढ़ि गेलै, मुदा अरुण दास सेहो तामसा गेलै।

चलै। जल्दी चलै। रौद नहि रहतै तऽ किछु काज नहि हेतै।

चलै छी बाबू। मुदा हमरा बेसी भय लागि रहल अछि मैडम जी, हमर कनिया के सेहो सातम माह छैक मैडम जी– मोन डरायल अछि– शमशेर पाथर भऽ गेल। ईद के लगीच मफीदा के मोन खराब भेल छलै।

सुलोचनाक हृदय अपनत्व सऽ भरि गेलै। ओ बाजल– तूं मूर्ख छैं। सिनेमाक संग अहि घटनाक कोन संबंध छैक? किछु नहिं हेतै तोहर कनिया के। जल्दी सऽ चल।

शमशेर गमछा सऽ अपन घाम पोछलक आर मैडम के सलाम कऽ रिक्शा तेज गति सऽ–हांकैय लागल।

सुलोचना जखन ध्यान पूर्वक शमशेर के देखलक तऽ ओकर आँखि कनेरक फूल जेकां लाल छलै। शक भेला पर सुलोचना पुछलैक– 'तोरा ज्वर छौ की?'

हां, मैडमजी ज्वर अछि। ओ जोर–जोर सऽ स्वांस लऽ रहल छल।

सुलोचना अचानक किछु नहि बाजि सकल– ओ देखलक जे एकटा दलान पर फुकन सिगरेट पी रहल छल। रिक्शा रुकि गेलै। सुलोचना रिक्शा सऽ उतरि कऽ फुकनक लगीच चलि गेल।

अहि बीच अरुण दास शमशेर के ठीक सऽ देखलक आ सामान सब कोठरी मे रखबाक लेल कहलक। संगहि चाह पी कऽ ओही ठाम सुतबाक निर्देश दऽ कहलकै जयबा काल जगा देबै।

शमशेर के जान मे जान आयलै। मुदा ओ सुति नहि सकल। खेनाई खेलाक बाद ओ एक किनार पर बैस रहल– सुलोचनाक आखिरी शूटिंग देखबाक लेल।

एकटा मचिया पर बैसल अरुण दास सुलोचनाक नव वेशभूषाक संग ओकर अभिनय देख रहल छल। एहन लागि रहल छलै जे 'चित्रलेखा' जीवंत भऽ चुकल अछि। सुलोचना आकर्षक जूड़ा बनौने अढ़ि। मेखला मे सजल ओकर रूप आर निखार उठल अछि। यौवन सऽ भरपूर ओकर पैर नृत्यक मुद्रा मे उठै बला छैक।

सुंदर–सुंदर अति सुंदर! अरुणक मुंह सऽ अनायास इह शब्द निकलि गेल।

शमशेर सेहो सुलोचना के एक टक देखैत रहि गेल।

एकटा निर्देश दऽ कैमरामैन के कैमरा चालू करबाक कहि एकटा कुर्सी पर फुकन मौन भऽ बैस गेला।

अरुण के अनुसार पूरा वातावरण गमगीन लागि रहल छलै।

दुपहरिया मे जखन शूटिंग किछु कालक लेल रुकल छलै तखनो फुकन सुलोचनाक करीब नहि आयल छलाह। भोजनक समय सेहो

ककरो चेहरा पर हंसी नहि छलै। अरुण हंसेबाक कोशिश करैत बाजल जे फुकन दा– 'उषाक विवाहक समय सेहो चित्रलेखा उदासे कियै छली?' फुकन कमे जोर सऽ बजलाह, जुदाई के गम सोचि चित्रलेखा उदास भऽ गेल छथि।' गप तऽ ठीके छैक।

रौद कमै तक किछु आर शूटिंग भेलै। 'पैकअप' के घोषणा कैल गेल। फुकन अपन संगी–साथीक संग टहलै लै निकलि पड़लाह। अहि बीच शमशेर सेहो थाकि कऽ झाड़ि मे पड़ि रहल आर दूरे सऽ सुलोचना के देखै लागल।

सब सऽ आगू छल सुलोचना आर ओकर पाछू फुकन। कैमरामैन पाठक आर अरुण दास ओकर पाछू। आहिस्ता– आहिस्ता फुकन सुलोचनाक लगीच आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेला। सुलोचना एकटा टिला पर बैसल फुकनक बाट ताकैत छली।

'फुकन दा– अहां जीवन मे बहुत किछु देलौ, आब अहूँ के किछु देबै चाहैत छी। अतबा कहि सुलोचना फुकन दूनू पैर छू कऽ प्रणाम कैलक। अहि दृश्य के देखि शमशेरक आंखि पीड़ा सऽ भरि आयल। फुकनक सेहो आंखि भरि गेलन्हि। हुनका ओ क्षण मोन पड़ि गेलन्हि जखन एकटा गरीबक घर सऽ सुलोचना के सिनेमा मे काज करबाक लेल आनने छलाह। ओहि समय मे संभ्रांत घरक युवती सिनेमा सऽ काते रहैत छल।

एक युग बीत गेल। फुकन सोचने छलाह आजादी के बाद देश मे प्रोफेशनल थिएटरक विकास हेतै आर असम मे सिनेमा उद्योग आर विकसित होयत। मुदा ओ सब नहि भऽ सकलै। आई धरि एकरा नीक स्टूडियो नहि छैक, पाई के लेल फिल्म निर्देशक भटकैत रहैत छथि। सुलोचना सेहो घर मे डांट–फटकार सुनैत अछि। ओकरो घर मे अनेक समस्या छैक। एकटा धनी मित्र सुलोचना सऽ विवाह करै चाहैत छैथ। ओ सुलोचनाक सब समस्याक समाधान कऽ देथिन्ह। घर बनबा देथीन्ह, संगहि सुलोचनाक पिता के मासिक खर्चा देथीन्ह आर भाई के चाकरी सेहो। अहि विवाहक लेल सुलोचनाक माता–पिता रजामंद छथीन्ह। सुलोचना सेहो विवाहक लेल तैयार छैक। अहि बात सऽ फुकन सेहो अवगत छैथ।

फुकनक सब स्वप्न आर अरमान आई बिखरि गेलन्हि। आब ओ आर फिल्म नहि बना सकता। जाहि अभिनेत्री मे सब सऽ बेसी प्रतिभा आ संभावना छलै, जखन ओकर ई दशा तऽ आब आर के अहि सर्वनाशी अभिनय जगत मे आयत?

फुकनक आँखि डबडबा गेलन्हि। चरण स्पर्श करै काल सुलोचना जूड़ा सऽ खसल गुलाबक फूल के उठा कऽ सुलोचनाक जूड़ा मे खोंसैत फुकन बजलाह –

सुलोचना दुखी नहि हो। सोचने छलहूँ जे सरकार आर जनता हमर मदद करत, हम अभिनय के माध्यम सऽ समाजक उपकार करब। मुदा किछु नहि भेल। हमरा मे आब शक्ति नहि रहि गेल अछि। हमरा लागि तोरा काफी तकलीफ भेलौ। आब जो। जतय मोन मानौ। कखनो स्मरण कऽ लिहै। आर लोक पूछौ तऽ कहिहैन्ह– अहि असम मे स्वर्णिम दीप बेसी काल धरि नहि जड़ैत छैक, बुझि जाइत छैक। कियै? ई पूछि लिहन्हि।

सुलोचना कानै लागल। ओकरा लागलै जे ओ मरि चुकल अछि, आई ओकर सब किछु लुटि चुकल छैक। कियौ ओकर कननाई रोकि नहि सकल।

फुकन सेहो माथ पर हाथ राखि बैसल छलाह।

अतबै मे पश्चिमी आकाश मे जेना कियौ गुलाब बिखेर देलकै। तामस सऽ फुकन बेचैन भऽ गेला। लाल आकाश के देखि ओ सब सामान समेटबाक आदेश दऽ अपन स्थान पर आबि बैसि गेला। व्याकुल सुलोचना सेहो हुनका लग आबि गेलन्हि। शमशेर सब किछु एकटक देखैत रहल। एहन असली सिनेमा ओ अपन जीवन मे नहि देखने छल। सुलोचनाक विदाई आब निकट आबि गेल छलै। सुलोचना आर फुकन के सामान समेटैत देखि शमशेर सेहो अपन रिक्शा लगा आबि गेल।

कैमरामैन पाठक बजलाह– बहुत दर्दनाक सिनेमा कैमरा मे कैद केने छी– मुदा आई आँखिक सामने जे सिनेमा देखलौ ओकर कोनो मुकाबला नहि छैक। अहि मे की छैक– बुझैत छी?

अरुण दास पुछलक– 'की?'

एक जातिक संस्कृति साधनाक दर्दनाक कहानी।

अरुण किछु नहि बाजल। ओ शमशेर के समीप आयल। पाठक कैमरा समेटै मे लागि गेल। किछु कालक बाद मोटर मे सभ सामान लदा गेलै। सुलोचना आर फुकन सेहो गाड़ी मे बैसबाक लेल तत्पर भेला। पाठक सेहो तैयार भऽ कैमरा गाड़ीक पिछला सीट पर राखि अरुणक संग रिक्शा पर बैसि गेला।

शमशेरक ज्वर अब किछु कम छलै। अरुण के देखितो ओ चारू कात ताकि– बाजल– सुलोचना मैडम चलि गेली की? अतबा मे सुलोचना मोटर मे बैसि गेल छली आर मोटर चलि चुकल छल। शमशेर अहि घटनाक्रम सऽ काफी उदास भऽ गेल।

सब बात बुझितो ओ बाजल– मैडम जी रिक्शा पर नहि जेथीन्ह?

नहि– मैडम मोटर मे चलि गेली– अरुण शमशेर के कहलखिन्ह।

मोटर तेजी सऽ बढ़ि चुकल छल। शमशेर आब बेसी उदास भऽ गेल, तथापि ओ रिक्शा चलेनाई शुरू कैलक। आब ओकर मन पड़लै जे ईदक कमीज दर्जी सऽ लेनाई छैक। सांझ होई मे सेहो बेसी देरी नहि छैक। सुलोचनाक बिछोह आर ईदक उत्साहक ओकरा बेचैन कैने छैक। ओ काफी गति सऽ रिक्शा चला रहल अछि।

रिक्शा तेज चलेबाक बारे मे जखन अरुण पुछलकै तऽ ओ पहिने कहलकै जे ओहिना, मुदा बाद मे सोचि कऽ बाजल जे आई ईद छैक आर घर जल्दी पहुंचबाक अछि। किछु काल खामोशीक बाद अरुण फेर पुछलकै जे मैडम जी के सिनेमा तोरा केहन लगैत छौ।

शमशेरक उत्तर छल– 'बहुत नीक' ओ तऽ हमर अमीना जेकां लागै छैथ।

अरुण सेहो सोचत छैथ जे एक आम मुस्लिम गृहिणीक भूमिका निभेने छली सुलोचना। ईदक दिन पुलाब बनल छलै। उत्साह मे सब मिलकऽ ईदक चांद देखने छल। गरीब मे नेकी बांटल गेल। तखने खबरि भेटल जे सिराज के कैंसर छैक। पुलाब बनने रहि गेलै।

शमशेर पुछलक– आई मैडम चलि जयथीन्ह।

हा। जयथीन्ह।

तेज गति सऽ रिक्शा चलेबाक कारणे शमशेर हांफि रहल छल। पेट्रोल पंप लग आबि शमशेर फेर बाजल– मैडम के आई देखलियन्हि।'शायद फेर नहि देखबन्हि।'

अहि बात पर पाठक भभाकऽ हंसला। अरुण पुछलखिन – 'की भेल?'

एकटा आर दर्दनाक खिस्सा मोन पड़ि गेल। फिल्म मे हमहू आबैत छी– अहूँ आबैत छी– फुकन सेहो आबैत छथि मुदा दर्शक सुलोचना टा के मोन राखैत अछि।

नारी हेबाक फायदा अकरे कहैत छैक।– सहज भाव सऽ अरुण दास बजला।

ÕÇÜ¸ è ·¤æÜ ÏÇÚ ¥æð ×ôÅÚ ·ð¤ ÁæS§Ì ¼ð¹ñÌ ÚãÜÐ Òç·¤Øñ ¿çÜ »ðÜè?Ó ¥æð S߸Ø¢ âù ÂéÀÜÜ·¤Ð ·¤Ùè
·¤æÜ Õæ¼ ¹ñÙè ¹æS§Ì ¥L¤‡æ Îæâ ¥ØÜæãÐ ¥æð çÚ•àææ ÂÚ Õñçâ ÕÁÜæã- Ò¥æÕ ƒæÚ ¿ÜÐÓ

अरुणक बात सुनि शमशेर के मुस्की छुटलै। सही गप छैक।

अकरे संग ओ अपन रिक्शाक रफ्तार सेहो धीमा कऽ देलक। रिक्शा उलुबाड़ी चौराहा धरि अबि चुकल छल। जगमगाईत गुवाहाटी के अरुण देखलन्हि। हुनक मोनक भावना बदलि रहल छलन्हि। ओ अपन सिगरेटक पैकेट सऽ दू टा सिगरेट निकालललन्हि आर एकटा अपने व दोसर पाठक के देलखिन। पाठक अपना कैमरा के देखि सोच रहल छलाह जे ओकर बिना कोना रहता। ओ सिगरेट अरुण के वापस कै देलखिन।

तखने शमशेर जोर-जोर सऽ चिकड़ल- मैडम! मैडम!

रिक्शा रुकि गेलै।

अरुण आर पाठक सेहो देखलन्हि जे सड़कक ओहि कात सुलोचना हाथ हिलाकर हुनका भजा रहल छथीन्ह। उत्साहक संग जखन पाठक आ अरुण सुलोचना लग पहुंचला तऽ हुनका ज्ञात भेलन्हि जे सुलोचना ककरो और बजा रहल छथीन्ह। ओ शमशेर के बजा रहल छलखिन। ठाढ़ छथिन्ह। नाटकक अंतिम दृश्य जेना अब प्रस्तुत होई बला अछि।

शमशेरक धड़कन बढ़ि गेल छैक। मैडम ओकरा बजा रहल छथीन्ह। ओकरा लेल सड़क पर रुकल छथीन्ह। अजीब खुशीक अनुभव ओकरा भऽ रहल छैक। ओ साहस कऽ मैडम लग पहुंल। मैडम ओकरा अपन कीमती पोशाक देलखिन। पोशाक लैत शमशेरक हाथ कांपि रहल छलै। ओ बाजल हम ई पोशाक सऽ की करब, मैडम कहलखिन- हम ई पोशाक तोहर अमीना के लेल दैत छियौ। ईदक तोहफा।

पोशाक देलाक बाद सुलोचना नहि रुकली। सीधे मोटर मे जा बैसि गली। पाछू-पाछू फुकन सेहो गेलाह। ओ उदास छलाह। शमशेर सबटा एक टक देखैत रहि गेल। ई सुलोचनाक अंतिम अभिनय छलै आर ओकर नायक शमशेर छल।

सड़क पर ता धरि भीड़ लागि गेलै। सब सुलोचनाक एक झलक के लेल उत्सुक छल। मुदा सुलोचना ककरो अपन लगीच पहुंचवाक अवसर नहि देलखीन। फुकन ता धरि मोटर आगू बढ़ा देलखिन। मोटर मे कैमरा जतय छलै ततहि पाठक सेहो बैसि गेला। हुनको लेल ई सफर यादगार छैन्ह- कारण एक तऽ कैमरा लग बैसल छथि जाहि मे चित्रलेखाक अंतिम दृश्य कैद छैक संगहि कैमराक लेंस मे सुलोचनाक अंतिम स्पर्श सेहो।

बिछोहक पीड़ा सऽ भरल दृश्य हृदय के हिला दैत छैक। इंद्रधनुषक भांति क्षण भरि मे अलोपित भऽ जाइत अछि एकटा स्वप्न। ओकरा बाद किछु नहि- केवल खालीपन।

बड़ी काल धरि ओ मोटर के जाइत देखैत रहल। 'कियै चलि गेली?' ओ स्वयं सऽ पुछलक। कनी काल बाद खैनी खाइत अरुण दास अयलाह। ओ रिक्शा पर बैसि बजलाह- 'आब घर चल।'

ता धरि शमशेर एक टक पोशाक के देखि रहल छल। ओ सोचलक केहन अदभुत मैडम छली। ओ सिनेमा टा मे अभिनय नहि केलन्हि- सड़क पर सेहो अभिनय कऽ चलि गेली। अभिनेत्री होइते एहन छथि। पोशाक देखि अरुण दास सेहो गमगीन भऽ गेला। पोशाक दानक माध्यम सऽ एक विशिष्ट अभिनेत्रिक आत्मविसर्जनक कथा दृष्टिगोचर होइत अछि। जे बड़ दुखद अछि। शमशेर पोशाक के बड़ यत्न सऽ राखि रिक्शा चलेनाई शुरू कयलक।

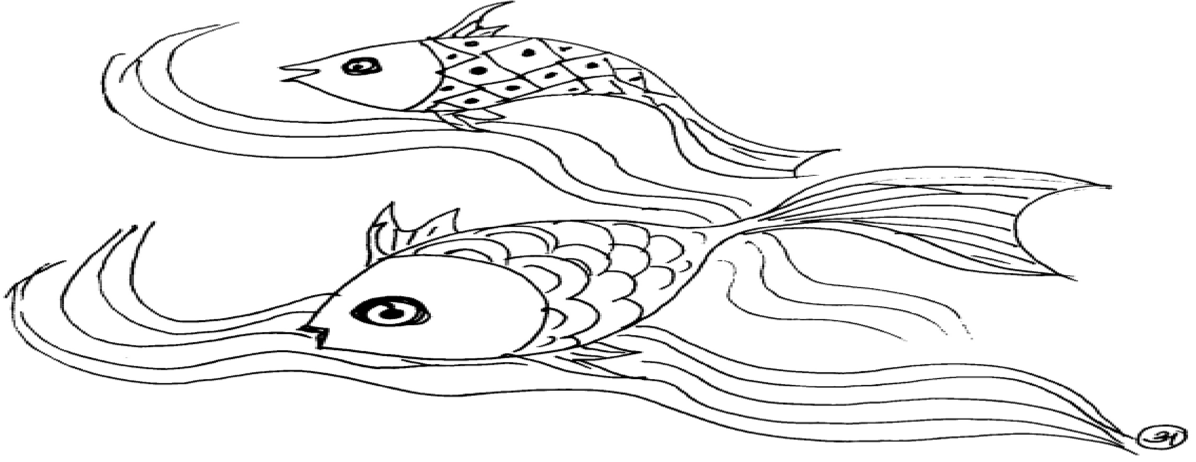
ओ अपना घोंसला दिस जा रहल छल। मोन मे फेर ईदक चान आबि रहल छलै। दस मिनट बाद रिक्शा हालिमाक घरक लगीच पहुंच गेलै। ओ देखलक जे दूमहला पर सब जमा भऽ ईदक चान देखबाक प्रयास कऽ रहल अछि। शमशेरक उत्साह सेहो बढ़ि गेलै, ओना ओकर ज्वर अखने उतरल नहि छलै। शरीरक अंग-अंग मे दर्द छलै- तथापि ईदक चान देखबाक लेल व्याकुल छल। ओ अरुण दासक हाथ सऽ कखन रुपया लेलक सेहो याद नहि, अरुण कखन रिक्शा सऽ उतरि गेला सेहो मोन नहि। शांत भाव सऽ ओ आकाश में ईदक चान के देखैत रहि गेल। चान के लगीच ओकरा सुलोचना देखाई दऽ रहल छैक। ओ अपना के भ्रम सऽ ऊबारैत अछि- नहि- ई तऽ ईदक चान छैक। कने काल बाद ओकर मुट्ठी में कागज फरफरा उठल। ओ देखलक तऽ तीन टा पांच के नोट छलै। ओही काल मे कतहू सऽ गोली चलबाक आवाज सुनाई देलकै। ओ सोचलक काल्हिक लेल दर्जी सऽ कपड़ा लेनाई ठीक रहत। ईदक उत्साह मे ओ फेर रिक्शा हांकय लागल। ओकर पैर-हाथ काज नहि करैत छलै तथापि ओ बलजोरी रिक्शा चला रहल छल। एक बेर ओवरब्रिज लग एकटा गाड़ी सऽ ओकर रिक्शा टकराई सऽ बचल रहै तथापि ओ रिक्शा के बढ़ा रहल छल। ता धरि मे मुसलहउद्दीन दुकान नजरि पड़लै, मुदा ओतय कियौ नहि छल।

बंद भऽ गेलै- बंद भऽ गेलै- बंद भऽ गेलै।

अकर मतलब ईदक लेल सियाल कपड़ा आब नहि भेटत। काल्हि सेहो दुकान बंद रहतै। माथा फेर ज्वर सऽ तपि गेलै। शरीर में कोनो प्रकारक शक्ति नहि बचलै- मोन पड़लै फेर सुलोचना। आँखिक सामने अबि गेलै ईदक चान। ओहि दरम्यान ककरो दर्द भरल आवाज सुनाई देलकै- आऊ-आऊ-आऊ। ओ के छी? अमीना? संपूर्ण अस्तित्व बेजान भऽ गेल। शरीर तपि रहल छल। शरीर के स्पर्श कैला पर महसूस भेलै- अंग-अंग तपि रहल छैक, तथापि जाड़ लागि रहल छैक। अमीनाक हाथक पुलाब खैयबाक लेल हृदय कानि उठल। सुलोचनाक देल रेशमी पोशाक ओ अपन शरीर पर लपेट लेलक। शरीर कांपि रहल छलै।

ओ महसूस कैलक जे अब ओकरा मे उठबाक शक्ति सेहो नहि बाचल छैक। जतय अछि ओहि ठाम सूतऽ पड़तै। हाथ-पैर सुन्न भऽ रहल छैक। होटल तक जयबाक शक्ति सेहो नहि छैक। कोनो तरहे ओ अपन रिक्शा के सड़कक कात मे ठाढ़ कैलक आर पिछला सीट पर कोनो तरहे सुति रहल। आब ओकरा लग कियौ नहि, रंगीन दुनिया समाप्त भए गेलै। अनायास ओकर मुँह सऽ आह निकलि रहल छलै। आकाश मे चान चमकि रहल छलै। ओकरा देखैत अपन सूखल कंठ के तर करबाक प्रयास मे बाजल- 'आई राति तोरा देखबौ ईदक चान। तूँ सेहो हमरा देखि हैं। भोर हेबाक आवश्यकता नहि छैक। कारण भोरक लेल हमरा लग नव वस्त्र नहि। ओकर गप केवल चान बुझैत छैक, सुलोचना सेहो नहि- कारण ओ तऽ चान यऽ सेहो दूर रहैत छैथ।

अनुवादक पता : सहायक समाचार संपादक,
सेंटिनल (हिन्दी दैनिक) जी एस रोड,
गुवाहाटी (असम)
फोन : 9864133770



बाल-किशोरक प्रेरक कथा

जगदीश प्रसाद मण्डल

1. प्रेम

जखन परिवारमे पति-पत्नी आ बच्चा सभक बीच स्नेह रहैत छैक तखन परिवार स्वर्गोसं सुन्दर बुझि पड़ैत छैक। नमहरसं नमहर विपत्ति परिवारमे किऐक ने आबे मुदा ढंगसं चललापर ओहो आसानीसं निपटि जाइत छैक। एकटा छोट-छीन गरीब परिवार छल। दुइये परानी घरमे। सभ साल दुनू परानी -सुनिता आ सुशील- अपन विवाहोत्सब मनबैत। गरीब रहने तं बहुत ताम-झामसं उत्सव नहि मनबैत मुदा मनबैत सभ साल छल। छोट-मोट उपहार एक-दोसरकें याद स्वरुप दैत छल। साले-साल एहि परम्पराकें निमाहैत।

अहू बर्ख ओ दिन एलै। उत्सवक दिनसं किछु पहिनहिसं उपहारक योजना दुनू मने-मन बनबए लगल। मुदा दुनूक हाथ खाली। भरि पेट खेनाइयो ने पूरै तखन जमा कए कऽ की राखैत। मने-मन सुशील योजना बनौने जे पत्नीक केशमे लगबै लऽ क्लीप नहि छैक तें एहि बेरि ओइह (क्लीप) उपहार देबैक। तहिना सुनितो सोचैत जे पति घड़ीक चेन पुरान भऽ गेल छनि तें एहि बेरि चेन कीनि कऽ देबनि। दुनू अपन अपन जोगारमे। मुदा नाजायज कमाइ नहि रहने जोगारे ने बैइसै। उत्सवक दिन अबैमे एक दिन बाकी रहलै। अंतिम समएमे सुशील सोचलक जे आइ सांझमे घड़ी बेचि क्लीप कीनि लेब। सुनीतो सोचलक जे अपन केश कटा कऽ बेचि लेब तहिसं घड़ीक चेन भऽ जाएत। सांझू पहर दुनू गोटे- फुट-फुट बाजार गेल। सुशील घड़ी बेचि क्लीप कीनि लेलक आ सुनिता केश बेचि चेन कीनि लेलक। खुशीसं दुनू गोटे घर आबि अपन-अपन वस्तु-चेन आ क्लीप- ओरिया कऽ रखि लेलक।

सबेरे सुति उठि कऽ दुनू परानी हंसैत एक-दोसरकें उपहार दइले आगू बढ़ल। सुनिता टोपी पहिरने छलि। क्लीप निकालि सुशील सुनिताक टोपी हटा क्लीप लगबए चाहलक, मुदा केशे नहि। तहिना चेन निकालि सुनिता घड़ीमे लगबए चाहलनि तं हाथमे घड़िये नहि।

आमने-सामने दुनू ठाढ़। दुनूक मुंहसं तं किछु नहि निकलैत मुदा, दुनूक हृदयमे हर्ष-विस्मयक बीच घमासान लड़ाइ छिड़ गेल। अंतमे हृदय बाजल- 'जे सिनेह दूधक समुद्रमे झिलहोरि खेलैत अछि ओकर लेल क्लीप आ चेनक कोन महत्व छैक।

2. समरपन

समुद्रसं मिलैक लेल धार (नदी) विदा भेलि। रास्तामे बलुआही इलाका पड़ैत छल। जुआनीक जोशमे धार विदा तं भेलि मुदा रास्ताक बालू आगू बढ़ै ने दैत। सभ पानि सोखि लैत। धारक सपना टूटए लगलैक। मुदा तइयो साहस कए कऽ धार अपन उद्गम स्रोतसं जल लऽ लऽ दौड़ि कऽ आगू बढ़ए चाहैत मुदा धारक सभ पानि बालू सोखि लैत। जहिसं धार आगू बढ़ैमे असफल भऽ जाइत। झुंझला कऽ निराश भऽ धार बालूकें पूछलकै- 'समुद्रमे मिलैक हमर सपना अहां नहि पूर हुअए देब?'

बालू उत्तर देलकै- 'बलुआही इलाका होइत जाएब संभव नहि अछि। अगर अहां अपना प्रियतमसं मिलए चाहैत छी तं अपन सम्पत्ति बादलकें सौंपि दिऔक, तखने पहुंच पाएब।'

अपन अस्तित्वकें समाप्त करैक अद्‌भुत समरपनक साहस हेबे ने करै। मुदा बालूक विचारमे गंभीरता छलैक। किछु काल विचारि धार समरपनक लेल तैयार भऽ गेलि। तखन ओ पानिक बुन्नक रुपमे अपनाकें बदलि बादलक सबारीपर चढ़ि समुद्रमे जा मिलल।

निवेदन

- जनगणना मे सभ मैथिलजन अपन मातृभाषा मैथिली लिखाबी।
- गैर-मैथिल मित्र सभ के उपहार मे मधुबनी पेंटिंग देबाक अभ्यास करी।
- अपन गाम मे कोनो रचनात्मक कार्य सं जुड़ल रही।
- वर्ष मे एक बेर अपन गाम अवश्य आबी।

पूर्वोत्तर मैथिलक अगिला अंक
नारी पर केन्द्रित रचना आमंत्रित अछि।

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ऋ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ

ड ढ ड़ ढ़ ण त थ द ध न प फ ब

भ म य र ल व श ष स ह

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं कः

मिथिलाक भोजन सामग्री

शीला देवी झा



ओना तऽ मिथिलाक भोजन सामग्री मे बहुतो रास एहन वस्तु अछि जे पांच सितारा होटलो मे आसानी सं उपलब्ध नहि होइछ पर ओ एखनो मिथिला मे अपन स्थान यथावत रखने अछि। जेना किछु वस्तुक नाम के उजागर करैत हम मैथिल लोकनि के ध्यान आकर्षित करए चाहब जेकरा सुनितहि मैथिल लोकनि केऽ मूंह सँ लार टपकि परतनी। जे एहि प्रकार अछि : रेहु मछलीक अचार, कटहरक बर, अरिकंचन, आओर बथुआ सागक बीड़िया। विभिन्न तरहक बेसन सं बनाओल बड़ी जे रसगुल्ला जकां फुलल रहैछ।

बड़ी तऽ मिथिलाक भोजन सामग्री मे अपन प्रमुख स्थान रखने अछि। कोनो शुभ कार्य या भोज-भात मे एकर उपस्थितिक अनिवार्यता मानल जाइछ।

बड़ी बनाबक विधि ओना सहज या सुगम तऽ नहिं परञ्च मैथिलानिक लेल इऽबनेनाई बामा-दाहिना हाथक खेल बुझल जाईछ।

बड़ी बनावए के सामग्री :

1. घाटि (बेसन), 2. गोटा जीरा, 3. तेजपात, 4.नमक, 5. सरसों तेल, 6. लाल मिरचाई, 7. धनिक गुड़ा, 8. जीरक गुड़ा, 9. आमिल अमचुर,

आधा किलो बड़ीक घाटि मे तकरीबन 2 चम्मक नून, 2 चम्मच गोटा जीरा दए ओकरा एक बर्तन में राखि ओहि मे 2 गीलास पानिक संग थोरेक काल तक मथू तकरा बाद ओहि मे सं एक टा छोट गोली काटि पानि में दए देखू यदि ओ गोली उपलाय लागत तऽ बुझू घाटि तैयार भऽ गेल। ओकर उपरांतएक कराही मे तकरीबन 250 ग्राम करू तेल लए ओकरा गैस पर राखि गरम करू।

जखन तेल खौलए लागए तऽ ओहि मे छोट-छोटे गोली काटि-काटि कऽ देनाई शुरू करू। किछु देर के बाद ओकरा झांझ सं उलहि दियो। जखन ओकर रंग बिल्कुल लाल भए जाए तऽ फेर ओकरा झांझ द्वारा काछि एक दोसर बर्तन मे राखू। एहि प्रकारे पूरा घाटि के बड़ी छानि फेर ओहि कड़ाही मे दू चम्मच गोटा जीर तथा तेजपात आओर चारि टा लाल मिरचाई के फोरन दऽ ओकर गरम करू, फेर ओहि मे चारि चम्मच धानियां गुड़ा, 2 चम्मच जीरा गुड़ा और मिरचाई के गुड़ा अपना स्वाद अनुकूल कराही मे दए ओकरा सब के थोरेक काल तक भुजू। जखन मसालाक रंग लाल भऽ जाए तऽ ओहि मे तकरीबन एक लीटर पानि दए ओकरा मिला दियो। फेर ओकरा गरम होमए दियो। जखन पानि सं बुलबुला निकलए लागए तऽ ओहि मे पूरा बड़ी के दए दियो। किछु देरक बाद ओ सबटा बड़ी रसगुल्ला जकां फुलि-फुलि फऽ नमहर भए जाए आओर सबटा उपर मे उपलाए लागत। ओकर बाद चारि चम्मच (बेसन) धारि आओर 2 चम्मच अमचूर या दही के घोल बना कए कराही मे दए दियो, दू चम्मच नून किछु देर तक सेहो दए दिया। अकरा आर गरम होमए दियो जाहि सं ओ पूरा झोड़ मे मिलि जाए। बस अब अहांक बड़ी तैयार भऽ गेल। ओकरा चुल्हा सं उतारि किछु देर ठंडा होमए दियो फिर स्वाद लए लए खाइत रहूं।

E{hASHH${MIH$ra



A{X{VMH$dVu

1977 मे गुवाहाटी मे अदिति चक्रवतीक जन्म भेलीन्ह। गवर्नमेंट कालेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट, गुवाहाटी विश्व विद्यालय से प्रथम श्रेणी मे बीएफए क डिग्री। वर्तमान असमक प्रसिद्ध कलाकार मानल जाइत छथि। हुनकर फोन नंबर अछि : 9864021252

E-mail : addi77@yahoo.com

मिस लुईत बनलीह गुवाहाटीक **पूजा झा**



एहि बेर सिम लुईत सौन्दर्य प्रतियोगिता मे गुवाहाटीक पूजा झा विजयी रहलीह। आब वो मिस फेमिना प्रतियोगिता मे भाग लेतीह। पूजाक पिताक नाम नवीन चन्द झा आ माताक नाम कल्पना दास छियैन्ह। गुवाहाटीक सेंट मेरी स्कूल मे मैट्रिक उत्तीर्ण भेलाक बाद दिल्लीक हिन्दू कालेज से स्नातक डिग्री लेलीह। फेर पीजी (मानवाधिकार) आई आई एस आर, दिल्ली मे उत्तीर्ण केलीह। पूजा प्रशासनिक सेवाक लेल तैयारी क रहल छैथ।

ि

हार्दिक शुभकामनाक संग -

ज्योति कुरियर सार्विस

Âêß§Õü¨æÜ ·ð¤â¢»â¢»

â•Âê¢Šæü¤ÜæÜ Ìßü×ð´

çßàßÜèØ âð߷¤ ßæSÌð

सम्पर्क -

रामलाल झा

ज्योति कुरियर सर्विस

66 मीर मार्केट, कमारपट्टी

फैंसीबाजार, गुवाहाटी –781001

फोन : 9864026156 (M)